दृष्टि The Vision

CTET

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र



- बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र संबंधित पाठ्यक्रम का संपूर्ण कवरेज
- बाल विकास के विविध पक्षों व शिक्षाशास्त्र की अवधारणा का विश्लेषणात्मक विस्तृत विवरण
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एवं समावेशी शिक्षा की अवधारणा का संपूर्ण समावेश
- स्वमूल्यांकन के लिये विगत वर्षों में पूछे गए 1600+ वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का अध्यायवार संकलन

केंद्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा (CTET), B.Ed., DSSSB, REET, KVS, UPTET सहित अन्य समस्त राज्य शिक्षक अर्हता परीक्षाओं के लिये उपयोगी

एडमिशन प्रारंभ

दृष्टि The Vision

NTA/UGC-NET/JRF

हिंदी साहित्य

डॉ. विकास दिव्यकीर्ति के मार्गदर्शन में तैयार कोर्स

(लाइव ऑनलाइन)

फीस : ~~₹25,000/-~~ ₹20,000/-

इतिहास

मोड : ऑनलाइन

फीस : ~~₹15,000/-~~ ₹10,000/-

भूगोल

मोड : ऑनलाइन

फीस : ~~₹15,000/-~~ ₹10,000/-

डाउनलोड करें दृष्टि लर्निंग ऐप | © 9311406441

NCERT कोर्स

माध्यम : हिंदी / अंग्रेज़ी

मोड : लाइव ऑनलाइन (दृष्टि लर्निंग ऐप द्वारा)

इस कोर्स में शामिल विद्यार्थियों को जीएस फाउंडेशन कोर्स (ऑफलाइन/ऑनलाइन/पेनड्राइव) लेने पर NCERT कोर्स की फीस की संपूर्ण राशि की छूट

फीस : ₹12,500/-

प्रमुख विशेषताएँ

- लगभग 450+ घंटों की कक्षाएँ
- 8 महीने में संपूर्ण कोर्स संपन्न
- कोर्स की वैधता 2 वर्षों तक, असीमित व्यूटाइम
- दृष्टि पब्लिकेशन्स की 'NCERT सीरीज़' की 4 पुस्तकें
- दृष्टि पब्लिकेशन्स की सामान्य ज्ञान (G.K.) की एक पुस्तक
- दृष्टि लर्निंग ऐप पर संपूर्ण पाठ्यक्रम (विषयवार) पर आधारित नियमित अभ्यास टेस्ट
- ज़ूम ऐप के माध्यम से नियमित रूप से अध्यापक से प्रत्यक्ष संवाद व संशय निवारण की सुविधा
- एंड्रॉइड 7 या उच्च के साथ अब iOS 13 या उच्च पर भी उपलब्ध

दृष्टि आई.ए.एस. (दिल्ली शाखा) का पता
641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
8448485519, 87501 87501, 011-47532596

दृष्टि आई.ए.एस. (प्रयागराज शाखा) का पता
ताशकंद मार्ग, निकट-पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज
8448485518, 8750187501, 8929439702

दृष्टि आई.ए.एस. (जयपुर शाखा) का पता
प्लॉट नंबर-45 व 45-A, हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड़
वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर (राजस्थान)-302018
9024790143, 9929224312, 9829908709

दृष्टि
The Vision

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र

पूर्णतः CTET के पाठ्यक्रम पर आधारित

Drishti Publications
dlp

दृष्टि पब्लिकेशन्स

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
Contact Nos. : 011-47532596, 87501 87501
E-mail : help@groupdrishti.in
Website : www.drishtiias.com

शीर्षक : बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र

लेखक : टीम दृष्टि

प्रथम संस्करण : नवंबर 2022

पुनर्मुद्रण : फरवरी 2023

मूल्य : ₹390

ISBN : 978-93-94987-65-4

प्रकाशक

VDK Publications Pvt. Ltd.

(दृष्टि पब्लिकेशन्स)

641, प्रथम तल,

डॉ. मुखर्जी नगर,

दिल्ली-110009

विधिक घोषणाएँ

✸ इस पुस्तक में प्रकाशित सूचनाएँ, समाचार, ज्ञान एवं तथ्य पूरी तरह से सत्यापित किये गए हैं। फिर भी, यदि कोई जानकारी या तथ्य गलत प्रकाशित हो गया हो तो प्रकाशक, संपादक या मुद्रक उससे किसी व्यक्ति-विशेष या संस्था को पहुँची क्षति के लिये ज़िम्मेदार नहीं है।

✸ हम विश्वास करते हैं कि इस पुस्तक में छपी सामग्री लेखकों द्वारा मौलिक रूप से लिखी गई है। अगर कॉपीराइट उल्लंघन का कोई मामला सामने आता है तो प्रकाशक को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा।

✸ सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायिक क्षेत्र में होगा।

✸ **© कॉपीराइट :** दृष्टि पब्लिकेशन्स (A Unit of VDK Publications Pvt. Ltd.), सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रकाशन अथवा उपयोग, प्रतिलिपीकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानान्तरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार से) प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

✸ एम.पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेज़-2, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित।

दो शब्द

प्रिय पाठको,

आप एलेक्जेंडर के इस कथन से सुपरिचित होंगे, "मैं जीने के लिये अपने पिता का शुक्रगुज़ार हूँ, पर अच्छे से जीवन जीने के लिये अपने शिक्षक का।" भविष्य निर्माणकर्त्ता के रूप में शिक्षक के महत्त्व को इस कथन के माध्यम से स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। एक अच्छे शिक्षक की महान कला अपने विद्यार्थियों में ज्ञान और रचनात्मक अभिव्यक्ति को जगाना है। शिक्षक विद्यार्थियों के सपनों तक उनकी पहुँच को आसान बनाता है। शिक्षण एक सम्मानित एवं आदर्श कार्य माना जाता है। एक अच्छा शिक्षक विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अब प्रश्न उठता है कि एक अच्छे शिक्षक का चयन कैसे किया जाना चाहिये?

आधुनिक समय में इसके लिये केंद्र और राज्य स्तर पर विभिन्न शिक्षक पात्रता परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है। नि:शुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के प्रावधानों के अनुसार राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) ने आठवीं कक्षा तक अध्यापकों की नियुक्ति के लिये न्यूनतम योग्यताओं को अधिसूचित किया है। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) को यह ज़िम्मेदारी दी गई है कि वह इन न्यूनतम योग्यताएँ रखने वाले व्यक्तियों के लिये केंद्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा (CTET) का आयोजन करे।

दृष्टि पब्लिकेशन्स द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक केंद्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा के पेपर-1 (कक्षा I से V तक के लिये) तथा पेपर-2 (कक्षा VI से VIII के लिये) के पाठ्यक्रम में उल्लिखित खंड 'बाल विकास और शिक्षाशास्त्र' के लिये बेहद उपयोगी है। इस खंड से प्रत्येक पेपर में 30 प्रश्न (30 अंक) पूछे जाते हैं। CTET के साथ ही यह B.Ed., DSSSB, REET, KVS, UPTET सहित अन्य समस्त राज्य शिक्षक अर्हता परीक्षाओं के लिये भी उपयोगी है।

विषय की विविधता, जटिलता एवं क्रमबद्धता को समझते हुए पुस्तक को पाठ्यक्रमानुसार कुल 26 अध्यायों में विभाजित किया गया है। साथ ही, प्रत्येक अध्याय के अंत में अतिमहत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी तथ्यों को अध्याय के रिवीज़न की दृष्टि से जोड़ा गया है। इसके अतिरिक्त आप संपूर्ण पाठ्यक्रम का अभ्यास कर सकें, इस उद्देश्य से हमने अध्यायवार विगत वर्षों में पूछे गए 1600+ प्रश्नों को सटीक उत्तर सहित शामिल किया है। अध्याय संख्या 26 को हमने बेहद ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि बाज़ार में उपलब्ध 'बाल विकास और शिक्षाशास्त्र' की किसी भी पुस्तक में इस तरह का कंटेंट आपको विरले ही देखने को मिले। इस अध्याय में बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र से संबंधित महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्वों (जैसे- मनोवैज्ञानिक, मनोचिकित्सक, शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक आदि) को विस्तारपूर्वक वर्णित किया गया है। हमें उम्मीद है कि इस पुस्तक के अध्ययन से सभी प्रश्नों को आप परीक्षा हॉल में आसानी से हल कर पाएंगे।

प्रस्तुत पुस्तक को पूर्ण रूप से पाठ्यक्रम के अनुरूप तैयार किया गया है। पाठ्यक्रम के जिस हिस्से को जितनी तथ्यात्मकता और जितने विस्तार से तैयार करने की आवश्यकता थी, पाठ्यसामग्री भी उसी अनुरूप समायोजित है। 350 से अधिक पृष्ठों की इस पुस्तक में संपूर्ण पाठ्यक्रम को उसकी महत्ता के अनुसार संयोजित किया गया है। हमारी कोशिश रही है कि पाठ्यसामग्री इतनी सहज हो कि इसे तैयार करने के लिये आपको अतिरिक्त ऊर्जा न लगानी पड़े। अत: सरल एवं बोधगम्य भाषा में सारगर्भित पाठ्यसामग्री का यथासंभव बिंदुवार प्रस्तुतीकरण किया गया है। कहने का भाव यह है कि यह पुस्तक आपकी तैयारी को संपूर्णता प्रदान करेगी। आपको एक अच्छा शिक्षक बनने के लिये प्रेरित करेगी

इस पुस्तक को तैयार किये जाने की प्रक्रिया अत्यंत सघन व प्रामाणिक रही है। विभिन्न शिक्षक पात्रता परीक्षाओं में सफल हुए सदस्यों की एक मुकम्मल टीम द्वारा इस पुस्तक को तैयार किया गया है। पुस्तक के एक-एक तथ्य को कई बार जाँचा गया है ताकि कोई अवधारणात्मक अथवा तथ्यात्मक त्रुटि शेष न रह जाए। उम्मीद है कि इस प्रक्रिया को जानकर आप इस पुस्तक की विश्वसनीयता के बारे में आश्वस्त हो सकेंगे।

तमाम कसौटियों पर खरी उतरने के पश्चात यह पुस्तक अब आपके हाथों में है। हमें आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक आपकी तैयारी एवं सफलता में अत्यंत सहायक सिद्ध होगी। आप पाठकों से नम्र निवेदन है कि इस पुस्तक को पाठक के साथ-साथ एक समीक्षक की नज़र से भी पढ़ें। यदि आपको पुस्तक में कोई कमी दिखे या फिर पुस्तक के आगामी संस्करण को और बेहतर बनाने के लिये आप हमें कोई सुझाव देना चाहें तो बेझिझक अपनी प्रतिक्रिया हमारे ई-मेल **help@groupdrishti.in** पर भेजें। आपकी प्रतिक्रिया के आधार पर हम पुस्तक के आगामी संस्करणों को और बेहतर बनाने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित...
प्रधान संपादक
दृष्टि पब्लिकेशन्स

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र (CTET पाठ्यक्रम)

खंड	उपखंड	महत्त्वपूर्ण टॉपिक
बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र (प्रश्नों की संख्या : 30)	बाल विकास : प्राथमिक विद्यालय के बच्चे (15 प्रश्न)	● विकास की अवधारणा तथा इसका अधिगम से संबंध ● बाल विकास के सिद्धांत ● आनुवंशिकता एवं पर्यावरण का प्रभाव ● समाजीकरण की प्रक्रियाएँ : सामाजिक दुनिया तथा बच्चे (शिक्षक, माता-पिता, सहपाठी) ● सामाजिक निर्माण के रूप में लिंग; लिंग की भूमिकाएँ, लैंगिक-पूर्वाग्रह एवं शैक्षिक प्रयास ● पियाजे, कोहलबर्ग एवं वायगोत्स्की: सिद्धांत एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण ● बाल केंद्रित तथा प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणाएँ ● बुद्धिमत्ता (इंटेलिजेंस) के निर्माण का महत्त्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य ● बहुआयामी बुद्धिमत्ता ● भाषा तथा विचार ● शिक्षार्थियों के बीच व्यक्तिगत अंतर, भाषा, जाति, लिंग, समुदाय, धर्म आदि की विविधता के आधार पर मतभेदों को समझना ● अधिगम के लिये आकलन एवं सीखी गई बातों के आकलन के बीच अंतर; स्कूल-आधारित मूल्यांकन, सतत एवं समग्र मूल्यांकन : परिप्रेक्ष्य तथा अभ्यास ● शिक्षार्थियों की तैयारी के स्तर का आकलन करने, कक्षा में अधिगम एवं समालोचनात्मक सोच को बढ़ाने तथा शिक्षार्थी की उपलब्धि का आकलन करने के लिये उपयुक्त प्रश्न तैयार करना
	समावेशी शिक्षा की अवधारणा एवं विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों को समझना (5 प्रश्न)	● कमज़ोर एवं वंचित वर्गों सहित विविध पृष्ठभूमि के शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को संबोधित करना ● अधिगम की कठिनाइयों, शारीरिक/मानसिक दोष आदि से पीड़ित बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करना ● प्रतिभाशाली, रचनात्मक, विशेष रूप से दिव्यांग शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करना
	सीखना एवं शिक्षाशास्त्र (10 प्रश्न)	● बच्चे कैसे सोचते एवं सीखते हैं; बच्चे क्यों तथा कैसे स्कूल के प्रदर्शन में सफलता हासिल करने में 'असफल' होते हैं ● शिक्षण तथा अधिगम की बुनियादी प्रक्रियाएँ; बच्चों के अधिगम की रणनीतियाँ; सामाजिक गतिविधि के रूप में अधिगम; अधिगम का सामाजिक संदर्भ; ● एक समस्या समाधानकर्त्ता एवं 'वैज्ञानिक अन्वेषक' के रूप में बच्चे ● बच्चों में अधिगम की वैकल्पिक अवधारणाएँ, बच्चों की 'त्रुटियों' को अधिगम की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण कदमों के रूप में समझना ● अनुभूति एवं भावनाएँ ● अभिप्रेरणा एवं अधिगम ● अधिगम में योगदान देने वाले कारक - व्यक्तिगत एवं पर्यावरणीय

Child Development and Pedagogy (CTET Syllabus)

Category	Sub-category	Important Topics
Child Development and Pedagogy	Child Development (Primary School Child)	● Concept of development and its relationship with learning ● Principles of the development of children ● Influence of Heredity and Environment ● Socialization processes: Social world and children (Teacher, Parents, Peers) ● Piaget, Kohlberg and Vygotsky: constructs and critical perspectives ● Concepts of child-centered and progressive education ● Critical perspective of the construct of Intelligence ● Multi-Dimensional Intelligence ● Language and Thought ● Gender as a social construct; gender roles, gender-bias and educational practice ● Individual differences among learners, understanding differences based on diversity of language, caste, gender, community, religion etc. ● Distinction between Assessment for learning and assessment of learning; School-Based Assessment, Continuous and Comprehensive Evaluation: perspective and practice ● Formulating appropriate questions for assessing readiness levels of learners; for enhancing learning and critical thinking in the classroom and for assessing learner achievement.
	Concept of Inclusive education and understanding children with special needs	● Addressing learners from diverse backgrounds including disadvantaged and deprived ● Addressing the needs of children with learning difficulties, 'impairment' etc. ● Addressing the Talented, Creative, Specially abled Learners
	Learning and Pedagogy	● How children think and learn; how and why children 'fail' to achieve success in school performance. ● Basic processes of teaching and learning; children's strategies of learning; learning as a social activity; social context of learning. ● Child as a problem solver and a 'scientific investigator' ● Alternative conceptions of learning in children, understanding 'children's 'errors' as significant steps in the learning process. ● Cognition and Emotions ● Motivation and learning ● Factors contributing to learning - personal and environmental

अनुक्रम

खंड–I : बाल विकास

1. शिक्षा मनोविज्ञान एवं अधिगम ..... 3 – 10

- शिक्षा मनोविज्ञान
  - शिक्षा का अर्थ
  - शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ
  - शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषा
  - शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति
  - शिक्षा मनोविज्ञान के उद्देश्य
  - शिक्षा मनोविज्ञान का कार्य क्षेत्र
  - शिक्षा मनोविज्ञान का महत्त्व
  - कक्षा स्थितियों में शिक्षक के निहितार्थ
- अधिगम की अवधारणा
  - अधिगम की परिभाषा
  - अधिगम की प्रकृति
  - अधिगम के परिणाम
- अधिगम के प्रकार
- अधिगम के निर्धारक
  - परिपक्वन
  - अभिप्रेरणा
  - तत्परता

2. विकास की अवधारणा एवं इसका अधिगम से संबंध ..... 11 – 21

- विकास की अवधारणा
  - विकास का अर्थ
  - विकास की परिभाषा
  - विकास की विभिन्न अवस्थाएँ
    - गर्भकालीन अवस्था
    - शैशवावस्था
    - बचपनावस्था
    - बाल्यावस्था
    - वय:संधि
    - किशोरावस्था
    - प्रौढ़ावस्था
    - मध्यावस्था
    - वृद्धावस्था
- विकास को प्रभावित करने वाले कारक
  - आंतरिक कारक
  - बाह्य कारक
  - विकास के सिद्धांत
- विकास के अभिलक्षण
- विकास का अधिगम से संबंध

3. बाल विकास के सिद्धांत ..... 22 – 30

- बाल विकास का अर्थ
  - बाल विकास की परिभाषाएँ
  - बाल विकास के सिद्धांत
    - निरंतर विकास का सिद्धांत
    - एकीकरण का सिद्धांत
    - परस्पर संबंध का सिद्धांत
    - वैयक्तिक अंतर का सिद्धांत
    - विकास भविष्यवाणी योग्य है
    - वृद्धि और विकास की गति की दर में भिन्नता
    - सामान्य से विशेष की ओर गति
    - विकास क्रम की एकरूपता
    - विकास की दिशा का सिद्धांत
    - विकास लंबवत सीधा न होकर वर्तुलाकार होता है
  - बाल विकास के सिद्धांतों का शैक्षिक महत्त्व
  - बाल विकास की प्रकृति
    - मनोविज्ञान की विशिष्ट शाखा के रूप में
    - मनोविज्ञान में विशिष्ट उपागम के रूप में
  - बाल विकास के क्षेत्र
- बाल अध्ययन विधियाँ
  - क्रमबद्ध चरित्र-लेखन विधि
    - क्रमबद्ध चरित्र-लेखन विधि के दोष
  - निरीक्षण विधि
    - निरीक्षण विधि के पद
    - निरीक्षण विधि के प्रकार
  - प्रयोगात्मक विधि
    - प्रयोगात्मक विधि के चरण

- प्रयोगात्मक विधि की उपयोगिता
- समकालीन एवं दीर्घकालीन अध्ययन प्रणालियाँ
  - समकालीन अध्ययन प्रणाली की उपयोगिता
  - दीर्घकालीन अध्ययन प्रणाली की उपयोगिता
- साक्षात्कार विधि
  - साक्षात्कार विधि के प्रकार
  - साक्षात्कार विधि का महत्त्व
- प्रश्नावली विधि
  - प्रश्नावली विधि के प्रकार
- परीक्षण विधियाँ या मनोमिति विधियाँ
- वैयक्तिक इतिहास विधि
  - वैयक्तिक इतिहास विधि के लाभ
- समाजमिति विधि
- प्रक्षेपण विधियाँ
  - प्रक्षेपण विधि के उपयोग

4. आनुवंशिकता एवं वातावरण का प्रभाव ..... 31 – 40

- आनुवंशिकता का अर्थ
- आनुवंशिकता की परिभाषा
- आनुवंशिकता के सिद्धांत
  - बीजकोष की निरंतरता का सिद्धांत
  - समानता का सिद्धांत
  - प्रत्यागमन का सिद्धांत
  - जीव सांख्यिकी सिद्धांत
  - अर्जित गुणों के संक्रमण का सिद्धांत
  - विभिन्नता का नियम
  - मेंडल का नियम
- बच्चों पर आनुवंशिकता का प्रभाव
- वातावरण का अर्थ
- वातावरण की परिभाषा
- वातावरण–संबंधी कारक
  - वातावरण का प्रभाव
  - आनुवंशिकता एवं वातावरण का संबंध
    - शिक्षक के लिये वंशानुक्रम एवं वातावरण का महत्त्व

5. समाजीकरण की प्रक्रियाएँ..... 41 – 57

- समाजीकरण
- समाजीकरण की परिभाषा
- समाजीकरण के सिद्धांत
  - चार्ल्स हॉर्टन कूली का समाजीकरण का सिद्धांत
  - इमाईल दुर्खीम का समाजीकरण का सिद्धांत
  - मीड का समाजीकरण का सिद्धांत
  - फ्रॉयड का समाजीकरण का सिद्धांत
  - पियाजे का समाजीकरण का सिद्धांत
  - कोहलबर्ग एवं गिलिगन का समाजीकरण सिद्धांत
  - एरिक्सन का समाजीकरण का सिद्धांत
- सामाजिक विकास की विशेषताएँ
  - सामाजिक विकास के मूल्यांकन की कसौटियाँ
- समाजीकरण के प्रकार
  - प्राथमिक समाजीकरण
  - द्वितीयक समाजीकरण
  - जेंडर या लैंगिक समाजीकरण
  - प्रत्याशामूलक समाजीकरण
  - पुनः समाजीकरण
  - प्रौढ़ समाजीकरण
- समाजीकरण की प्रक्रियाएँ
  - बाल्यकाल की विभिन्न अवस्थाओं में समाजीकरण की प्रक्रिया
  - शैशवावस्था में सामाजिक विकास
  - बाल्यावस्था में सामाजिक विकास
  - किशोरावस्था में सामाजिक विकास
- समाजीकरण के अभिकर्त्ता
- सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक
  - समाजीकरण में विद्यालय एवं शिक्षक का योगदान
  - विभिन्न अवस्थाओं में बच्चों के समाजीकरण की विशिष्ट क्रियाएँ

6. पियाजे, कोहलबर्ग एवं वायगोत्स्की ..... 58 – 75

- जीन पियाजे
  - पियाजे के मानसिक या संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत
  - संज्ञानात्मक विकास के चरण
- लॉरेंस कोहलबर्ग
  - कोहलबर्ग का नैतिक विकास का सिद्धांत
    - स्तर 1: पूर्व-पारंपरिक नैतिकता
    - स्तर 2: पारंपरिक नैतिकता
    - स्तर 3: उत्तर-परंपरागत नैतिकता
- लेव वायगोत्स्की
  - संज्ञानात्मक विकास पर लेव वायगोत्स्की का दृष्टिकोण
    - सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत

- अन्य से अधिक जानकार
- समीपस्थ विकास क्षेत्र
- मंच

7. बाल-केंद्रित एवं प्रगतिशील शिक्षा ..... 76 – 92

- बाल-केंद्रित शिक्षा
- बाल-केंद्रित अधिगम का दर्शन
  - प्रगतिवाद
  - सामाजिक पुनर्निर्माणवाद
  - अस्तित्ववाद
- बाल-केंद्रित अधिगम के सिद्धांत
- बाल-केंद्रित शिक्षा के आवश्यक तत्त्व
- बाल-केंद्रित उपागम में शिक्षण स्थल की भूमिका
- बाल-केंद्रित पाठ्यक्रम
  - बाल-केंद्रित पाठ्यक्रम की विशेषताएँ
- बाल-केंद्रित पाठ्यपुस्तकों की विशेषताएँ
  - बाल-केंद्रित अधिगम दृष्टिकोण का कक्षा में प्रयोग
    - शिक्षक की भूमिका
    - बच्चों को जानना
    - बच्चे कैसे सीखते हैं?
    - प्रत्येक बच्चे को अधिगम प्रक्रिया में शामिल करना
    - विभिन्न प्रकार की सामग्रियों के माध्यम से अधिगम
    - बच्चों को उनकी गति से सीखने देना
    - निगरानी
    - मूल्यांकन
    - स्वमूल्यांकन
- बाल-केंद्रित शिक्षण के लाभ
- प्रगतिशील शिक्षा
- शिक्षा में प्रगतिशील दर्शन
- शिक्षा के प्रगतिशील दृष्टिकोण के सिद्धांत
- बाल-केंद्रित एवं प्रगतिशील शिक्षा की महत्त्वपूर्ण प्रविधियाँ
- भारत में शिक्षा का सार्वभौमीकरण
  - शिक्षा के अधिकार का संवैधानिक प्रावधान
  - निशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 (RTE)
  - समग्र शिक्षा अभियान
  - समग्र शिक्षा योजना 2.0
    - योजना के तहत स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर प्रस्तावित महत्त्वपूर्ण पहल
  - सर्व शिक्षा अभियान
  - राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान
  - शिक्षक शिक्षा
  - राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020
    - स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर सबकी एकसमान पहुँच सुनिश्चित करना
    - नए पाठ्यक्रम और शैक्षणिक संरचना के साथ प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा
    - बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान प्राप्त करना
    - विद्यालय के पाठ्यक्रम और अध्यापन कला में सुधार
    - बहुभाषावाद और भाषा संबंधित प्रावधान
    - आकलन में सुधार
    - समान और समावेशी शिक्षा
    - प्रभावकारी शिक्षक भर्ती और कॅरियर प्रगति मार्ग
    - विद्यालय प्रशासन
    - स्कूली शिक्षा के लिये मानक निर्धारण एवं प्रत्यायन

8. बुद्धि और बहुआयामी बुद्धि.....93 – 109

- बुद्धि
- बुद्धि की परिभाषाएँ
  - बुद्धि की परिभाषा का चतुष्पदीय वर्गीकरण
    - समायोजन की क्षमता
    - सीखने की क्षमता
    - अमूर्त तर्क करने की क्षमता
    - कार्यात्मक परिभाषा
- बुद्धि की प्रकृति
  - बुद्धि विरासत है
  - बुद्धिमत्ता पर्यावरणीय कारकों से प्रभावित होती है
  - बुद्धिमत्ता समायोजन और आविष्कार में मदद करती है
  - बुद्धि में लैंगिक भेद नहीं होता
  - बुद्धि में कोई नस्लीय या सांस्कृतिक भेद नहीं होता
- बुद्धि के प्रकार
- बुद्धि के सिद्धांत
  - अल्फ्रेड बिने का एक कारक सिद्धांत
  - स्पीयरमैन का द्विकारक सिद्धांत
  - थॉर्नडाइक का बहु-कारक या अल्पतंत्रीय सिद्धांत
  - थर्स्टन का समूह कारक सिद्धांत
  - थॉमसन का प्रतिदर्श सिद्धांत
  - बर्ट तथा वर्नन का पदानुक्रमिक सिद्धांत
  - गिलफोर्ड का त्रि-आयामी सिद्धांत

- गार्डनर का बहु-बुद्धि सिद्धांत
- कैटल का द्रव और क्रिस्टलीकृत सिद्धांत
- बुद्धि का पास (PASS) सिद्धांत
- स्टर्नबर्ग का त्रिकोणीय या त्रि-आयामी सिद्धांत

➲ बुद्धि को प्रभावित करने वाले कारक

➲ बुद्धि का मापन
- मानसिक आयु एवं बुद्धि लब्धि
  - मानसिक आयु
  - बुद्धि लब्धि
- बुद्धि लब्धि का वर्गीकरण

➲ बुद्धि परीक्षण के प्रकार
- कुछ प्रमुख बुद्धि परीक्षण टेस्ट
  - बिने-साइमन टेस्ट
  - वेश्लर स्केल्स
  - प्राइमरी मेंटल एबिलिटीज़ टेस्ट
  - डिफरेंशियल एप्टीट्यूड टेस्ट बैटरी
  - जनरल एप्टीट्यूड टेस्ट बैटरी
  - रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस टेस्ट
  - संज्ञानात्मक क्षमता परीक्षण
  - आर्मी अल्फा और आर्मी बीटा परीक्षण
  - दास-नागलीरी संज्ञानात्मक मूल्यांकन प्रणाली
  - कल्चर फेयर इंटेलिजेंस टेस्ट (CFIT)
- भारतीय बुद्धि परीक्षण मॉडल
- भारत में विकसित एवं प्रचलित बुद्धि परीक्षण मॉडल
  - शाब्दिक परीक्षण
  - निष्पादन

➲ अधिगम में बुद्धि लब्धि परीक्षण का उपयोग

➲ बहुआयामी बुद्धि

9. भाषा, विचार एवं अभिव्यक्ति .....110 – 121

➲ भाषा की परिभाषा

➲ भाषा के भाग

➲ भाषा का विकास एवं उसके महत्त्व
- भाषा विकास के चरण
  - पूर्व-मौखिक काल या शैशवावस्था में भाषा का विकास
  - बच्चों का शब्द भंडार
  - बाल्यावस्था में भाषा का विकास
  - किशोरावस्था में भाषा का विकास
- भाषा विकास का महत्त्व
  - सामाजिक स्तर पर
  - आत्म-मूल्यांकन के स्तर पर
  - शिक्षा के स्तर पर
  - अभिव्यक्ति के स्तर पर
  - व्यक्तित्व विकास के स्तर पर

➲ भाषा उत्पत्ति के सिद्धांत
- दिव्योत्पत्ति का सिद्धांत
- संकेत का सिद्धांत
- अनुबंधन सिद्धांत
- चॉम्स्की का सिद्धांत
- धातु सिद्धांत
- आवेग सिद्धांत
- यो-हे-हो सिद्धांत
- अनुकरण सिद्धांत
- इंगित सिद्धांत
- संपर्क सिद्धांत
- संगीत सिद्धांत
- समन्वय का सिद्धांत

➲ भाषा अर्जन के प्रमुख सिद्धांत
- व्यवहारवादी सिद्धांत
- मनोवादी सिद्धांत
- संज्ञानात्मक सिद्धांत
- सामाजिक सिद्धांत

➲ सामान्य भाषा दोष या वाणी विकार

➲ भाषा विकास को प्रभावित करने वाले कारक

➲ भाषा सीखने के साधन

➲ भाषा अभिव्यक्ति
- भाषा अभिव्यक्ति के प्रकार
  - मौखिक अभिव्यक्ति
  - लिखित अभिव्यक्ति

➲ लिखित भाषा
- लिखित भाषा के कार्य
- लिखित भाषा पर उच्चरित भाषा का प्रभाव
- भाषायी चिंतन एवं विचार

10. समाज निर्माण में लैंगिक मुद्दे.....122 – 128

➲ लैंगिक भेदभाव
- व्यक्तित्व के संदर्भ में लैंगिक भेद
- आयु के विषय में लैंगिक भेद

- जाति के संदर्भ में लैंगिक भेद
- शिक्षा में लैंगिक भेद
- पूर्वाग्रह और रूढ़िबद्धता के कारण लैंगिक भेदभाव

➲ लैंगिक भेदभाव का उद्‌भव और इतिहास

➲ समाज निर्माण में लिंग की भूमिका

11. व्यक्तिगत विभिन्नताएँ .....129 – 151

➲ व्यक्तिगत विभिन्नता का अर्थ

➲ व्यक्तिगत विभिन्नता की परिभाषा

➲ व्यक्तिगत विभिन्नताओं के आधार

➲ व्यक्तिगत विभिन्नताओं के प्रकार
- शिक्षा के क्षेत्र में वैयक्तिक विभिन्नता का महत्त्व
- वैयक्तिक विभिन्नताओं को मापने की विधियाँ
- विभिन्नताओं पर आधारित प्रविधियाँ
- व्यक्तिगत विभिन्नता के कारण

➲ विशिष्ट बच्चे
- विशिष्ट बच्चों की पहचान

➲ पिछड़े बच्चे
- पिछड़े बच्चे की परिभाषा
- पिछड़े बच्चों की विशेषताएँ
- पिछड़े बच्चों की समस्याएँ
- पिछड़े बच्चों की शिक्षा

➲ बाल-अपराधी

➲ बाल-अपराध के कारण

➲ बाल-अपराधों की रोकथाम

➲ दिव्यांग बच्चे
- दिव्यांग बच्चों की समस्याएँ और उनके समाधान
- दिव्यांग बच्चों की शिक्षा

➲ मानसिक मंदन
- मानसिक मंदन का अर्थ
- मानसिक रूप से पिछड़े बच्चों की विशेषताएँ

➲ मानसिक पिछड़ेपन के कारण
- मानसिक रूप से पिछड़े बच्चों की समस्याएँ
- मानसिक पिछड़ेपन के लिये उपचार और रोकथाम

12. अभिरुचि एवं अभिक्षमता .....152 – 165

➲ अभिरुचि
- अभिरुचि की परिभाषाएँ
- अभिरुचि के स्रोत
- अभिरुचियों का निर्माण
- अभिरुचि के प्रकार
- अभिरुचियों का वर्गीकरण
- अभिरुचि को प्रभावित करने वाले कारक
- अभिरुचि वंशानुगत होती है या अर्जित
- अभिरुचि तथा रुचि में अंतर
- अभिरुचियों का मापन
  - शिक्षक-निर्मित प्रविधियाँ
  - मानक अभिरुचि आविष्कारिका
- अभिरुचि परीक्षण की उपयोगिता
  - अभिरुचि का शिक्षा में महत्त्व

➲ अभिक्षमता
- अभिक्षमता का विकास
- अभिक्षमता की विशेषताएँ
- अभिक्षमता का मापन
  - सामान्य अभिक्षमता अथवा बहुअभिक्षमता परीक्षण
  - विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण
- अभिक्षमता परीक्षण का प्रयोग
- अभिक्षमता परीक्षण के फायदे
- अभिक्षमता परीक्षण की कमियाँ

13. स्मृति और विस्मृति .....166 – 177

➲ स्मृति की परिभाषाएँ
- स्मृति के प्रकार
  - संवेदी स्मृति
  - अल्पकालिक स्मृति
  - दीर्घकालिक स्मृति
  - चलन स्मृति
- स्मृति के अंग
- स्मृति के नियम

➲ विचार-साहचर्य के नियम
- अच्छी स्मृति के लक्षण
  - स्मृति को उन्नत बनाने की विधि या स्मृति प्रशिक्षण
  - सामान्य जीवन में स्मृति के अनुप्रयोग
- विस्मरण की परिभाषाएँ
- विस्मरण का स्वरूप
- विस्मरण के सिद्धांत
- विस्मरण के कारण
- शिक्षा में विस्मृति का महत्त्व

➲ मेटा-संज्ञान

14. शारीरिक, मानसिक एवं क्रियात्मक विकास ....178 – 193

- बाल विकास का अर्थ
- शारीरिक विकास
  - शारीरिक विकास का अर्थ
  - शैशवावस्था में शारीरिक विकास
    - शारीरिक अनुपात में परिवर्तन
    - आंतरिक अंगों में वृद्धि और विकास
  - बाल्यावस्था में शारीरिक विकास
  - किशोरावस्था में शारीरिक विकास
  - शारीरिक विकास एवं वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारक
  - शारीरिक वृद्धि और विकास का महत्त्व और उसकी शैक्षिक उपयोगिता
- बौद्धिक अथवा मानसिक विकास
    - मानसिक विकास के पक्ष
    - मानसिक विकास की अवस्थाएँ
  - शैशवावस्था में मानसिक विकास
  - बाल्यावस्था में मानसिक विकास
  - किशोरावस्था में मानसिक विकास
  - पियाजे के अनुसार मानसिक विकास
  - मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक
- क्रियात्मक विकास

15. आकलन और मूल्यांकन.....194 – 208

- आकलन
  - आकलन की परिभाषाएँ
  - आकलन अभ्यास के लाभ
  - आकलन के प्रकार
    - रचनात्मक और संकलनात्मक आकलन
    - औपचारिक और अनौपचारिक आकलन
    - गुणात्मक और मात्रात्मक आकलन
    - प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष
  - अधिगम का आकलन
  - अधिगम के लिये आकलन
  - अधिगम के रूप में आकलन
- मूल्यांकन
  - मूल्यांकन की परिभाषा
  - मूल्यांकन का महत्त्व
  - मूल्यांकन की विशेषताएँ
    - मूल्यांकन के उद्देश्य
    - शिक्षा में मूल्यांकन के क्षेत्र
    - शिक्षण के क्षेत्र
    - प्रशासन के क्षेत्र
    - निर्देशन एवं परामर्श
    - भविष्य कथन
  - मूल्यांकन के प्रकार
    - योगात्मक मूल्यांकन
    - संरचनात्मक मूल्यांकन
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.)
  - सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का अर्थ
  - सतत और व्यापक मूल्यांकन के उद्देश्य
  - सतत और व्यापक मूल्यांकन का महत्त्व
  - सतत मूल्यांकन के क्षेत्र
    - शारीरिक विकास का मूल्यांकन
    - मानसिक स्वास्थ्य का मूल्यांकन
    - सामाजिक विकास का मूल्यांकन
    - व्यक्तित्त्व के विकास का मूल्यांकन
    - शैक्षिक उपलब्धियों का मूल्यांकन
    - नैदानिक मूल्यांकन
  - सतत और व्यापक मूल्यांकन की आवश्यकता एवं महत्त्व

16. उपलब्धियों का मूल्यांकन और प्रश्नों का निर्माण .. ..209 – 223

- उपलब्धि परीक्षण
- उपलब्धि परीक्षण का महत्त्व
- प्रश्न का अर्थ
- प्रश्नों के निर्माण
  - कक्षा में प्रश्न पूछने के उद्देश्य
  - प्रश्नों के प्रकार
    - वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न
    - निबंधात्मक प्रश्न
    - संक्षिप्त उत्तर वाले प्रश्न
    - विस्तृत उत्तर वाले प्रश्न
- उपलब्धि का मूल्यांकन
- निर्देशन
  - निर्देशन की परिभाषा
  - निर्देशन के प्रकार
    - शिक्षा में निर्देशन

- व्यक्तिगत निर्देशन
- व्यावसायिक निर्देशन

➲ परामर्श
- परामर्श की परिभाषा
- परामर्श की विशेषताएँ
- परामर्श की अवधारणाएँ

➲ समायोजन
- समायोजन की परिभाषा
- समायोजन की आवश्यकता
- समायोजन के प्रकार

खंड–II : समावेशी शिक्षा का सिद्धांत

17. समावेशी शिक्षा का सिद्धांत.....225 – 241

➲ समावेशी शिक्षा
- समावेशी शिक्षा की विशेषताएँ
- समावेशी शिक्षा की परिभाषा
- समावेशी शिक्षा के क्षेत्र
- समावेशी शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्त्व
- समावेशी शिक्षा के सिद्धांत
- समावेशी शिक्षा के मॉडल
- समावेशी शिक्षा के संदर्भ में शिक्षा नीति–2006
- नि:शुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009
  - अध्याय 1 : संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारंभ
  - अध्याय 2 : नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार
  - अध्याय 3 : समुचित सरकार, स्थानीय प्राधिकारी और माता–पिता के कर्त्तव्य
  - अध्याय 4 : विद्यालयों और शिक्षकों के उत्तरदायित्व
  - अध्याय 5 : प्रारंभिक शिक्षा का पाठ्यक्रम और उसका पूरा किया जाना
  - अध्याय 6 : बच्चों के अधिकार का संरक्षण
  - अध्याय 7 : प्रकीर्ण
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005
- केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद

18. विविध पृष्ठभूमि के वंचित बच्चे.....242 – 254

➲ विविध पृष्ठभूमि से वंचित बच्चे

➲ वंचित बच्चे
- वंचन का बच्चों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव
- वंचित बच्चों की शिक्षा

➲ पिछड़े बच्चे
- बच्चों के पिछड़ेपन के कारण
- बाल–अपराध
- अपराधी व्यवहार के प्रकार
- अपराधी बच्चों का उपचार एवं शिक्षा
  - मनोवैज्ञानिक विधियाँ
  - वैधानिक विधियाँ
- बाल–अपराध एवं विद्यालय

➲ मंदबुद्धि बच्चे
- मंदबुद्धिता के स्तर

19. प्रतिभाशाली, सृजनात्मक एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चे .....255 – 270

➲ प्रतिभाशाली बच्चे
- प्रतिभाशाली बच्चे की परिभाषा
- प्रतिभाशाली बच्चों की विशेषताएँ
- प्रतिभाशाली बच्चों की पहचान
- प्रतिभाशाली बच्चों के समायोजन की समस्याएँ
- प्रतिभाशाली बच्चों की शिक्षा

➲ सृजनात्मकता
- सृजनात्मकता की परिभाषाएँ
- सृजनात्मकता की प्रक्रियाएँ
- सृजनात्मकता की प्रकृति
- सृजनात्मक व्यक्तित्व के गुण या विशेषताएँ
- सृजनात्मक बच्चों की पहचान
- सृजनात्मकता का परीक्षण
- बच्चों में सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने की विधियाँ
- सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने में शिक्षक की भूमिका

➲ विशेष आवश्यकता वाले बच्चे
- शारीरिक विषमताओं वाले बच्चे
- दृष्टि बाधित बच्चे
- श्रवण दोष वाले बच्चे
- वाणी दोष वाले बच्चे
- मानसिक मंदता वाले बच्चे
- अधिगम अक्षमता वाले बच्चे
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा

खंड–III : अधिगम एवं शिक्षाशास्त्र

20. बच्चों का सोचना एवं सीखना .....271 – 296

- सोचना या चिंतन
- चिंतन की अवधारणा
- चिंतन की परिभाषाएँ
- चिंतन की विशेषताएँ
- चिंतन के सिद्धांत
  - पियाजे का सिद्धांत
  - ब्रूनर का सिद्धांत
  - सूचना प्रसंस्करण सिद्धांत
- चिंतन के प्रकार
- चिंतन के उपकरण
- बच्चों में सामान्य चिंतन प्रक्रिया
- बच्चों में उच्च स्तर के चिंतन कौशलों का विकास
  - समालोचनात्मक चिंतन
  - अभिसारी सोच
  - अपसारी चिंतन
  - रचनात्मक चिंतन
- बच्चों में चिंतन कौशल के विकास में विद्यालय एवं शिक्षक की भूमिका
- सीखना या अधिगम
- अधिगम की परिभाषाएँ
- अधिगम का स्वरूप
- अधिगम के प्रकार
  - अधिगम के सिद्धांत
  - पॉवलॉव का सीखने का क्लासिकल अनुबंधन सिद्धांत
    - पॉवलॉव का प्रयोग
    - अनुबंधन के सिद्धांत
  - थॉर्नडाइक का संबंधवाद : प्रयास और त्रुटि का सिद्धांत
    - थॉर्नडाइक का प्रयोग
    - थॉर्नडाइक द्वारा प्रतिपादित नियम
  - हल का प्रणोद न्यूनीकरण या प्रबलन का सिद्धांत
    - हल का प्रयोग
  - स्किनर का क्रियाप्रसूत या नैमित्तिक अनुबंधन सिद्धांत
    - स्किनर का प्रयोग
    - स्किनर के क्रियाप्रसूत अनुबंधन में शामिल प्रक्रियाएँ
  - सीखने का गेस्टाल्ट (कोहलर) अंतर्दृष्टि सिद्धांत
    - कोहलर का प्रयोग
  - लेविन का सीखने का फील्ड या क्षेत्र सिद्धांत
  - गैग्ने का अधिगम सिद्धांत
    - पदानुक्रम अधिगम सिद्धांत
  - पियाजे का अधिगम सिद्धांत
    - पियाजे के अधिगम सिद्धांत के तत्त्व
  - वायगोत्स्की का अधिगम सिद्धांत
    - वायगोत्स्की के अधिगम सिद्धांत के मुख्य बिंदु
  - ब्रूनर का अधिगम सिद्धांत
    - ब्रूनर का संज्ञानात्मक अधिगम सिद्धांत
  - बंडूरा का सामाजिक अधिगम सिद्धांत
  - अधिगम वक्र
  - अधिगम वक्र की विशेषताएँ
    - अधिगम पठार

21. शिक्षण–अधिगम की मूल–प्रक्रियाएँ.....297 – 324

- शिक्षण
- शिक्षण की अवधारणा
- शिक्षण की परिभाषाएँ
- शिक्षण की प्रकृति
  - शिक्षण विज्ञान और कला दोनों है
  - शिक्षण जटिल है
  - शिक्षण व्यवहार में परिवर्तन की परिकल्पना करता है
  - शिक्षण प्रक्रिया प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष विधि से हो सकती है
  - शिक्षण लंबवत या क्षैतिज हो सकता है
  - शिक्षण नियोजित या अनियोजित हो सकता है
- शिक्षण के चरण
- शिक्षण के सिद्धांत
- शिक्षण के प्रकार
- शिक्षण के चर
  - शिक्षण चरों के कार्य
    - निदानात्मक कार्य
    - उपचारात्मक कार्य
    - मूल्यांकन कार्य
- शिक्षण के सूत्र
- शिक्षण नीतियाँ
  - महत्त्वपूर्ण शिक्षण नीतियाँ
- शिक्षण विधियाँ
- शिक्षण की प्रविधियाँ
- शिक्षण युक्तियाँ

- शिक्षण कौशल
- शिक्षण प्रतिमान या शिक्षण मॉडल
  - शिक्षण प्रतिमान के प्रकार
  - शिक्षण प्रतिमान के बुनियादी तत्त्व
- शिक्षण सहायक सामग्रियाँ
  - शिक्षण में प्रयोग की जाने वाली कुछ महत्त्वपूर्ण सहायक शिक्षण सामग्रियाँ
  - शिक्षण विधि की विभिन्न प्रविधियाँ

22. बच्चा : एक समस्या-समाधानकर्त्ता तथा वैज्ञानिक अन्वेषक .....325 – 333

- समस्या-समाधान
- समस्या समाधान की परिभाषा एवं प्रकृति
- समस्या समाधान के दृष्टिकोण
- प्रभावी समस्या समाधान व्यवहार के चरण
- समस्याओं के प्रकार
- समस्या समाधान की रणनीतियाँ
  - अन्य महत्त्वपूर्ण समस्या समाधान रणनीतियाँ
- समस्या समाधान में अवरोध
  - मानसिक विन्यास
  - प्रकार्यात्मक या मानसिक स्थिरता
  - अभिप्रेरणा का अभाव
  - सांवेगिक बाधाएँ
  - पर्यावरणीय बाधाएँ
  - सांस्कृतिक बाधाएँ
- समस्या समाधान में शिक्षक की भूमिका
- चिंतन और समस्या समाधान
- बच्चा एक वैज्ञानिक अन्वेषक
- बच्चों में वैज्ञानिक अन्वेषक वाले गुणों का विकास

23. संज्ञान एवं संवेग .....334 – 344

- संज्ञान
- संज्ञान की परिभाषा
- संज्ञानवाद
- संज्ञानात्मक मनोविज्ञान
- संज्ञानात्मक विकास का अर्थ
- संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत
  - जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत
    - संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएँ
  - ब्रूनर का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत
- संवेग
- संवेग की परिभाषा
- संवेग के प्रकार
- संवेगों की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ
- संवेगात्मक प्रक्रिया के घटक
- संवेग के सिद्धांत
  - जेम्स और लैंग का सिद्धांत
  - कैनन और बार्ड सिद्धांत
  - शैक्टर और सिंगर का सिद्धांत या द्विकारक सिद्धांत
  - आनन प्रतिपुष्टि प्रकल्पना सिद्धांत
  - संवेग का संज्ञानात्मक मूल्यांकन सिद्धांत
  - संवेग का विरोधी प्रक्रिया सिद्धांत
- संवेग का मापन
  - अशाब्दिक उपकरण
  - आत्म विवरण प्रश्नावली
- विभिन्न अवस्थाओं में संवेगात्मक विकास
  - शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास
  - बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास
  - किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास
  - संवेगात्मक व्यवहार एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारक

24. अभिप्रेरणा एवं अधिगम.....345 – 354

- अभिप्रेरणा
- अभिप्रेरणा की परिभाषा
- अभिप्रेरणा के मूल संप्रत्यय
- अभिप्रेरणात्मक चक्र
- अभिप्रेरणा के प्रकार
  - प्राथमिक या मूल अभिप्रेरणा
  - द्वितीयक अभिप्रेरणा
  - बाह्य अभिप्रेरणा
  - आंतरिक अभिप्रेरणा
  - अभिप्रेरणा के अन्य प्रकार
- अभिप्रेरणा के कार्य
- अभिप्रेरणा के महत्त्वपूर्ण सिद्धांत
  - विषयवस्तु सिद्धांत
    - आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत
    - हर्जबर्ग का द्विकारक सिद्धांत

- अभिप्रेरणा का ई.आर.जी. सिद्धांत
- प्रक्रिया सिद्धांत
- अभिप्रेरणा का प्रत्याशा सिद्धांत
- पुनर्बलन सिद्धांत
- अभिप्रेरणा का अंतर्दृष्टि या सहज सिद्धांत
- उद्दीपन अनुक्रिया का सिद्धांत
- व्यवहार या सीखने का सिद्धांत
- मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत
- अभिप्रेरणा के लिये संज्ञानात्मक उपागम

➲ शिक्षा में अभिप्रेरणा का महत्त्व

➲ अधिगम में अभिप्रेरणा की विधियाँ

➲ सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा की भूमिका

25. अधिगम की वैकल्पिक अवधारणाएँ और बच्चों की त्रुटियाँ.....355 – 357

➲ अधिगम की वैकल्पिक अवधारणाएँ
- सक्रिय अधिगम
- अवलोकनात्मक अधिगम
- परिस्थिति-जन्य अधिगम
- सहयोगपूर्ण अधिगम
- विद्यालय के बाहर अधिगम

➲ अधिगम में बच्चों की त्रुटियाँ
- बच्चों की त्रुटियों को समझना
- बच्चों की त्रुटियों के कारण
- बच्चों की त्रुटियों का समाधान

26. प्रमुख व्यक्तित्व.....358 – 367

➲ सिगमंड फ्रॉयड
- जीवन परिचय
- कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत
- प्रमुख पुस्तकें

➲ जीन पियाजे
- जीवन परिचय
- कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत
- प्रमुख पुस्तकें

➲ बी.एफ. स्किनर
- जीवन परिचय
- कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत
- प्रमुख पुस्तकें

➲ जॉन डीवी
- जीवन परिचय
- कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत
- प्रमुख पुस्तकें

➲ लॉरेंस कोहलबर्ग
- जीवन परिचय
- कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत
- प्रमुख पुस्तकें

➲ लेव सिमनोविच वायगोत्स्की
- जीवन परिचय
- कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत
- प्रमुख पुस्तकें

➲ एडवर्ड एल. थॉर्नडाइक
- जीवन परिचय
- कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत
- प्रमुख पुस्तकें

➲ वोल्फगैंग कोहलर
- जीवन परिचय
- कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत
- प्रमुख पुस्तकें

➲ इवान पैत्रोविच पॉवलॉव
- जीवन परिचय
- कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत
- पुस्तकें प्रमुख

➲ जॉन ब्रॉडस वॉटसन
- जीवन परिचय
- कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत
- प्रमुख पुस्तकें

➲ जेम्स ड्रेवर
- जीवन परिचय
- कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत
- प्रमुख पुस्तकें

- एरिक एरिक्सन
  - जीवन परिचय
  - कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत
  - प्रमुख पुस्तकें
- रॉबर्ट सेसन्स वुडवर्थ
  - जीवन परिचय
  - कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत
  - प्रमुख पुस्तकें
- कर्ट लेविन
  - जीवन परिचय
  - कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत
  - प्रमुख पुस्तकें
- फ्रांसिस गैल्टन
  - जीवन परिचय
  - कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत
  - प्रमुख पुस्तकें
- हरबर्ट स्पेन्सर
  - जीवन परिचय
  - कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत
  - प्रमुख पुस्तकें
- विलियम जेम्स
  - जीवन परिचय
  - कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत
  - प्रमुख पुस्तकें
- जेम्स रॉलैंड एंजेल
  - जीवन परिचय
  - कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत
  - प्रमुख पुस्तकें
- मैक्स वर्दीमीअर
  - जीवन परिचय
  - कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत
  - प्रमुख पुस्तकें
- विल्हेम वुंट
  - जीवन परिचय
  - कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत
  - प्रमुख पुस्तकें

खंड I

बाल विकास

बाल विकास (महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स)

- विकास की अवधारणा और इसका सीखने (अधिगम) से संबंध
- बाल विकास के सिद्धांत
- आनुवंशिकता और पर्यावरण का प्रभाव
- समाजीकरण की प्रक्रियाएँ: सामाजिक दुनिया और बच्चे (शिक्षक, माता-पिता, सहपाठी)
- सामाजिक निर्माण के रूप में लिंग; लिंग की भूमिकाएँ, लैंगिक-पूर्वाग्रह और शैक्षिक प्रयास
- पियाजे, कोहलबर्ग और वायगोत्स्की: सिद्धांत और आलोचनात्मक दृष्टिकोण
- बाल केंद्रित और प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणाएँ
- बुद्धिमत्ता (इंटेलिजेंस) के निर्माण का महत्त्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य
- बहुआयामी बुद्धि
- भाषा और विचार
- शिक्षार्थियों के बीच व्यक्तिगत अंतर, भाषा, जाति, लिंग, समुदाय, धर्म आदि की विविधता के आधार पर मतभेदों को समझना
- सीखने के लिये आकलन और सीखी गई बातों के आकलन के बीच अंतर; स्कूल-आधारित मूल्यांकन, सतत और समग्र मूल्यांकन: परिप्रेक्ष्य और अभ्यास
- शिक्षार्थियों की तैयारी के स्तर का आकलन करने, कक्षा में सीखने और समालोचनात्मक सोच को बढ़ाने के लिये तथा शिक्षार्थी की उपलब्धि का आकलन करने के लिये उपयुक्त प्रश्न तैयार करना

1 शिक्षा मनोविज्ञान एवं अधिगम (Educational Psychology and Learning)

शिक्षा मनोविज्ञान (Educational Psychology)

शिक्षा का अर्थ

- शिक्षा को परिभाषित करते हुए महात्मा गांधी ने कहा, था "शिक्षा का तात्पर्य व्यक्ति के शरीर, मन और आत्मा के समुचित विकास से है।"
- हिंदी में शिक्षा का अर्थ 'ज्ञान' से लगाया जाता है। अंग्रेज़ी में इसे Education कहा जाता है। Education शब्द लैटिन भाषा के Educatum से निकला हुआ है, जिसका सामान्य अर्थ होता है– to bring up together।

शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ

- शिक्षा मनोविज्ञान से तात्पर्य शिक्षण एवं सीखने की प्रक्रिया को सुधारने के लिये मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रयोग करने से है। यह शैक्षिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है।
- यह बालकों की मानसिक, नैतिक एवं शारीरिक क्षमताओं को निर्धारित करके उसके अनुसार उचित शिक्षा की व्यवस्था करने में सहायता पहुँचाता है।

शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषाएँ

शिक्षा मनोविज्ञान को विभिन्न चिंतकों द्वारा परिभाषित किया गया है। कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाओं का उल्लेख निम्नलिखित है–

- **स्किनर** ने वर्ष 1958 में शिक्षा मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा, "शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जो सीखने और सिखाने की प्रक्रिया का अध्ययन करती है।"
- स्कॉटलैंड के मनोवैज्ञानिक **जेम्स ड्रीवर** ने शिक्षा मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा, "शिक्षा मनोविज्ञान प्रयुक्त मनोविज्ञान की एक ऐसी शाखा है जो शिक्षा में मनोवैज्ञानिक नियमों एवं परिणामों के उपयोग से तथा साथ ही साथ शिक्षा की समस्याओं के मनोवैज्ञानिक अध्ययन से संबंधित होती है।"
- **क्रो एवं क्रो** ने वर्ष 1973 में शिक्षा मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा, "शिक्षा मनोविज्ञान जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक के अधि गम अनुभवों का विवरण एवं व्याख्या प्रस्तुत करता है।"
- अमेरिकी मनोवैज्ञानिक **सैंट्रोक** के अनुसार, "शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान की ऐसी शाखा है जो शैक्षिक परिस्थितियों में शिक्षण एवं अधिगम के बोध में विभिन्नता दिखलाती है।"
- **कॉलसनिक** ने वर्ष 1936 में शिक्षा मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा, "मनोविज्ञान के सिद्धांतों व परिणामों का शिक्षा के क्षेत्र में अनुप्रयोग शिक्षा मनोविज्ञान है।"
- **ट्रो** के अनुसार, "शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक परिस्थितियों के मनोवैज्ञानिक पक्ष का अध्ययन है।"
- **स्टीफन** के अनुसार, "शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक विकास का क्रमबद्ध अध्ययन है।"
- **थॉर्नडाइक** के अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत शिक्षा से संबंधित संपूर्ण व्यवहार और व्यक्तित्व आ जाता है।
- विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत की गई शिक्षा मनोविज्ञान की विभिन्न परिभाषाओं को आधार बनाकर कहा जा सकता है कि शिक्षा मनोविज्ञान में व्यक्ति के व्यवहार, मानसिक प्रक्रियाओं एवं अनुभवों का अध्ययन शैक्षिक परिस्थितियों में किया जाता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसका ध्येय शिक्षण की प्रभावशाली तकनीकों को विकसित करना तथा अधिगमकर्त्ता की योग्यताओं एवं अभिरुचियों का आकलन करना है। यह व्यावहारिक मनोविज्ञान है जो शिक्षा एवं सीखने की प्रक्रिया को सुधारने में प्रयासरत है।
- साथ ही, यह भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि शिक्षा मनोविज्ञान बालकों की विभिन्न क्षमताओं के मापन के साथ-साथ उनके समुचित विकास एवं अनुकूल शिक्षा के लिये उचित परामर्श भी प्रदान करता है।

शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति
(Nature of Educational Psychology)

- शिक्षा मनोविज्ञान प्रकृति में वैज्ञानिक प्रकृति का होता है। इसका कारण है कि इसके द्वारा शैक्षिक वातावरण में अधिगमतकर्त्ता के व्यवहार का वैज्ञानिक विधियों, नियमों तथा सिद्धांतों के माध्यम से अध्ययन किया जाता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान विधायक और नियामक दोनों प्रकार का विज्ञान है। विधायक विज्ञान तथ्यों पर आधारित होता है, वहीं नियामक विज्ञान मूल्यांकन पर आधारित होता है।
- जहाँ शिक्षा का स्वरूप संश्लेषणात्मक होता है, वहीं शिक्षा मनोविज्ञान का स्वरूप विश्लेषणात्मक होता है। यह वस्तुपरक विज्ञान की श्रेणी में आता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान को व्यवहार के विज्ञान की श्रेणी में भी रखा जाता है, क्योंकि इसके अंतर्गत शैक्षणिक परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए बालक के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।
- शैक्षणिक परिस्थितियों के अंतर्गत बालक के व्यवहार का अध्ययन करना ही शिक्षा मनोविज्ञान की विषयवस्तु है। इसका सीधा संबंध शिक्षण में अधिगम क्रियाकलापों से है।

अभिप्रेरणा

अभिप्रेरणा व्यक्ति की वह अवस्था एवं तत्परता है, जो किसी व्यवहार को करने के लिये एवं किन्हीं उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये निर्देशित करती है। यह व्यक्ति के अंदर होने वाला शक्ति परिवर्तन है जो भावात्मक जाग्रति तथा पूर्वानुमान उद्देश्य प्रतिक्रियाओं द्वारा वर्णित होता है। सामान्य अर्थों में कहा जाए तो अभिप्रेरणा से तात्पर्य व्यक्ति की किसी समय-विशेष में उस अवस्था से है जो उसको किसी कार्य या व्यवहार-विशेष में संलग्न रहने के लिये प्रेरित या संचालित करती है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह सीखने की क्रियाओं में विद्यार्थी की रुचि को उत्पन्न और उत्तेजित करने के साथ संबंधित है। अभिप्रेरणा के कारण ही कोई भी विद्यार्थी शिक्षा में रुचि लेता है, कोई भी किसान अपने खेतों में रुचि लेता है, कोई भी वकील अपनी वकालत में रुचि लेता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह एक ऐसी शक्ति है जो मनुष्य को काम करने के लिये प्रेरित करती है।

तत्परता

जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को करने के लिये तत्पर होता है तो इसका अर्थ है कि उसकी कार्य करने में गहरी रुचि है। वह व्यक्ति इस कार्य को पूरा करने के लिये तन-मन-धन से लग जाता है। इस प्रकार किसी भी अधिगम प्रक्रिया में जुट जाने संबंधी तैयारी की अवस्था को अधिगमकर्त्ता की तत्परता का नाम दिया जाता है।

तत्परता का अधिगम से संबंध

तत्परता का अधिगम से संबंध को दर्शाने के लिये प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक थोर्नडाइक ने तत्परता के नियम (Laws of Readiness) का सिद्धांत प्रस्तुत किया। इस सिद्धांत के आधार पर उन्होंने स्पष्ट किया कि अधिगमकर्त्ता की अधिगम प्रक्रिया में सफलता इस बात पर बहुत कुछ निर्भर करती है कि वह इस प्रक्रिया में सक्रिय भाग लेने हेतु किस सीमा तक तत्पर है।

इस नियम के अनुसार, "जब कोई संवहन इकाई संवहन के लिये तैयार हो तो उसे संवहन में संतोष मिलता है। परंतु जब कोई संवहन इकाई संवहन के लिये तैयार न हो तब उसके लिये संवहन कष्टप्रद होता है। जब कोई संवहन इकाई संवहन के लिये तैयार हो तो उसे ऐसा न करने देना भी कष्टप्रद होता है।"

अतिमहत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी तथ्य

- Education शब्द लैटिन भाषा के Educatum से निकला हुआ है जिसका अर्थ होता है– 'to bring up together'।
- शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान को सर्वप्रथम स्किनर द्वारा वर्ष 1958 में परिभाषित किया गया था।
- थॉर्नडाइक के अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत शिक्षा से संबंधित संपूर्ण व्यवहार और व्यक्तित्व आ जाता है।
- जहाँ शिक्षा का स्वरूप संश्लेषणात्मक होता है, वहीं शिक्षा मनोविज्ञान का स्वरूप विश्लेषणात्मक होता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य शिक्षकों को अपने शैक्षणिक कार्यों में सहायता प्रदान करना होता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षार्थियों में बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं की विशेषता को समझने में मदद प्रदान करता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षार्थियों की वैयक्तिक विभिन्नता को समझने में मदद प्रदान करता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान के अनुसार बच्चे अपने ज्ञान का सृजन स्वयं करते हैं।
- शिक्षक का आदर्श रूप में व्यवहार करना बच्चों में नैतिकता की स्थापना के लिये सर्वोत्तम मार्ग है।
- शिक्षा का अतिमहत्त्वपूर्ण उद्देश्य है बच्चों का सर्वांगीण विकास करना।
- बाल मनोविज्ञान के अनुसार प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है।
- स्किनर महोदय ने कहा था, "मनोविज्ञान शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है।"
- शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति का वर्ष 1900 ई. को माना जाता है।
- व्यावहारिक जीवन के लिये विद्यार्थियों को तैयार करना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिये।
- स्वामी विवेकानंद के अनुसार, "शिक्षा मनुष्य में अंतर्निहित क्षमता का परिपूर्णता में विकास करती है।"
- विवेचनात्मक शिक्षाशास्त्र का दृढ़ विश्वास है कि शिक्षार्थियों के अनुभव और प्रत्यक्षण (Perception) महत्त्वपूर्ण होते हैं।
- अंतर्दर्शन विधि शिक्षा मनोविज्ञान की सर्वाधिक व्यक्तिनिष्ठ विधि है।
- शिक्षा मनोविज्ञान छात्र केंद्रित शिक्षा पर अधिक बल देता है।
- गुथरी महोदय ने बाल अधिगम विकास में पुरस्कार को महत्त्व नहीं दिया।
- गेस्टाल्ट सिद्धांतवादी ने 'सीखने के अंतर्दृष्टि सिद्धांत' को बढ़ावा दिया।
- अधिगम का व्यावहारिक सिद्धांत संबद्ध प्रतिक्रिया का सिद्धांत है।
- 'सीखने की तत्परता' सीखने के सातत्य में शिक्षार्थियों के वर्तमान संज्ञानात्मक स्तर की ओर संकेत करती है।
- परिपक्वता एवं आयु अधिगम को प्रभावित करने वाले व्यक्तिगत कारक हैं।
- प्रवीणता-अभिमुखी लक्ष्यों पर ज़ोर देकर अधिगम की अभिप्रेरणा को कायम रखा जा सकता है।
- 'संतुलित उत्तेजना, कोई भय नहीं' अधिगम की सर्वोत्तम अवस्था है।
- बच्चों के अधिगम में शारीरिक स्वास्थ्य और सांवेगिक अवस्था की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है।
- कक्षा में प्रभावशाली अधिगम के लिये सहयोगिक वातावरण की रचना करनी चाहिये बजाय प्रतिस्पर्द्धिक वातावरण के।

- गार्डनर मरफी के अनुसार "सीखने या अधिगम शब्द में वातावरण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये व्यवहार में होने वाले सभी प्रकार के परिवर्तन सम्मिलित हैं।"
- स्किनर के अनुसार, "अधिगम व्यवहार के उत्तरोत्तर सामंजस्य की प्रक्रिया है।"
- सीखना एक प्रक्रिया है, प्रक्रिया का परिणाम नहीं है।
- अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अनुभव और प्रशिक्षण के परिणामस्वरूप किसी सीखने वाले के व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी लाए जा सकते हैं।
- ज्ञानात्मक अधिगम, मनोगामिक या क्रियात्मक अधिगम तथा भावात्मक अधिगम, अधिगम के तीन मुख्य प्रकार हैं।
- अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले महत्त्वपूर्ण कारकों को आंतरिक एवं बाह्य निर्धारकों में बाँटा जाता है।
- परिपक्वन, अभिप्रेरणा तथा तत्परता अधिगम को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक होते हैं।
- तत्परता के नियम (Laws of Readiness) का प्रतिपादन अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थॉर्नडाइक ने किया था।

अभ्यास प्रश्न

1. विविध पृष्ठभूमियों के अधिगमकर्त्ताओं को संबोधित करने हेतु, एक अध्यापक को–
   (a) सभी के लिये मानकीकृत आकलनों का इस्तेमाल करना चाहिये।
   (b) ऐसे कथनों का इस्तेमाल करना चाहिये जो नकारात्मक रूढ़िबद्ध धारणाओं को मज़बूत करें।
   (c) विविधता संबंधी मुद्दों पर बातचीत टालनी चाहिये।
   (d) विविध विन्यासों के उदाहरण लेने चाहिये।
   CTET, 2021
2. अधिगम कठिनाइयों से जूझते छात्रों की ज़रूरतों को संबोधित करने के लिये एक अध्यापक को क्या नहीं करना चाहिये?
   (a) व्यक्तिगत शैक्षिक योजना बनाना
   (b) शिक्षाशास्त्र और आकलन की जटिल संरचनाओं का प्रयोग
   (c) दृश्य-श्रव्य सामग्रियों का इस्तेमाल
   (d) संरचनात्मक शिक्षाशास्त्रीय उपागमों का इस्तेमाल
   CTET, 2021
3. निम्नलिखित में से अध्यापन-अधिगम का सबसे प्रभावशाली माध्यम कौन-सा है?
   (a) बिना विश्लेषण के अवलोकन करना
   (b) अनुकरण/नकल और दोहराना
   (c) विषयवस्तु को यंत्रवत याद करना
   (d) संकल्पनाओं के बीच संबंध खोजना **CTET, 2021**
4. अधिगम की अभिप्रेरणा को किस प्रकार कायम रखा जा सकता है?
   (a) बच्चों को बहुत आसान क्रियाकलाप देकर
   (b) यंत्रवत याद करने पर ज़ोर देकर
   (c) बच्चे को दंड देकर
   (d) प्रवीणता-अभिमुखी लक्ष्यों पर ज़ोर देकर **CTET, 2021**
5. अधिगम का संरचनात्मक विचार यह सुझाव देता है कि ज्ञान की संरचना में
   (a) बच्चे सक्रिय भूमिका निभाते हैं।
   (b) बच्चे पूर्ण रूप से पाठ्यपुस्तकों पर निर्भर रहते हैं।
   (c) बच्चों की कोई भूमिका नहीं होती।
   (d) बच्चे पूर्ण रूप से वयस्कों पर निर्भर रहते हैं।
   CTET, 2021
6. अधिगम के लिये निम्नलिखित में से कौन-सी धारणा उपयुक्त है?
   (a) प्रयासों से कोई फर्क नहीं पड़ता।
   (b) असफलता अनियंत्रित है।
   (c) योग्यता सुधार्य है।
   (d) योग्यता अटल है। **CTET, 2021**
7. अधिगम की सर्वोत्तम अवस्था कौन-सी है?
   (a) संतुलित उत्तेजना, कोई भय नहीं
   (b) कोई उत्तेजना नहीं, कोई भय नहीं
   (c) उच्च उत्तेजना, उच्च भय
   (d) निम्न उत्तेजना, उच्च भय **CTET, 2021**
8. निम्नलिखित में से कौन-सा उदाहरण विद्यार्थियों को अधिगम के लिये अभिप्रेरित करने की प्रभावशाली पद्धति है?
   (a) वे कार्य देना जो कि बहुत सरल हों।
   (b) प्रतियोगिताओं के लिये बहुत से अवसर उत्पन्न करना।
   (c) पाठ उपलब्ध कराना, विशेषकर जब विद्यार्थी कोई नया कौशल सीख रहे हों।
   (d) सीखने से ज़्यादा कार्य पूर्ण करने पर बल देना।
   CTET, 2021
9. अधिगम, एक.....और.....प्रक्रिया है।
   (a) सरल, व्यक्तिगत (b) जटिल, निष्क्रिय
   (c) जटिल, सक्रिय (d) सरल, रैखिक
   CTET, 2021
10. अपनी कक्षा में अर्थपूर्ण अधिगम को सुसाध्य बनाने के लिये, अध्यापिका को अपनी कक्षा में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, भाषायी विविधता को.....चाहिये।
    (a) समझना (b) अनदेखा करना
    (c) टालना (d) अपेक्षित करना
    CTET, 2021

11. निम्नलिखित में से कौन-सी शिक्षा मनोविज्ञान की सर्वाधिक व्यक्तिनिष्ठ विधि है?
(a) अंतर्दर्शन (b) बहिर्दर्शन
(c) अवलोकन (d) प्रयोगीकरण
UPTET, 2017

12. शिक्षा मनोविज्ञान की विषयवस्तु निम्नलिखित में से किन मुख्य कारकों के ओत-प्रोत घूमती है?
(a) शिक्षार्थी एवं अधिगम अनुभव
(b) शिक्षक एवं अधिगम प्रक्रिया
(c) अधिगम परिस्थितियाँ
(d) सभी विकल्प सही हैं **HTET, 2017**

13. शिक्षा मनोविज्ञान अधिक बल देता है–
(a) शिक्षक केंद्रित शिक्षा पर (b) छात्र केंद्रित शिक्षा पर
(c) पाठ्यक्रम केंद्रित शिक्षा पर (d) विद्यालय केंद्रित शिक्षा पर
HTET, 2017

14. निम्नलिखित में से कौन-सा कारक अधिगम को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है?
(a) अनुत्तीर्ण हो जाने का भय
(b) सहपाठियों से प्रतियोगिता
(c) अर्थपूर्ण संबंध
(d) माता-पिता की ओर से दबाव **CTET, 2014**

15. किस अधिगम मनोवैज्ञानिक ने बाल अधिगम विकास में पुरस्कार को महत्त्व नहीं दिया है?
(a) थॉर्नडाइक (b) पावलॉव
(c) स्किनर (d) गुथरी **UPTET, 2013**

16. 'सीखने की तत्परता' _____ की ओर संकेत करती है।
(a) थॉर्नडाइक का तत्परता का नियम
(b) शिक्षार्थियों का सामान्य स्तर
(c) सीखने के सातत्य में शिक्षार्थियों का वर्तमान संज्ञानात्मक स्तर
(d) सीखने के कार्य की प्रकृति को संतुष्ट करने **CTET, 2013**

17. शिक्षा मनोविज्ञान की दृष्टि से निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?
(a) बच्चे अपने ज्ञान का सृजन स्वयं करते हैं।
(b) विद्यालय में आने से पहले बच्चों को कोई पूर्व ज्ञान नहीं होता है।
(c) अधिगम प्रक्रिया में बच्चों को कष्ट होता है।
(d) बच्चे यथावत वही सीखते हैं, जो उन्हें पढ़ाया जाता है।
UTT-TET, 2011

18. शिक्षा का अति महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है-
(a) आजीविका कमाना
(b) बच्चे का सर्वांगीण विकास
(c) पढ़ना एवं लिखना सीखना
(d) बौद्धिक विकास **UTT-TET, 2011**

19. "मनोविज्ञान शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है", यह किसने कहा है?
(a) बी.एन. झा (b) स्किनर
(c) डेविस (d) वुडवर्थ **BTET, 2011**

20. आधुनिक मनोविज्ञान का अर्थ है–
(a) मन का अध्ययन (b) आत्मा का अध्ययन
(c) शरीर का अध्ययन (d) व्यवहार का अध्ययन
BTET, 2011

21. शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति का वर्ष कौन-सा माना जाता है?
(a) 1947 (b) 1920
(c) 1940 (d) 1900 **BTET, 2011**

22. शिक्षा मनोविज्ञान का संबंध किससे नहीं है?
(a) मानव व्यवहार का अध्ययन
(b) मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन
(c) सीखने के तरीकों का अध्ययन
(d) संचार माध्यमों को अध्ययन **BTET, 2011**

23. शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिये-
(a) विद्यार्थियों में व्यावसायिक कुशलता का विकास करना
(b) विद्यार्थियों में सामाजिक जागरूकता तैयार करना
(c) विद्यार्थियों को परीक्षा के लिये तैयार करना
(d) व्यावहारिक जीवन के लिये विद्यार्थियों को तैयार करना
UPTET, 2011

24. "शिक्षा मनुष्य में अंतर्निहित क्षमता का परिपूर्णता में विकास करती है।" यह कथन किसका है?
(a) स्वामी विवेकानंद (b) स्किनर
(c) पेस्टॉलॉजी (d) रवींद्रनाथ टैगोर
CG TET, 2011

25. "एक बच्चा अतीत की समान परिस्थिति में की गई अनुक्रियाओं के आधार पर नई स्थिति के प्रति अनुक्रिया करता है।" यह कथन किससे संबंधित है?
(a) सीखने का 'सादृश्यता-नियम'
(b) सीखने का 'प्रभाव-नियम'
(c) सीखने की प्रक्रिया का 'अभिवृत्ति-नियम'
(d) सीखने का 'तत्परता-नियम' **CTET, 2011**

उत्तरमाला

1. (d)	2. (b)	3. (d)	4. (d)	5. (a)	6. (c)	7. (a)	8. (c)	9. (c)	10. (a)
11. (a)	12. (d)	13. (b)	14. (c)	15. (d)	16. (c)	17. (a)	18. (b)	19. (b)	20. (d)
21. (d)	22. (d)	23. (d)	24. (a)	25. (a)					

2 विकास की अवधारणा एवं इसका अधिगम से संबंध (Concept of Development and its Relationship with Learning)

विकास की अवधारणा (Concept of Development)

विकास का अर्थ

- विकास एक ऐसी सार्वभौमिक प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जन्म लेने के साथ ही प्रारंभ हो जाती है तथा आजीवन अनवरत रूप से जारी रहती है।
- मनुष्य के जीवन में आए विभिन्न प्रकार के परिवर्तनों को सामान्य भाषा में विकास के नाम से जाना जाता है। इस प्रक्रिया में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा भावनात्मक आदि पहलू सम्मिलित होते हैं।
- कुछ मनोवैज्ञानिकों द्वारा विकास को 'क्रमिक परिवर्तनों की श्रृंखला' का नाम भी दिया गया है। इसके फलस्वरूप व्यक्ति में नई विशेषताओं का उदय होता है, साथ ही पुरातन विशेषताएँ विलोपित हो जाती हैं।
- मनुष्य अपने जीवन की प्रौढ़ावस्था में पहुँचकर स्वयं को जिन गुणों से संपन्न पाता है वे सभी विकास की प्रक्रिया के ही परिणाम होते हैं।
- विकास एक ऐसी आंतरिक शक्ति है जो किसी प्राणी या समाज को उन्नति की ओर अग्रसर करती है। यह उस स्थिति का नाम है जिससे प्राणी में कार्यक्षमता बढ़ती है।

विकास की परिभाषा

विश्व के विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने विकास को निम्नलिखित रूप में परिभाषित किया है–

- **हरलॉक के अनुसार,** "विकास केवल अभिवृद्धि तक ही सीमित नहीं है वरन् वह 'व्यवस्थित' तथा 'समनुगत' परिवर्तन है, जिसमें कि प्रौढ़ावस्था के लक्ष्य की ओर परिवर्तनों का प्रगतिशील क्रम निहित रहता है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति में नवीन विशेषताएँ व योग्यताएँ प्रकट होती हैं।"
- **मुनरो के अनुसार,** "परिवर्तन-श्रृंखला की वह अवस्था जिसमें बच्चा भ्रूणावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक गुज़रता है, विकास कहते हैं।"
- **सोरेन्सन के अनुसार,** "विकास का अर्थ परिपक्वता और कार्यपरक सुधार की व्यवस्था से है जिसका संबंध गुणात्मक एवं परिमाणात्मक परिवर्तनों से है।"
- **स्किनर के अनुसार**, "विकास जीव और उसके वातावरण की अंत:क्रिया का प्रतिफल है।"
- **इरा. जी. गोर्डन के अनुसार,** "विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जन्म से लेकर उस समय तक चलती रहती है जब तक कि वह पूर्ण विकास को प्राप्त नहीं कर लेता है।"
- **लालबार्बा के अनुसार,** "विकास का अर्थ परिपक्वता से संबंधित परिवर्तनों से है जो मानव के जीवन में समय के साथ घटित होते रहते हैं।

विकास की विभिन्न अवस्थाएँ

विकास की अवस्थाओं को विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया है। इन अवस्थाओं का वर्णन निम्नलिखित प्रकार से है–

- **रॉस के अनुसार** विकास की मुख्यत: चार अवस्थाएँ होती हैं जो निम्नलिखित प्रकार से हैं–
  - (i) शैशवावस्था → 1-3 वर्ष
  - (ii) पूर्व-बाल्यावस्था → 3-6 वर्ष
  - (iii) उत्तर-बाल्यावस्था → 6-12 वर्ष
  - (iv) किशोरावस्था → 12-18 वर्ष
- **जोन्स के अनुसार** विकास की मुख्यत: तीन अवस्थाएँ होती हैं जो निम्नलिखित प्रकार से हैं–
  - (i) शैशवावस्था → जन्म से 5 वर्ष तक
  - (ii) बाल्यावस्था → 5 से 12 वर्ष तक
  - (iii) किशोरावस्था → 12 से 18 वर्ष तक
- **शैले के अनुसार** विकास की मुख्यत: तीन अवस्थाएँ होती हैं जो निम्नलिखित प्रकार से हैं–
  - (i) शैशवावस्था → 0 से 5 वर्ष तक
  - (ii) बाल्यावस्था → 6 से 12 वर्ष तक
  - (iii) किशोरावस्था → 13 से 18 वर्ष तक
- **कॉलसनिक के अनुसार** विकास की मुख्यत: सात अवस्थाएँ होती हैं जो निम्नलिखित प्रकार से हैं–
  - (i) भ्रूणावस्था → जन्म से पहले की अवस्था
  - (ii) नव-शैशवावस्था → जन्म से 4 सप्ताह तक
  - (iii) आरंभिक अवस्था → 5 माह से 15 माह तक
  - (iv) उत्तर-शैशवास्था → 15 माह से 30 माह तक
  - (v) पूर्व-बाल्यावस्था → 2 से 5 वर्ष तक
  - (vi) मध्य-बाल्यावस्था → 6 से 9 वर्ष तक
  - (vii) उत्तर-बाल्यावस्था → 9 से 12 वर्ष तक
- **हरलॉक के अनुसार** विकास की मुख्यत: ग्यारह अवस्थाएँ होती हैं जो निम्नलिखित प्रकार से हैं–
  - (i) गर्भावस्था → गर्भाधान से जन्म तक
  - (ii) शैशवावस्था → जन्म से दो सप्ताह तक
  - (iii) बचपनावस्था → तीसरे सप्ताह से दो वर्ष तक
  - (iv) पूर्व-बाल्यावस्था → तीसरे वर्ष से छ: वर्ष तक
  - (v) उत्तर-बाल्यावस्था → सातवें वर्ष से बारह वर्ष तक

3 बाल विकास के सिद्धांत (Theories of Child Development)

बाल विकास (Child Development)

- बाल विकास बच्चे के विकास के विभिन्न स्वरूपों तथा व्यवहार और क्षमताओं में परिवर्तन का वैज्ञानिक अध्ययन है। यह एक विस्तृत क्षेत्र है जिसके अंतर्गत मानव विकास तथा परिवर्तन के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया जाता है।
- 'बाल विकास' पद दो शब्दों (बाल एवं विकास) से मिलकर बना है। जिसमें बाल का अर्थ होता है बालक तथा विकास का संबंध परिवर्तनों की ऐसी प्रक्रिया से होता है जिससे गुणात्मक तथा परिमाणात्मक दोनों प्रकार के परिवर्तन जुड़े रहते हैं।
- बालक वह नर या मादा व्यक्ति होता है जिसने अभी परिपक्वता ग्रहण कर प्रौढ़ या युवा कहलाना शुरू नहीं किया। इस दृष्टि से गर्भाधान के समय से प्रारंभ होकर किशोरावस्था की समाप्ति तक संपूर्ण समय में होने वाली वृद्धि एवं विकास के स्वरूप एवं प्रक्रिया के अध्ययन को बाल विकास के अंतर्गत शामिल किया जाता है।
- बाल विकास बाल मनोविज्ञान की ही एक शाखा है जो बालकों के विकास, व्यवहार तथा विकास को प्रभावित करने वाले विभिन्न तथ्यों का अध्ययन करता है।
- बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान में एक मुख्य अंतर यह है कि बाल मनोविज्ञान बालक की क्षमताओं का अध्ययन करता है, जबकि बाल विकास क्षमताओं के विकास की दशा का अध्ययन करता है।

बाल विकास की परिभाषा *(Definition of Child Development)*

विश्व के विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा बाल विकास की विभिन्न परिभाषाएँ प्रस्तुत की गई हैं, जिनका उल्लेख निम्नलिखित है–

- **क्रो और क्रो के अनुसार,** "बाल मनोविज्ञान वह वैज्ञानिक अध्ययन है जो व्यक्ति के विकास का अध्ययन गर्भकाल के प्रारंभ से किशोरावस्था की प्रारंभिक अवस्था तक करता है।"
- **आइजनेक के अनुसार,** "बाल मनोविज्ञान का संबंध बालक में मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के विकास से है। गर्भकालीन अवस्था, जन्म, शैशवास्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था और परिपक्वास्था तक के बालक की मनोवैज्ञानिक विकास प्रक्रियाओं का अध्ययन बाल मनोविज्ञान के अंतर्गत किया जाता है।"
- **जेम्स ड्रेवर के अनुसार,** "बाल मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें जन्म से परिपक्वावस्था तक विकसित हो रहे मानव का अध्ययन किया जाता है।"
- **हरलॉक के अनुसार,** "बाल विकास मनोविज्ञान की वह शाखा है जो गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यंत मनुष्य के विकास की विभिन्न अवस्थाओं में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करती है।"

बाल विकास के सिद्धांत *(Theories of Child Development)*

बालक के विकास की प्रक्रिया के संबंध में मनोवैज्ञानिकों ने अनेक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है, जिन्हें बाल विकास के सिद्धांत के नाम से जाना जाता है। इन सिद्धांतों को निम्नलिखित रूप में वर्णित किया जा सकता है–

निरंतर विकास का सिद्धांत

विकास की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। यह एक शाश्वत प्रक्रिया है। हालाँकि विकास की गति हमेशा एकसमान नहीं होती। यह कभी तीव्र तथा कभी मंद रहती है। विकास की गति अपनी चरम सीमा पर पहुँचने से पूर्व समाप्त नहीं होती है। बालक में मानसिक गुण यकायक विकसित नहीं हो जाते, उसमें भाषा का विकास एक ही दिन में नहीं हो जाता अपितु इसकी नींव बालक में जन्म से ही पड़ जाती है।

एकीकरण का सिद्धांत

विकास की प्रक्रिया द्वारा एकीकरण के सिद्धांत का पालन किया जाता है। इसके अनुसार बालक अपने संपूर्ण अंग को और फिर अंग के भागों को चलाना सीखता है। इसके पश्चात् वह उन भागों में एकीकरण करना सीखता है। बालक सामान्य से विशेष की ओर बदलते हुए विशेष प्रतिक्रियाओं तथा चेष्टाओं को इकट्ठे रूप में प्रयोग में लाना सीखता है। उदाहरण के लिये एक बालक पहले पूरे पैर को, फिर पैर की उंगलियों को और फिर पैर तथा उंगलियों को एक साथ चलाना सीखता है।

परस्पर संबंध का सिद्धांत

शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक आदि विकास के सभी प्रकार परस्पर एक-दूसरे से संबद्ध होते हैं। इनमें से किसी भी एक प्रकार में होने वाला विकास अन्य सभी प्रकारों में होने वाले विकास को पूरी तरह प्रभावित करने की क्षमता रखता है। इसे एक उदाहरण के माध्यम से समझा जा सकता है। जिन बालकों में औसत से अधिक बुद्धि होती है, वे सामाजिक और शारीरिक विकास की दृष्टि से भी आगे बढ़े हुए पाए जाते हैं। दूसरी तरफ एक क्षेत्र में पाई जाने वाली न्यूनता दूसरे क्षेत्र में हो रही प्रगति में बाधक होती है। यही कारण है कि शारीरिक विकास की दृष्टि से पिछड़े बालक संवेगात्मक, बौद्धिक और सामाजिक विकास में भी पीछे छूट जाते हैं।

वैयक्तिक अंतर का सिद्धांत

वैयक्तिक अंतर के सिद्धांत के अनुसार बालकों का विकास और वृद्धि उनकी अपनी वैयक्तिकता (Individuality) के अनुरूप होती है। बालक अपनी स्वाभाविक गति से ही विकास और वृद्धि के विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ते रहते हैं और इसी कारण उनमें पर्याप्त विभिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। वृद्धि और विकास की दृष्टि से कोई भी एक बालक किसी अन्य बालक के समरूप नहीं होता।

4 आनुवंशिकता एवं वातावरण का प्रभाव (Influence of Heredity and Environment)

आनुवंशिकता का अर्थ (Meaning of Heredity)

माता-पिता से उनके बच्चों में शारीरिक गुणों तथा संगठनों के जींस द्वारा होने वाले संचरण का अध्ययन करने वाले विज्ञान को आनुवंशिकी की संज्ञा दी जाती है। इन्हीं जींस द्वारा व्यक्ति अपने माता-पिता से उनके गुणों एवं शारीरिक संगठनों को प्राप्त करता है। इसे ही आनुवंशिकता कहा जाता है। अन्य शब्दों में कहें तो आनुवंशिक या वंशानुगत गुणों का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरण होने की प्रक्रिया को आनुवंशिकता कहा जाता है। आनुवंशिकता के माध्यम से बालकों में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक गुणों का स्थानांतरण होता है। इस प्रकार आनुवंशिकता से तात्पर्य शारीरिक एवं मानसिक गुणों के संचरण से है जो माता-पिता से बच्चों में जींस के माध्यम से प्रवेश करते हैं।

आनुवंशिकता की परिभाषा (Definition of Child Development)

विश्व के विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा आनुवंशिकता को निम्नलिखित रूप से परिभाषित किया गया है-

- **रूथ वेंडीक्ट** के अनुसार, "वंशानुक्रम माता-पिता से संतान को प्राप्त होने वाले गुणों का नाम है।"
- **बी.एन. झा** के अनुसार, "वंशानुक्रम व्यक्ति की जन्मजात विशेषताओं का पूर्ण योग है।"
- **पी. जिस्बर्ट** के अनुसार, "प्रकृति में प्रत्येक पीढ़ी का कार्य माता-पिता द्वारा संतानों में जैवकीय या मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का हस्तांतरण करना है। इस प्रकार हस्तांतरित विशेषताओं की मिली-जुली गठरी को वंशानुक्रम के नाम से पुकारा जाता है।"
- **वुडवर्थ** के अनुसार, "वंशानुक्रम में वे सभी बातें आ जाती हैं, जो जीवन का आरंभ करते समय, जन्म के समय नहीं वरन् गर्भाधान के समय, जन्म से लगभग नौ माह पूर्व, व्यक्ति में उपस्थित थीं।"
- **डगलस एवं हॉलैंड** के अनुसार, "एक व्यक्ति से वंशानुक्रम में वे सब शारीरिक बनावटें, शारीरिक विशेषताएँ, क्रियाएँ या क्षमताएँ सम्मिलित रहती हैं, जिनको वह अपने माता-पिता, अन्य पूर्वजों या प्रजाति से प्राप्त करता है।"
- **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार, "माता-पिता की शारीरिक एवं मानसिक विशेषताओं का संतानों में हस्तांतरण होना वंशानुक्रम है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि वंशक्रम की धारणा का स्वरूप अमूर्त होता है। इसकी अनुभूति व्यवहार तथा व्यक्ति की अन्य शारीरिक, मानसिक विशेषताओं द्वारा ही होती है।

आनुवंशिकता के सिद्धांत (Theories of Heredity)

आनुवंशिकता मनोवैज्ञानिकों तथा जीववैज्ञानिकों के लिये अत्यंत रोचक और रहस्यमय विषय रहा है। आनुवंशिकता किन नियमों और सिद्धांत पर आधारित है, यह अध्ययन के नए आयाम प्रस्तुत करता है। इस विषय को आधार बनाकर आनुवंशिकता के कुछ सिद्धांत प्रतिपादित किये गए जिनका विवरण निम्नलिखित है-

बीजकोष की निरंतरता का सिद्धांत

इस सिद्धांत का प्रतिपादन जर्मन जीवविज्ञानी और आनुवंशिकी विज्ञान के संस्थापकों में से एक ऑगस्ट फ्रेडरिक वीजमैन (1843-1914) ने किया था। उन्होंने अपने अनेक अध्ययनों के पश्चात् बताया कि शरीर का निर्माण करने वाला मूल जीवाणु कभी नष्ट नहीं होता। यह अण्डकोष और शुक्रकोष के द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होता रहता है। इस प्रकार मूल जीवाणु में हस्तांतरित होने की विशेषता निहित होती है, इसीलिये एक व्यक्ति अपने पूर्वजों का प्रतिरूप होता है, उसमें कई पीढ़ियों तक पूर्वजों के गुण सन्निहित रहते हैं।

वीजमैन द्वारा प्रस्तुत इस सिद्धांत को स्वीकार नहीं किया गया। इसका मुख्य कारण यह है कि यह वंशक्रम की संपूर्ण प्रक्रिया की व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता।

समानता का सिद्धांत

इस सिद्धांत के अर्थ को स्पस्ट करते हुए डेनिस चिकित्सक सोरेंसन ने लिखा है कि बुद्धिमान माता-पिता के बच्चे बुद्धिमान, साधारण माता-पिता के बच्चे साधारण और मंदबुद्धि माता-पिता के बच्चे मंदबुद्धि होते हैं। इसी प्रकार शारीरिक रचना की दृष्टि से भी बच्चे माता-पिता के समान होते हैं। अत: इस नियम के अनुसार जैसे माता-पिता होते हैं वैसी ही उनकी संतान होती है (Like Tends of Beget Like)।

इस सिद्धांत को भी पूर्णता प्राप्त नहीं है, क्योंकि प्राय: ऐसा देखा जाता है कि काले माता-पिता की संतान गोरी, मंदबुद्धि माता-पिता की संतान बुद्धिमान होती है।

प्रत्यागमन का सिद्धांत

इस सिद्धांत के अनुसार बालक में अपने माता-पिता के विपरीत गुण पाए जाते हैं। इसके संबंध में सोरेंसन ने लिखा है कि बहुत प्रतिभाशाली माता-पिता के बच्चों में कम प्रतिभा होने की प्रवृत्ति और बहुत निम्नकोटि के माता-पिता के बच्चों में कम निम्नकोटि होने की प्रवृत्ति ही प्रत्यागमन है। बुद्धिमान माता-पिता की बुद्धिमान संतान तथा कम बुद्धि वाले माता-पिता की मंदबुद्धि संतान होना एक स्वाभाविक बात है, लेकिन यदि इसके विपरीत क्रिया होती है तो यह प्रत्यागमन (Regression) की श्रेणी में

5 समाजीकरण की प्रक्रियाएँ (Processes of Socialisation)

समाजीकरण (Socialisation)

- अन्य सभी जीवों की तरह मनुष्यों को भी समाज के प्यार और साथ की ज़रूरत होती है। समाज से अलग-थलग रहना मनुष्य के लिये न ही उचित है और न ही संभव। इन्हीं कारणों से मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी की संज्ञा दी गई है।
- एक सामाजिक प्राणी होने के बावजूद मनुष्य जन्म से सामाजिक नहीं होता है, क्योंकि जन्म के समय शिशु पूर्ण रूप से निर्बल, असहाय एवं दूसरों पर आश्रित होता है। जन्म के समय शिशु समाज के प्रति उदासीन होता है अर्थात् वह ऐसी स्थिति में होता है जिसमें न तो वह सामाजिक होता है और न ही समाज विरोधी।
- हरलॉक के अनुसार, "कोई भी बच्चा जन्म से ही सामाजिक या असामाजिक नहीं होता है, अपने आसपास लोगों की उपस्थिति होते हुए भी वह अकेला ही होता है। वह समाज में दूसरों के संपर्क में आकर समायोजन की प्रक्रिया सीखता है।"
- जन्म के बाद शिशु अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये संपर्क में आने वाले समाज के व्यक्तियों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। यहीं से मनुष्यों के समाजीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ होती है जो अनवरत रूप से जीवनपर्यंत चलती रहती है।
- समाजीकरण की इस प्रक्रिया में व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से अंत:क्रिया करते हुए समाज में प्रचलित मूल्यों, आदतों, विश्वासों, रीति-रिवाजों तथा परंपराओं एवं अभिवृत्तियों को सीखता है, इन्हें अपनाता है और पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करता है।
- किसी व्यक्ति में समाजीकरण का अध्ययन समाजमिति (Sociometry) के अंतर्गत किया जाता है। समाजमिति (Sociometry) एक समूह के सदस्यों के अंतर्संबंधों, उनके दृष्टिकोण, मूल्यों, एक-दूसरे के प्रति स्वीकृति और समूह में प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका का अध्ययन करने वाला विज्ञान है।
- समाजीकरण का मापन समाजमिति तकनीक या सोशियो-मेट्रिक तकनीक (Socio-metric Technique) द्वारा किया जाता है जिसे सर्वप्रथम जे.एल. मोरेनो और हेलेन जेनिंग्स (J.L. Moreno and Hellen Jennings) द्वारा विकसित किया गया था।

समाजीकरण की परिभाषा (Definition of Socialisation)

- कई विद्वानों द्वारा समाजीकरण के बारे में अपने विचार व्यक्त किये गए हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं-

समाजीकरण की परिभाषा

- **ड्रेवर (Drever)** के अनुसार, "समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने सामाजिक परिवेश से सामंजस्य स्थापित करता है एवं सामाजिक मान्यता प्राप्त करने के उपरांत वह समाज का मान्य, सहयोगी तथा कुशल सदस्य बन जाता है।"
- **रॉस (Ross)** के अनुसार, "समाजीकरण सहयोग करने वाले व्यक्तियों में सामूहिक भावना का विकास करता और उनके सामूहिक रूप से कार्य करने की इच्छा एवं क्षमता का संवर्द्धन करता है।"
- **चाइल्ड (Chield)** के अनुसार, "सामाजिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति में उसके समूह/सामाजिक मानकों के अनुसार वास्तविक व्यवहार का विकास होता है।"
- **वॉटसन (Watson)** के अनुसार, "समाजीकरण एक सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।"
- **सोरोकिन (Sorokin)** के अनुसार, "समाजीकरण सांस्कृतिक तथा वैचारिक कारकों के अंत:करण की प्रक्रिया है।"
- **सारे व टेलफोर्ड (Sare & Taleford)** के अनुसार, "शिशु में समाजीकरण की प्रक्रिया अन्य दूसरे व्यक्तियों के साथ प्रथम संपर्क से आरंभ होती है एवं यह प्रक्रिया आजीवन चलती रहती है।"
- **सोरेनसन (Sorenson)** के अनुसार, "सामाजिक अभिवृद्धि एवं विकास का अर्थ है अपनी और दूसरों की उन्नति के लिये योग्यता की वृद्धि।"

समाजीकरण के सिद्धांत (Theories of Socialisation)

- समाजीकरण एक सतत और अनंत प्रक्रिया है। यह एक बच्चे को सामाजिक दुनिया में शामिल करने की एक प्रक्रिया है। समाजशास्त्र और मनोविज्ञान के सबसे प्रसिद्ध सिद्धांतों में से अधिकांशत: मनोवैज्ञानिक एवं समाजशास्त्री इससे सहमत हैं कि बच्चे के विकास में 'स्व' (Self) प्राथमिक अवधारणा है और इसका विकास समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से होता है।
- समाजीकरण के कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धांत अमेरिकी समाजशास्त्री चार्ल्स हॉर्टन कूले (Charles Horton Cooley) एवं जॉर्ज हरबर्ट मीड (George Herbert Mead) और ऑस्ट्रियाई न्यूरोलॉजिस्ट सिग्मंड फ्रॉयड (Sigmund Freud) द्वारा प्रस्तुत किये गए।
- इनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों का विवरण निम्नलिखित है-

चार्ल्स हॉर्टन कूले का समाजीकरण का सिद्धांत

- कूले ने अपनी पुस्तक सोशल ऑर्गनाइज़ेशन (Social Organisation) में लिखा है कि 'स्व' और समाज (Self and Society) के निर्माण

6 पियाजे, कोहलबर्ग एवं वायगोत्स्की (Piaget, Kohlberg and Vygotsky)

एक सामाजिक प्राणी होने के बावजूद मनुष्य जन्म से सामाजिक नहीं होता है। मनुष्य को सामाजिक बनाने की प्रक्रिया कई चरणों से होकर गुज़रती है। विकास की यह प्रक्रिया शिशु के जन्मोपरांत प्रारंभ होती है एवं अनवरत रूप से जीवनपर्यंत चलती रहती है।

बच्चों के विकास की विभिन्न अवस्थाओं में प्रत्येक चरण पर कुछ विशेष गुणों का विकास होता है। मनोवैज्ञानिकों ने बच्चों के विभिन्न अवस्थाओं में विशेष गुणों के विकास से संबंधित कई महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है।

इन मनोवैज्ञानिकों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण जीन पियाजे (Jean Piaget), कोहलबर्ग (Kohlberg's) एवं वायगोत्स्की (Vygotsky's) हैं।

जीन पियाजे (Jean Piaget)

- जीन पियाजे (1896-1980) स्विट्ज़रलैंड के एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक और आनुवंशिकीविद थे। जीन पियाजे को उनके 'संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत' के लिये जाना जाता है जो कि बच्चों में होने वाले बौद्धिक विकास से संबंधित है। पियाजे प्रथम ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने बच्चों में बौद्धिक विकास का क्रमबद्ध अध्ययन किया।
- बच्चों में बुद्धि के विकास का क्रमबद्ध अध्ययन करने हेतु उन्होंने अपने बच्चों पर प्रयोग करना प्रारंभ किया। उन्होंने बड़ी सूक्ष्मता से बढ़ती उम्र के साथ बच्चों के बौद्धिक विकास का अध्ययन किया। अपने बच्चों पर किये गए उनके अध्ययन के निष्कर्षों को पियाजे के मानसिक या संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत के रूप में जाना जाता है।

पियाजे का मानसिक या संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत

- पियाजे द्वारा प्रतिपादित 'मानसिक या संज्ञानात्मक विकास' का सिद्धांत बच्चों में चरणबद्ध रूप से संज्ञानात्मक विकास का वर्णन करता है।
- यहाँ पर संज्ञानात्मक विकास का अर्थ बच्चों के सीखने और सूचनाएँ एकत्रित करने की क्षमता एवं तौर-तरीके से है। संज्ञानात्मक विकास में बच्चों के अंदर भाषा, सोचने की क्षमता, स्मृति, तर्क-शक्ति इत्यादि को शामिल किया जाता है।
- पियाजे के अनुसार, प्रारंभिक संज्ञानात्मक विकास में क्रियाओं के आधार पर प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं और अगले चरण के संज्ञानात्मक विकास में मानसिक कार्यों में परिवर्तन में प्रगति देखी जाती है।

पियाजे के सिद्धांत के महत्त्वपूर्ण संप्रत्यय

- **स्कीम्स (Schemes):** पियाजे के अनुसार स्कीम्स ज्ञान की श्रेणियाँ होती हैं जिनके द्वारा हम दुनिया की व्याख्या करने एवं इसे समझने में सक्षम हो पाते हैं। इसमें समझ और ज्ञान को विकसित करने वाली मानसिक एवं शारीरिक क्रियाओं को शामिल किया जाता है।
- **अनुकूलन (Adaptation):** पियाजे के अनुसार, 'अनुकूलन' एक मौलिक जैविक प्रक्रिया होती है। सभी सजीवों में अनुकूलन की क्षमता होती है चाहे उनमें तंत्रिका तंत्र या मस्तिष्क हो अथवा नहीं हो। अनुकूलन की प्रक्रिया के दो पहलू होते हैं- आत्मसातीकरण (Assimilation) और समायोजन (Accommodation)।
- **आत्मसातीकरण (Assimilation):** पियाजे के अनुसार, 'आत्मसातीकरण' पूर्व ज्ञान के साथ नवीन ज्ञान को जोड़ने की प्रक्रिया है।
- **समायोजन (Accommodation):** पियाजे के अनुसार, 'समायोजन' एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें नए विचारों या अनुभवों के परिणामस्वरूप मौजूदा ज्ञान या विचारों को परिवर्तित किया जाता है। इस प्रक्रिया के दौरान नई स्कीम या ज्ञान का भी विकास होता है।
- **संतुलन (Equilibration):** पियाजे का मानना है कि सभी बच्चे आत्मसातीकरण और समायोजन के मध्य संतुलन बनाने की कोशिश करते हैं एवं इसे जिस तंत्र से प्राप्त किया जाए वही संतुलन है।

संज्ञानात्मक विकास के चरण

बच्चों में संज्ञानात्मक विकास निश्चित अवस्थाओं के क्रम में संपादित होता है। संज्ञानात्मक विकास कई कारकों पर आधारित होता है जिसमें शामिल हैं- संवेदी प्रेरक अवस्था, अनुकरण (Imitation), स्मृति (Memory) एवं मानसिक निरूपण।

पियाजे ने बच्चों में होने वाले संज्ञानात्मक विकास को चार अवस्थाओं में विभाजित किया है जो निम्नलिखित हैं-

- **संवेदी प्रेरक अवस्था (Sensory Motor Stage):** संवेदी प्रेरक या इंद्रियजनित गामक चरण की अवधि जन्म से लेकर लगभग दो साल तक रहती है। शिशु संवेदी अनुभवों का शारीरिक क्रियाओं के साथ समन्वय करते हुए संसार का अन्वेषण करता है। इस अवस्था की शुरुआत सरल प्रतिवर्ती (Reflexes) से शुरू होकर जटिल संवेदी प्रेरक के साथ समाप्त होता है। पियाजे ने इस चरण को छह अलग-अलग उप-चरणों में विभाजित किया है-
  - **प्रतिवर्त क्रियाएँ (Reflexes: 0 से 1 महीना):** इस अवस्था में प्रत्येक बालक अपनी कुछ जन्मजात सजगता, जैसे कि चूसने और देखने के माध्यम से पर्यावरण को समझता है।
  - **प्राथमिक परिपत्र प्रतिक्रियाएँ (Primary Circular Reactions: 1 से 4 महीने तक):** एक से चार महीने के बीच, बच्चा अपनी खुद की क्रियाओं को समझता है। बालक की इन क्रियाओं का यदि हम उन्हीं क्रियाओं के रूप में प्रत्युत्तर दें तो यह बालक में काफी उत्तेजना उत्पन्न कर देता है।

7 बाल-केंद्रित एवं प्रगतिशील शिक्षा (Child-centred and Progressive Education)

बाल-केंद्रित शिक्षा (Child-centred Education)

- सभी बच्चों को ऐसी शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है जो उन्हें जीवन में आगे बढ़ने और उनके सर्वांगीण विकास में सहायता प्रदान करे। यदि हम चाहते हैं कि सभी बच्चे अपनी पूरी क्षमता से सीखें और और उनका सर्वांगीण विकास हो तो यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की योजना इस प्रकार तैयार की जाए जो बच्चों के इर्द-गिर्द हो। अन्य शब्दों में, शिक्षा में अधिकतम लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये अधिगम को बाल-केंद्रित होना चाहिये।
- पारंपरिक शिक्षण विधियों में शिक्षक कक्षा की प्रक्रियाओं को नियंत्रित करते थे और शिक्षार्थी निष्क्रिय (Passive) प्राप्तकर्त्ता थे। बाल केंद्रित उपागम में अंतर्निहित दर्शन 'संरचनावाद' है, जिसके अनुसार शिक्षार्थी सक्रिय अवस्था में अपने पिछले अनुभवों के आधार पर नए ज्ञान का निर्माण करते हैं।
- शिक्षार्थी अपनी स्वयं की सीखने की रणनीति तैयार करते हैं। शिक्षक की भूमिका एक समन्यवक की होगी जो सीखने के कार्यों की रूपरेखा तैयार करेगा एवं इस प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करता रहेगा। अनुभवात्मक अधिगम जैसी रणनीतियों के माध्यम से बाल केंद्रित दृष्टिकोण को अपनाया जा सकता है।
- उल्लेखनीय है, जहाँ प्राचीनकाल में शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों के मस्तिष्क में मात्र जानकारियाँ भरना था, तो वहीं आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य बालकों का सर्वांगीण विकास करना है।
- हालाँकि अलग-अलग समय के महान दार्शनिकों और शिक्षाविदों, जैसे रूसो, फ्रोबेल, पेस्टलोजी, मॉन्टेसरी आदि ने बाल-केंद्रित शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया।
- भारतीय विद्वानों, जैसे- रवींद्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद, श्री अरबिंदो और महात्मा गांधी के विचारों में भी बाल-केंद्रित शिक्षा के शैक्षिक दर्शन परिलक्षित होते हैं।
- प्रमुख शिक्षाविद् गिजु भाई ने बाल-केंद्रित शिक्षा को प्रोत्साहन देते हुए कई पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का संपादन किया। इसके साथ ही, इन्होंने भारत में मॉन्टेसरी पद्धति को विकसित करने में प्रमुख भूमिका निभाई।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 में विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर "शिक्षण-अधिगम की बाल-केंद्रित और गतिविधि-आधारित प्रक्रिया" की वकालत की गई है।
- कई विकासशील देशों की तरह, दशकों से भारत सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) कार्यक्रम, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ), 2005 और शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई), 2009 जैसे सुधारात्मक प्रयासों के माध्यम से स्कूली शिक्षा को 'शिक्षक-केंद्रित' से 'शिक्षार्थी-केंद्रित' बनाने का प्रयास कर रहा है।
- शिक्षा का अधिकार (Right to Education – RTE) अधिनियम बच्चे के व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिये बाल-हितैषी एवं बाल केंद्रित अधिगम को महत्त्वपूर्ण मानता है।
- RTE में शिक्षक की भूमिका को एक ऐसे समन्वयकर्त्ता के रूप में देखा गया है जो बच्चों को उनके दैनिक जीवन से अधिगम को जोड़कर ज्ञान-अर्जन हेतु प्रेरित करता है।
- RTE के अनुसार शिक्षक को विद्यार्थियों के संदर्भ में निम्नलिखित जानकारी होनी चाहिये-
  - विद्यार्थी का शारीरिक विकास और स्वास्थ्य
  - मानसिक क्षमताएँ और सीखने वाले की क्षमता
  - संस्कृति
- भारत में बाल-केंद्रित शिक्षाशास्त्र को प्रोत्साहन देने के लिये देश के विभिन्न भागों में कई प्रयोग किये जा रहे हैं। उदाहरण के लिये, तमिलनाडु में गतिविधि आधारित दृष्टिकोण, कर्नाटक का नल्ली-केली कार्यक्रम, कर्नाटक का होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम आदि।

बाल-केंद्रित अधिगम का दर्शन (Philosophy of Child-centred Learning)

बाल-केंद्रित अधिगम के केंद्रबिंदु में प्रगतिवाद, सामाजिक-पुनर्निर्माणवाद और अस्तित्ववाद का दर्शन अंतर्निहित है।

प्रगतिवाद

- शिक्षा के प्रगतिशील दर्शन में विद्यार्थियों को उनकी गति से अधिगम में प्रगति करने का अधिकार दिया जाता है। इस दर्शन के एक प्रमुख प्रस्तावक जॉन डीवी थे जिन्होंने शिक्षा के 'लोकतांत्रिक सिद्धांत' की अवधारणा प्रस्तुत की।
- बाल-केंद्रित अधिगम दृष्टिकोण प्रगतिवाद के विचारों के अनुरूप है क्योंकि विद्यार्थी बाल-केंद्रित अधिगम के केंद्र में होते हैं। इसमें विद्यार्थियों की चिंताओं, जिज्ञासा और वास्तविक दुनिया के अनुभवों के संदर्भ में विद्यालय की गतिविधियों के आयोजन पर बल दिया जाता है। इस उपागम में शिक्षक की भूमिका मात्र सूचना प्रसारित करने या जानकारी प्रदान की नहीं होती है बल्कि उसे विद्यार्थियों को स्वयं से सीखने एवं किसी प्रश्न के उत्तर तक पहुँचने के संदर्भ में उनकी क्षमता का विस्तार करना है।

8 बुद्धि और बहुआयामी बुद्धि (Intelligence and Multidimensional Intelligence)

बुद्धि (Intelligence)

- हम अपने दैनिक जीवन में अक्सर बुद्धि शब्द का प्रयोग कुछ व्यक्तिगत गुणों, जैसे- तेज़ी से सीखना, अच्छी स्मृति शक्ति, तार्किक चिंतन आदि के लिये करते हैं। ऑक्सफोर्ड शब्दकोश की परिभाषा के अनुसार बुद्धि को प्रत्यक्षण करने (Perceiving), सीखने (Learning), समझने (Understanding) और जानने (Knowing) की क्षमता के रूप में वर्णित किया गया है।
- प्रकृति में मनुष्य एक-दुसरे से व्यवहार में काफी भिन्न होता है एवं वह विभिन्न तरीकों से अपने व्यवहार को पर्यावरण के अनुसार अनुकूलित करता है। व्यक्तियों के व्यवहार की भिन्नता एवं वातावरण में वह कैसे अनुकूलन करेगा इसको बुद्धि के द्वारा जाना जा सकता है।
- बुद्धि की किसी स्वीकृत परिभाषा को लेकर मनोवैज्ञानिकों में व्यापक मतभेद है। हालाँकि परंपरागत रूप से यह स्वीकार किया जाता है कि "बुद्धि सबसे महत्त्वपूर्ण एकल चर है जो विद्यालय और जीवन में सफलता को प्रभावित करता है। बुद्धिमत्ता उद्देश्यपूर्ण ढंग से कार्य करने, तर्कसंगत रूप से सोचने और पर्यावरण के साथ प्रभावी ढंग से निपटने हेतु व्यक्ति की समग्र या व्यापक क्षमता है।

बुद्धि की परिभाषाएँ (Definitions of Intelligence)

- मनोवैज्ञानिकों द्वारा बुद्धि की विभिन्न परिभाषाएँ दी गई हैं। इसमें अल्फ्रेड बिने ने बुद्धि को निर्णय, बोध एवं तर्क क्षमता का प्रत्यय माना, तो वहीं वेश्लर ने बुद्धि को पर्यावरण के प्रति अनुकूलन की क्षमता का प्रत्यय माना।
- गार्डनर और स्टर्नबर्ग जैसे मनोवैज्ञानिकों द्वारा बुद्धि को पर्यावरण में अनुकूलन, परिवर्तन और परिमार्जन की क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है।

बुद्धि की परिभाषा का चतुष्पदीय वर्गीकरण

मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई बुद्धि की परिभाषाओं को उनकी मूलभूत विशेषताओं के कारण चार भागों में विभाजित किया जा सकता है, जो निम्नलिखित हैं-

1. समायोजन की क्षमता

परिभाषाओं का पहला समूह व्यक्ति के अपने संपूर्ण वातावरण या उसके सीमित पहलुओं के साथ समायोजन और अनुकूलन पर बल देता है। इसमें हम निम्नलिखित परिभाषाओं को रख सकते हैं-

- बिने के अनुसार, "बुद्धि किसी व्यक्ति की वह क्षमता है जिसमें वह लक्ष्यों की प्राप्ति के संदर्भ में अपने व्यवहार को निर्देशित करता है।"
- जे. पियाजे के अनुसार, "बुद्धि भौतिक और सामाजिक वातावरण के संदर्भ में अनुकूलन की क्षमता है।"
- बर्ट के अनुसार, "बुद्धि अपेक्षाकृत नवीन स्थितियों के लिये नए मनो-शारीरिक समन्वय के माध्यम से पुनः समायोजन की शक्ति है।"

2. सीखने की क्षमता

बुद्धि की परिभाषाओं का दूसरा समूह सीखने की क्षमता पर बल देता है। इसमें निम्नलिखित परिभाषाओं को शामिल किया जाता है-

- स्पीयरमैन के अनुसार, "बुद्धि को दो क्षमताओं के संदर्भ में समझा जा सकता है प्रथम, 'G' या सामान्य और द्वितीय, 'S' या विशिष्ट।"
- थर्स्टन के अनुसार, "बुद्धि को पाँच प्राथमिक योग्यताओं के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

3. अमूर्त तर्क करने की क्षमता

परिभाषाओं के तीसरे समूह के अनुसार, बुद्धि अमूर्त सोच को आगे बढ़ाने की क्षमता है। इसमें निम्नलिखित परिभाषाओं को शामिल किया जाता है-

- सी. स्पीयरमैन के अनुसार, सामान्य बुद्धि वह है जिसमें मुख्य रूप से संबंधों और सहसंबंधों (relations and correlates) का ज्ञान शामिल हो।
- ई.एल. थॉर्नडाइक के अनुसार, "हम सामान्य रूप से बुद्धि को सत्य या तथ्य (truth or fact) के दृष्टिकोण से उचित प्रत्युत्तर की क्षमता के रूप में परिभाषित कर सकते हैं।"

4. कार्यात्मक परिभाषा

बुद्धि की चौथी श्रेणी की परिभाषाओं में इसके कार्यात्मक पहलुओं को शामिल किया जाता है। इसमें निम्नलिखित परिभाषाओं को शामिल किया जाता है-

- डी. डब्ल्यू. वेश्लर के अनुसार, "बुद्धिमत्ता व्यक्ति के उद्देश्यपूर्ण ढंग से कार्य करने, तर्कसंगत रूप से सोचने और पर्यावरण से प्रभावी ढंग से निपटने के लिये समग्र या सार्वत्रिक क्षमता है।"
- पी.ई. वर्नन के अनुसार, "बुद्धिमत्ता वह है जो बुद्धि परीक्षण का मापन करती है।"

बुद्धि की प्रकृति (Nature of Intelligence)

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बुद्धि की प्रकृति की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं-

बुद्धि विरासत है

बुद्धि को बढ़ाया या घटाया नहीं जा सकता। एक व्यक्ति के पास जितनी बुद्धि होती है वह उसे विरासत से मिलती है और निश्चित होती

9 भाषा, विचार एवं अभिव्यक्ति (Language, Thoughts and Expression)

भाषा की परिभाषा (Definition of Language)

भाषा शब्द संस्कृत के 'भाष्' धातु से बना है जिसका अर्थ 'बोलना या कहना' होता है। सामान्य अर्थों में भाषा हमारे मुख से उच्चरित वह सार्थक ध्वनि समूह है जिसके द्वारा हम अपनी भावनाओं को किसी दूसरे व्यक्ति के सामने अभिव्यक्त करते हैं या उसे समझाते हैं।

- **स्वीट के अनुसार–** "भाषा, ध्वनियों द्वारा मानव के भावों की अभिव्यक्ति है।"
- **प्लेटो के अनुसार–** "विचार और भाषा में बहुत कम अंतर है। विचार आत्मा की मूक या ध्वनिरहित बातचीत है वहीं शब्द जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।"
- **ब्लॉक तथा ट्रेगर के अनुसार–** "भाषा यादृच्छिक भाष् प्रतिकों का तंत्र है जिसके द्वारा एक सामाजिक समूह सहयोग करता है।"
- **पतंजलि के अनुसार–** "भाषा वह व्यापार है जिससे हम वर्णात्मक या व्यक्त शब्दों द्वारा अपने विचारों को प्रकट करते हैं।"
- **क्रोचे के अनुसार–** "भाषा अभिव्यक्ति की दृष्टि से उच्चरित एवं सीमित ध्वनियों का संगठन है।"
- **नॉम चॉम्स्की के अनुसार–** "भाषा वाक्यों की व्यवस्था है जो आकार में सीमित होती है तथा सीमित तत्त्वों के परस्पर संयोग से निर्मित होते जाती है।"
- **आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा के अनुसार–** "उच्चरित ध्वनि संकेतों की सहायता से भाव या विचार की अभिव्यक्ति भाषा है।"
- **भोलानाथ तिवारी के अनुसार–** "भाषा निश्चित प्रयत्न के फलस्वरूप मनुष्य के मुख से निःसृत वह सार्थक ध्वनि-समष्टि है, जिसका विश्लेषण व अध्ययन हो सके।"

भाषा के भाग (Parts of Language)

अध्ययन के दृष्टिकोण से भाषा को निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है-

- **स्वनिम (Phoneme):** स्वनिम ध्वनि की सबसे छोटी इकाई है। इसका कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं होता है लेकिन यह किसी शब्द के साथ मिलकर उसका अर्थ परिवर्तित कर देता है। जैसे– अ, आ, ई, त, प आदि।
- **रूपिम (Morphem):** उच्चारण की न्यूनतम अर्थवान इकाई रूपिम कहलाती है। **डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार–** "भाषा या वाक्य की लघुतम सार्थक इकाई रूपिम कहलाती है।" जब बच्चे को स्वनिम का ज्ञान हो जाता है तो वह शब्दों को सीखना आरंभ कर देता है। जैसे- अच्छा, तबला, गाना, जाना आदि।
- **वाक्य विन्यास (Syntactically):** वाक्य विन्यास का अर्थ वाक्य की संरचना से होता है अर्थात् कर्त्ता, कर्म तथा क्रिया का उचित स्थान पर निर्धारण। भाषा का नियम वाक्य विन्यास के अंतर्गत आता है। जैसे– राजेश खाना खा रहा है। इस वाक्य में सभी शब्द क्रम में हैं। यदि हम इसी वाक्य को "खाना रहा राजेश है खा।" लिखते हैं तो इस वाक्य में शब्दों का क्रम सही न होने से यह गलत हो जाएगा।
- **अर्थविन्यास:** जब वाक्य में दिये गए सभी शब्द अर्थपूर्ण हों तो उसे अर्थ विन्यास कहा जाता है। जैसे– राजन चाय पी रहा है।

इस वाक्य के सभी शब्द क्रम में हैं और अर्थपूर्ण हैं लेकिन इस वाक्य को हम अगर "राजन चाय खा रहा है" लिखेंगे तो गलत हो जाएगा। क्योंकि चाय को खाया नहीं जा सकता।

भाषा का विकास एवं इसके महत्त्व (Development of Language and its Importance)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में मनुष्य की दैनिक गतिविधियों को पूरा करने के लिये, भावनाओं को संप्रेषित करने के लिये भाषा एक माध्यम का काम करती है।

भाषा विकास के चरण

पूर्व-मौखिक काल या शैशवावस्था में भाषा का विकास

- जन्म के समय शिशु की पहली भाषा क्रंदन होती है। 25 सप्ताह तक शिशु जिस प्रकार की ध्वनि निकालता है उनमें स्वरों की संख्या अधिक होती है। 10 माह पश्चात शिशु पहला पूर्ण शब्द बोलता है। एक वर्ष तक के शिशु की भाषा समझना कठिन होता है एवं उसे सिर्फ अनुमान द्वारा समझा जा सकता है।
- शैशव में बच्चों में कल्पना शक्ति का विकास तेज़ी से होता है जिससे वे अपनी कलाओं या गुणों को पहचान पाते हैं तथा कहानियों, चित्रकारी या कविताओं द्वारा अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं। भाषा के माध्यम से ही किशोर में संकल्पनाओं का विकास होता है जिससे वे भावी जीवन को सरल, सुगम बना पाते हैं।

बच्चों का शब्द भंडार

- आयु में वृद्धि के साथ-साथ मनुष्य के शब्द भंडार में वृद्धि होती है। थॉमसन तथा लिपसिट के अनुसार,

आयु	शब्द भंडार
18 माह	10 शब्द
2 वर्ष	272 शब्द
2½ वर्ष	450 शब्द
3 वर्ष	1000 शब्द

10 समाज निर्माण में लैंगिक मुद्दे (Gender Issues in Society Building)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। किंतु समाज में एकसाथ रहते हुए भी सभी के आचार-व्यवहार, सभ्यता-संस्कृति तथा गुणों में विभेद दिखाई देता है। किसी भी मनुष्य की प्रवृत्ति उसके गुणों का द्योतक होती है। गुणों में विभिन्नताओं के होने पर भी प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व अपने-आप में पूर्ण होता है। समाज को लैगिंक आधार पर प्रमुखता से दो भागों में बाँटा गया है- 'पहला स्त्री तथा दूसरा पुरुष'। 'लिंग' का अंग्रेज़ी पर्याय 'जेंडर' होता है। जेंडर शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'जीनस' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है 'प्रकार (Kind)'। जेंडर या लिंग एक सामाजिक-सांस्कृतिक तथ्य है, जो समाज की लैंगिक संरचना करता है। मनोविज्ञान में हमेशा यह अध्ययन का विषय रहा है कि स्त्री और पुरुष की मानसिक व शारीरिक योग्यताओं में इतना अंतर क्यों होता है। उम्र बढ़ने के शुरुआती समय में लड़कियाँ लड़कों से अधिक तीव्र विकास करती हैं, उनमें भाषा का गुण तथा स्मरण शक्ति भी अधिक होती है परंतु जैसे-जैसे विकास प्रक्रिया आगे बढ़ने लगती है लड़के लड़कियों से आगे निकल जाते हैं। अध्ययनकर्त्ताओं ने इसका सबसे महत्त्वपूर्ण कारण सामाजिक भेदभाव माना है।

लैंगिक भेदभाव (Gender Discrimination)

शिक्षाविदों तथा मनोवैज्ञानिकों ने लैंगिक भेदभाव के अपने अध्ययनों में महिला तथा पुरुषों की उपलब्धि की तुलना को अनुसंधान का विषय बनाया है। उन्होंने अपने मॉडल को दो भागों में विभाजित किया- महिला और पुरुष।

मनोवैज्ञानिकों ने यह पाया कि जीवन के शुरुआती समय में लड़कियाँ लड़कों से अधिक तीव्र विकास करती हैं, उनमें भाषा का गुण तथा स्मरण शक्ति भी अधिक होती है, परंतु विकास प्रक्रिया के क्रम में जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है लड़के लड़कियों से आगे निकल जाते हैं और इसका कारण जानने की कोशिश मनोवैज्ञानिक समय-समय पर करते रहते हैं। इसका जो एक सबसे महत्त्वपूर्ण कारण समझ आता है– वह है लैंगिक भेदभाव।

व्यक्तित्व के संदर्भ में लैंगिक भेद

व्यक्तित्व की परिभाषा आईजैन्क (Eysenck) के अनुसार- "व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, स्वभाव, बुद्धि और शारीरिक बनावट का थोड़ा-बहुत ऐसा स्थायी और स्थिर संगठन है जो वातावरण के साथ उसके अपूर्व संयोजन का निर्धारण करता है।"

सबका व्यक्तित्व अलग-अलग होता है। मनुष्यों के व्यक्तित्व के गठन में जो अंतर होता है उसके कारण ही उनके आचरण, व्यवहार तथा विकास में भी अंतर आ जाता है। इन्हीं अंतरों के कारण ही मानव उपलब्धियाँ प्राप्त करने के लिये अपने आचरण के अनुरूप मार्ग खोजता है। अलग-अलग व्यक्तियों का स्वभाव अलग-अलग होता है। जैसे कुछ व्यक्ति आक्रामक होते हैं और कुछ विनम्र होते हैं। कुछ अंतर्मुखी होते हैं तथा कुछ बहिर्मुखी। उसके स्वभाव और आचरण के ये गुण उसके विकास तथा उपलब्धियों को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करते हैं। अध्यापक को बालक के अलग-अलग स्वभावों और आचरण को समझकर उसके व्यक्तित्व के विकास में मदद करनी चाहिये।

आयु के विषय में लैंगिक भेद

व्यक्तियों के विकास के अंतर का एक मुख्य कारण आयु भी होता है। आयु के विकास के साथ-साथ व्यक्तियों में कुछ स्पष्ट भेद दिखने लगते हैं। व्यक्तिगत रूप से ही नहीं वर्गगत या समूहगत रूप से भी ये भेद परिलक्षित होते हैं। ज्यों-ज्यों अवस्था का विकास होता है त्यों-त्यों व्यक्ति में वातावरण से उत्पन्न जटिल समस्याओं के समाधान निकालने की क्षमता भी विकसित होने लगती है। तथा व्यक्ति स्वत: ही वातावरण के अनुसार सामंजस्य स्थापित कर लेता है।

अवस्था के विकास के साथ-साथ बौद्धिक विकास भी होने लगता है। बालक-बालिका ज्यों ही शैशव को पार कर प्रौढ़ावस्था तक पहुँचने लगते हैं, उनका बौद्धिक विकास भी उसी के साथ-साथ विकसित होता चला जाता है। इसी प्रकार उनकी शारीरिक बनावट, तंत्रिका तंत्र, मस्तिष्क तथा कार्य करने की क्षमता आयु के साथ-साथ विकसित होते रहते हैं। जिस व्यक्ति की आयु जितनी अधिक होगी उसका अनुभव भी उतना अधिक होगा। जिससे उसके और उससे कम आयु के बालक में भेद स्पष्ट दिखाई देगा। यदि तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो प्रौढ़ावस्था की तुलना में बाल्यावस्था में विकास की दर अधिक होती है इसलिये बाल्यावस्था में यह भेद अधिक देखने को मिलता है।

अत: शिक्षक को शिक्षण के दौरान इस भेद को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य करना चाहिये।

जाति के संदर्भ में लैंगिक भेद

विभिन्न जातियों के समूह पर किये गए अध्ययन से ज्ञात होता है कि जातियों के मध्य उच्च-बौद्धिक मान्यता के क्षेत्रों, जैसे- तर्क, निर्णय कुशलता, एकाग्रचित्तता में अंतर स्पष्ट हुए हैं।

मिश्रित जातियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करना कठिन होता है। एक ही स्थान पर रहने वाली जातियों के बीच सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रभाव इतने समान होते हैं कि उनके बीच जाति संबंधित गुणों को अलग करना कठिन हो जाता है। इस तरह के जातीय समूह भेद का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करना जटिल कार्य है। किसी क्षेत्र विशेष के भौगोलिक वातावरण,

11 व्यक्तिगत विभिन्नताएँ (Individual Differences)

व्यक्तिगत विभिन्नता का अर्थ (Meaning of Individual Difference)

विभिन्नता प्रकृति का नियम है। इस दुनिया में कोई भी दो प्राणी पूरी तरह एक जैसे नहीं हो सकते, चाहे वे मनुष्य हों या कोई अन्य प्राणी। हो सकता कि कुछ लोग देखने में एक-जैसे हों, विशेषकर जुड़वा बच्चे इस श्रेणी में आते हैं, किंतु जुड़वा होने के बावजूद उनमें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं वैचारिक विभिन्नताएँ होती हैं। इस प्रकार अलग-अलग व्यक्तियों में पाई जाने वाली भिन्नता को ही व्यक्तिगत विभिन्नता कहा जाता है।

व्यक्तिगत विभिन्नता की परिभाषा (Definition of Individual Difference)

- **स्किनर के अनुसार :** व्यक्तित्व के वे सभी पहलू जिनका मूल्यांकन किया जा सकता है व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अंतर्गत आते हैं।
- **जेम्स ड्रेवर के अनुसार :** कोई व्यक्ति अपने समूह से शारीरिक एवं मानसिक तौर पर जो भिन्नता रखता है, उसे व्यक्तिगत विभिन्नता कहा जाता है।
- **टायलर के अनुसार :** शरीर के रंग-रूप, आकार-प्रकार, कार्य, गति, बुद्धि, ज्ञान, उपलब्धि, रुचि, अभिरुचि आदि लक्षणों में मौजूद भिन्नता को व्यक्तिगत विभिन्नता कहते हैं।
- **सी.वी. गुड के अनुसार :** "व्यक्तिगत विभिन्नता या विचलन किसी एक विशेषता या कई विशेषताओं से संबंधित होती है। इसमें वे विभिन्नताएँ होती हैं जो अपनी समग्रता में एक व्यक्ति को दूसरे से अलग करती हैं।"
- **वुडवर्थ और मार्क्विस के अनुसार:** "शारीरिक-मानसिक क्षमताएँ, ज्ञान, आदत, व्यक्तित्व और चरित्र लक्षण सभी मनोवैज्ञानिक विशेषताओं में व्यक्तिगत विभिन्नताएँ पाई जाती हैं।"

व्यक्तिगत विभिन्नताओं के आधार (The Basis of Individual Differences)

मनुष्य के अलावा सभी प्राणियों में केवल शारीरिक बनवाट एवं शारीरिक क्षमता के आधार पर विभिन्नताएँ पाई जाती हैं। लेकिन मनुष्य में व्यक्तिगत विभिन्नताओं के कई आधार होते हैं। अपनी पुस्तक 'साइकोलॉजी ऑफ ह्यूमन डिफरेंसेज' में टायलर ने लिखा है, "एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से अंतर एक सार्वभौमिक घटना जान पड़ती है।" यह अंतर प्राकृतिक होती है क्योंकि व्यक्ति का जन्म ही अंतरों के साथ होता है। व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अंतर का आधार भाषा, जाति, लिंग, समुदाय, धर्म आदि की विविधता हो सकती है।

मनोवैज्ञानिक ने व्यक्तिगत विभिन्नताओं को निम्नलिखित आधार पर वर्गीकृत किया है-

- **जाति के आधार पर :** समाज में जाति एवं नस्ल संबंधित विभिन्नताएँ पाई जाती हैं। विभिन्न जातियों के रहन-सहन, खान-पान तथा उनकी संस्कृति आदि में अंतर होता है। कोई जाति विद्या अर्जन के लिये प्रसिद्ध होती है तो किसी को युद्ध लड़ने के लिये जाना जाता है। प्राचीन काल में जाति को काम के आधार पर बाँटा गया था जबकि आजकल जाति के आधार पर काम को बाँटा जाता है। जातिगत भेद को दूर करने के लिये व्यक्ति अपने पूर्वाग्रहों, रूढ़ियों, पूर्वधारणाओं तथा जातियों के प्रति नकारात्मक मनोवृत्तियों का त्याग करना पड़ेगा।
- **धर्म के आधार पर :** धर्म एवं समाज दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। धर्म व्यक्ति के नैतिक मूल्यों एवं आचरण को निर्धारित करता है। संसार में अनेक धर्म हैं जिनके रहन-सहन, खान-पान, आचार-व्यवहार तथा उनकी मान्यताओं में अंतर होता है। यही अंतर व्यक्ति की भिन्नता को दर्शाता है। धर्मों में विविधता होते हुए भी संसार का प्रयेक धर्म प्रेम, बंधुत्व, मानवता एवं सहिष्णुता आदि ही सिखाता है।
- **अभिवृत्ति के आधार पर :** किसी भी दो व्यक्ति की अभिवृत्ति एक समान नहीं हो सकती। प्रत्येक व्यक्ति की अभिवृत्ति एवं रुचि अलग-अलग होती है। किसी को खेलना पसंद होता है तो किसी को किताबें पढ़ना तथा किसी को संगीत सुनना। अभिवृत्ति के आधार पर भी व्यक्ति में विभिन्नता पाई जाती है।
- **भाषा के आधार पर :** प्रत्येक भाषा समुदाय की अपनी पहचान होती है चाहे वह अंचल के आधार पर हो अथवा राष्ट्र के आधार पर। इस प्रकार दो भिन्न भाषाओं से जुड़े व्यक्तियों में विभिन्नताएँ स्पष्ट हो जाती हैं। भाषा का व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है।
- **लिंग के आधार पर :** मानव समाज के विकास के साथ धीरे-धीरे पुरुषों का वर्चस्व बढ़ता गया और स्त्रियाँ पिछड़ती गईं। आज किसी-न-किसी रूप में विश्व के प्रत्येक देश या क्षेत्र में नारियों को दोयम दर्जे पर रखा जाता है, जो न सिर्फ रूढ़िवादिता के कारण है बल्कि अमानवीय भी है। आज के वैज्ञानिक युग में प्रत्येक मानव का दायित्व है कि वह इस व्यक्तिगत भिन्नता को अपनी सोच से दूर करे तभी हम सफल कहे जा सकते हैं।
- **समुदाय के आधार पर :** आज पूरी दुनिया छोटे-छोटे और बड़े-बड़े कितने ही समुदायों में विभक्त है। पश्चिमी देशों के लोग स्वयं को पूर्वी लोगों की तुलना में श्रेष्ठ मानते हैं। भारत की बात करें तो यहाँ अभी भी आदिवासी समुदाय के लोग काफी पिछड़े हैं और देश के अन्य समुदाय के लोगों से कई स्तरों पर भिन्नताएँ रखते हैं। हालाँकि सरकारी और सामाजिक स्तर पर इस भेद को पाटने की कोशिश की जा रही है।

व्यक्तिगत विभिन्नताओं के प्रकार (Types of Individual Difference)

स्किनर ने व्यक्तिगत विभिन्नता के अंतर्गत तीन लक्षणों को शामिल किया है-

12 अभिरुचि एवं अभिक्षमता (Interest and Aptitude)

अभिरुचि (Interest)

'अभिरुचि' शब्द का प्रयोग प्राय: संकुचित अर्थों में किया जाता है। लोग रुचिकर को मनोरंजक का पर्याय समझ लेते हैं। यह ठीक है कि जिस वस्तु में हमारी अभिरुचि है, वह हमें अच्छी लगती है किंतु यह आवश्यक नहीं है कि जिस वस्तु में हम अभिरुचि ले रहे हैं वह हमारे लिये मनोरंजक भी हो। उदाहरणार्थ अपने किसी संबंधी या दोस्तों के बीमार पड़ जाने पर हम उसमें अभिरुचि लेते हैं और उसका हाल जानना चाहते हैं। यहाँ अभिरुचि लेने में मनोरंजन से कोई संबंध नहीं है। इस प्रकार 'अभिरुचि' शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया जाना चाहिये। मनोविज्ञान और शिक्षा में रुचि शब्द के स्थान पर अभिरुचि का प्रयोग किया जाता है।

रुचि शब्द अंग्रेज़ी भाषा के Interest का हिंदी रूपांतरण है। Interest शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के Interesse शब्द से हुई है। इसका तात्पर्य है- अंतर स्थापित करना, महत्त्वपूर्ण होना तथा लगाव होना। अत: शब्दार्थ के आधार पर हम कह सकते हैं- अभिरुचि के द्वारा उद्दीपक में भिन्नता, महत्ता और लगाव स्थापित किया जाता है।

अभिरुचि की परिभाषाएँ

ड्रेवर एवं वालरस्टीन (Drever and Wallerstein) के अनुसार- "अभिरुचि पद का प्रयोग सामान्यत: दो अर्थों में होता है-कार्यात्मक अर्थ तथा संरचनात्मक अर्थ। कार्यात्मक अर्थ में अभिरुचि का तात्पर्य एक ऐसे भाव की अनुभूति से होता है (जिसे एक सार्थक अनुभूति कहा जाता है) जो किसी वस्तु पर दिये जाने वाले ध्यान या कोई किये जाने वाले कार्य से संबंधित होता है।"

- **रिली (Reilly)** के अनुसार- "अभिरुचि बच्चों में एक प्रेरणात्मक बल के रूप में कार्य करता है, जिसके परिणामस्वरूप वह किसी वस्तु को अन्य वस्तुओं से अलग करके उस पर विशेष ध्यान देता है"।
- **बिंघम (Bingham)** के अनुसार- "अभिरुचि व्यक्ति के व्यवहार के उन विशिष्ट गुणों की ओर संकेत करती है जो यह बताते हैं कि वह व्यक्ति विशिष्ट प्रकार की समस्याओं का किस प्रकार सामना करेगा और उन्हें कैसे हल करेगा।"
- **स्ट्रॉन्ग** के अनुसार- "प्रयोगात्मक रूप से अभिरुचि पसंद की अनुक्रिया है तथा घृणा नापसंद की अनुक्रिया है।"
- **मैक्डूगल** के अनुसार- "अभिरुचि गुप्त अवधान है और अवधान अभिरुचि का क्रियात्मक पक्ष है।"
- **जे. वाल्टर** के अनुसार- "अभिरुचि किसी वस्तु के प्रति केवल चाहना मात्र नहीं है। यह वह है जिसे व्यक्ति किसी दूसरी वस्तुओं की तुलना में अधिक पसंद करता है।"
- **बी.एन. झा** के अनुसार- "अभिरुचि वह स्थिर मानसिक विधि है, जो ध्यान क्रिया को सतत बनाए रखती है।"
- **क्रो एवं क्रो** के अनुसार- "अभिरुचि किसी क्रिया का कारण भी हो सकती है और उस क्रिया में भाग लेने का परिणाम भी हो सकती है अथवा अभिरुचि एक प्रेरक शक्ति है जो किसी व्यक्ति, वस्तु या क्रिया के प्रति लगाव पैदा करती है।"
- **रूमेल, रेमर्स और गेज** ने अभिरुचि की परिभाषा में लिखा है- "अभिरुचियाँ सुखद व दुखद, पसंद व नापसंद की भावना के व्यवहार के आकर्षण तथा विकर्षण की प्रतिच्छाया के रूप में होती हैं।"
- **ड्रेवर** के अनुसार- "अभिरुचि अपने क्रियात्मक रूप में एक मानसिक संस्कार है।"
- **ट्रैक्सलर (Traxler)** के अनुसार- "अभिरुचि व्यक्ति की एक स्थिति है, एक गुण या गुणों का समूह है। जो उस संभव सीमा की ओर संकेत करता है जहाँ तक वह व्यक्ति उचित प्रशिक्षण द्वारा किसी ज्ञान, कुशलता या ज्ञान-समूह को प्राप्त करता है। जैसे- कला, संगीत संबंधी योग्यता, मशीन संबंधी योग्यता, गणित संबंधी योग्यता, किसी विदेशी भाषा को पढ़ने या बोलने की योग्यता आदि।"
- **फ्रीमेन (Freeman)** के अनुसार- "अभिरुचि कुछ विशेषताओं का मिश्रण है जो प्रशिक्षण द्वारा कुछ विशिष्ट ज्ञान, कौशल या संगीत अनुक्रियाओं के समूह को प्राप्त करने की व्यक्ति की योग्यता की ओर संकेत करता है, जैसे- भाषा बोलने की योग्यता, संगीतकार बनने की योग्यता, मशीनी काम करने की योग्यता आदि।"

परिभाषाओं के आधार पर अभिरुचियों की निम्नलिखित विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं।

- अभिरुचि व्यक्तित्व का एक अंग है।
- योग्यताओं से इसका संबंध होता है।
- वृद्धि के साथ अभिरुचियों में विविधता समाप्त हो जाती है।
- अभिरुचियाँ वंशानुक्रम और वातावरण से प्रभावित होती हैं।
- अभिरुचि व्यवहार का एक पहलू है।
- अभिरुचि वैयक्तिक क्षमता से संबंधित होती है।
- अभिरुचियाँ परिवर्तनशील होती हैं।
- अभिरुचियाँ व्यक्ति एवं उसके पर्यावरण की अंत:क्रिया के फलस्वरूप विकसित होती हैं।
- अभिरुचियाँ सामाजिक एवं आर्थिक स्तर से प्रभावित होती हैं।
- अभिरुचियों के निर्धारण में प्रेरकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।
- अभिरुचियों का निर्धारण व्यक्तित्व के विकास से होता है।
- अभिरुचियों पर यौन कारकों का प्रभाव पड़ता है।

13 स्मृति और विस्मृति (Memory and Forgetting)

स्मृति की परिभाषाएँ (Definitions of Memory)

विभिन्न विद्वानों के अनुसार स्मृति की परिभाषा–

- **वुडवर्थ (Woodworth)** के अनुसार- "जो बात पहले सीखी जा चुकी है, उसे स्मरण रखना ही स्मृति है।" अथवा "स्मृति सीखी हुई वस्तु का सीधा उपयोग है।"
- **मैक्डूगल (McDougall)** के अनुसार- "स्मृति से तात्पर्य है अतीत की घटनाओं के अनुभव की कल्पना करना और इस तथ्य को पहचान लेना कि ये अतीतकालीन अनुभव हैं।"
- **रायबर्न (Ryburn)** के अनुसार- "अपने अनुभवों को संचित रखने और उनको प्राप्त करने के कुछ समय बाद चेतना के क्षेत्र में पुन: लाने की जो शक्ति होती है, उसी को स्मृति कहते हैं।"
- **टी.पी. नन (T.P. Nunn)** के अनुसार- "हमारे अनुभवों को संचित करके रखने वाली शक्ति जब चेतना से युक्त होती है तब हम उसे स्मृति कहते हैं।"
- **जेम्स (James)** के अनुसार- "स्मृति उस घटना या तथ्य का ज्ञान है, जिसके बारे में हमने कुछ समय तक नहीं सोचा है, पर जिसके बारे में हमको यह चेतना है कि हम उसका पहले विचार या अनुभव कर चुके हैं।"
- **हिलगार्ड (Hilgard)** के अनुसार- "स्मृति वह मानसिक प्रक्रिया है जिसमें अतीत में सीखे गए ज्ञान, अनुभव या कौशल का पुन:स्मरण किया जाता है।"

उपर्युक्त परिभाषा के आधार पर हम कह सकते हैं कि स्मृति एक मानसिक क्रिया है। इसका आधार हमारे दैनिक जीवन में अर्जित अनुभव से है। इसका पुनरुत्पादन परिस्थिति जन्य होता है। जैसे हमारे मोबाइल की मेमोरी में बहुत सारे गाने और फोटो होते हैं, लेकिन हम अपने मूड के हिसाब से उसमें से गाने चुनके सुनते हैं या फोटो देखते हैं। वैसे ही मानव मस्तिष्क भी परिस्थिति और ज़रूरत के हिसाब से स्मृति को बाहर निकालती है।

स्मृति के प्रकार

स्मृति व्यक्ति के किसी पूर्व अनुभव का स्मरण कराती है। इसका अभिप्राय हुआ कि अलग-अलग अनुभव के लिये अलग-अलग स्मृति होती है।

स्टाउट (Stout) के अनुसार, "केवल नामों के लिये पृथक स्मृति नहीं होनी चाहिये बल्कि प्रत्येक विशिष्ट नाम के लिये भी अलग स्मृति होनी चाहिये"

इस परिभाषा का अभिप्राय हुआ कि स्मृतियों के अनेक प्रकार होते हैं। किसी मामले में अच्छी स्मृति तो किसी मामले में खराब हो सकती है। स्मृतियों के अनेक प्रकार होते हैं जो निम्नलिखित हैं-

संवेदी स्मृति (Sensory Memory)

कोई भी नई स्मृति पहले संवेदी स्मृति में आती है। संवेदी स्मृति की संचयन क्षमता तो अधिक होती है लेकिन इन सूचनाओं को व्यक्ति अपनी स्मृति में एक सेकेंड या उससे भी कम समय के लिये रख पाता है। इस स्मृति में प्राप्त सूचनाओं को उनके मौलिक रूप में अर्थात उसमें बिना किसी तरह के फेर-बदल के रखा जाता है। संवेदी स्मृति को क्षणभंगुर स्मृति के रूप में भी जाना जाता है। संवेदी स्मृति को संवेदी संचयन या संवेदी रजिस्टर भी कहा जाता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार पाँच प्रकार की संवेदी स्मृतियाँ होती हैं– दृश्य संवेदी स्मृति, श्रवण संवेदी स्मृति, घ्राण (गंध) संवेदी स्मृति, स्वाद संवेदी स्मृति और स्पर्श संवेदी स्मृति। संवेदी स्मृति पर क्लासिक प्रयोगों के संचालन का श्रेय जॉर्ज स्पर्लिंग (1960) को दिया जाता है।

अल्पकालिक स्मृति (Short-term Memory or STM)

विलियम जेम्स द्वारा इसे प्राथमिक स्मृति नाम दिया गया है। मनुष्य अपनी आम ज़िंदगी में पूरे दिन में तरह-तरह की सूचनाओं को सुनता है या देखता है परंतु उनमे से बहुत कम सूचनाओं को ग्रहण कर पाता है। जिन सूचनाओं पर मनुष्य ध्यान देता है वे मनुष्य के द्वितीय स्मृति भंडार में प्रवेश करती हैं, जिसे अल्पकालिक स्मृति कहा जाता है। अल्पकालिक स्मृति में किसी विषय या घटना को अधिक-से-अधिक 20-30 सेकेंड तक धारित करके रखा जा सकता है तथा इसमें सीखने की मात्रा भी कम होती है। एटकींसन एवं शिफ्रिन के अनुसार अल्पकालिक स्मृति में सूचना का कूट संकेतन मुख्य रूप से ध्वन्यात्मक होता है। यदि इनका निरंतर अभ्यास न किया जाए तो 30 सेकेंड से कम समय में ही ये सूचनाएँ अल्पकालिक स्मृति से बाहर चली जाती हैं। मैन्युअल रूप से फोन नंबर डायल करना या श्रुतलेख जैसे कार्य इसमें शामिल हैं। हाल के वर्षों में मनोवैज्ञानिकों ने सुझाया है कि अल्पकालिक स्मृति ऐकिक नहीं होती है, बल्कि इसमें बहुत से घटक हो सकते हैं। अल्पकालिक स्मृति का यह बहु-घटकीय दृष्टिकोण सबसे पहले बैडले ने 1986 में प्रस्तावित किया था।

दीर्घकालिक स्मृति (Long-term Memory–LTM)

विलियम जेम्स ने इसे गौण स्मृति (Secondary Memory SM) भी कहा है। इस स्मृति में व्यक्ति किसी पाठ, घटना आदि को कम-से-कम 30 सेकेंड तक याद किये रहता है तथा अधिक-से-अधिक दिनों तक याद रखने की कोई सीमा नहीं होती। ऐसी सामग्रियाँ, जो अल्पकालिक स्मृति की क्षमता एवं धारण अवधि की सीमाओं को पार कर जाती है,

14 शारीरिक, मानसिक एवं क्रियात्मक विकास (Physical, Mental and Functional Development)

बाल विकास का अर्थ (Meaning of Child Development)

विकास का अर्थ केवल शरीर के बड़े होने या उम्र के बड़े होने से नहीं है। विकास परिपक्वता की ओर बढ़ने का निश्चित क्रम है। यह एक निरंतर बढ़ने वाली शृंखला है। विकास जैविक, संज्ञानात्मक तथा समाज-सांवेगिक प्रक्रियाओं की परस्पर क्रिया से प्रभावित होता है। क्रम-विकास की उत्पत्ति लैटिन शब्द इवोल्वेयर (Evolvere) से हुई है जिसका अर्थ संस्कृत शब्द 'विकास' से जुड़ा हुआ है। क्रम विकास की अवधारणा को किसी सजीव प्राणी यानी पेड़-पौधे, जीव-जंतु आदि की आंतरिक वृद्धि के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। उदाहरण के लिये बीज पहले पौध के रूप में विकसित होता है, इसके बाद पौधा फिर पेड़ में विकसित होता है। उसके बाद उसमें परिपक्वता आती है और फिर वृद्ध होने की प्रक्रिया शुरू होती है।

दूसरी ओर प्रगति की धारणा का प्रयोग 'आगे बढ़ने' के अर्थ में किया जाता है। संस्कृत भाषा में प्रगति के लिये प्रगत शब्द का प्रयोग किया जाता है। अत: प्रगति का मूल अर्थ किसी वांछित लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ना या उन्नति करना है। विकास एक शारीरिक पक्ष है। इसके अंतर्गत गर्भावस्था से लेकर परिपक्वावस्था तक का अध्ययन किया जाता है।

हरलॉक (Hurlock) के अनुसार, "विकासात्मक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यंत जीवन के विभिन्न कालों में होने वाले परिवर्तनों पर विशेष ध्यान देते हुए मानव विकास का अध्ययन करता है। उनके अनुसार प्रारंभ में केवल स्कूल जाने से पहले की आयु के बच्चों के विकास में रुचि ली जाती थी। इसके बाद नवजात शिशु और जन्म से पहले की उसकी अवस्था पर भी ध्यान दिया जाने लगा।"

ए.वी. हरलॉक के अनुसार, "विकास का अर्थ प्रगतिशील परिवर्तनों का एक नियमित क्रमबद्ध एवं सुसंबद्ध प्रतिमान है।"

विकास के अंतर्गत जो परिवर्तन होते हैं उनकी दिशा अग्रगामी होती है। विकास द्वारा आए परिवर्तन व्यक्ति को पूर्व अवस्था से आगे आने वाली अवस्था की ओर अग्रसर करते हैं। जन्म के समय से जो शिशु अकेला होता है, विकास क्रम में वह हर प्रकार की क्रियाओं- उठने, बैठने, चलने, दौड़ने आदि में सक्षम हो जाता है। इसलिये हरलॉक ने 'विकास को परिवर्तन' कहा है।

हरलॉक के अनुसार, विकास एक क्रमिक प्रक्रिया है क्योंकि इसके अंतर्गत आने वाले सभी परिवर्तन क्रम से होते हैं। प्रत्येक परिवर्तन कोई निश्चित परिवर्तन के पहले या बाद में घटित होता है। उदाहरण के तौर पर, गति के विकास क्रम में बच्चे पहले रेंगना, खिसकना, बैठना और तब चलना आरंभ करते हैं।

गैसल के अनुसार, "विकास एक तरह का परिवर्तन है जिसमें बच्चों में नवीन विशषेताओं एवं क्षमताओं का प्रादुर्भाव होता है।"

स्टाट के अनुसार, "विकास समय के साथ होने वाला परिवर्तन है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका प्रेक्षण प्रतिफलों के अध्ययन द्वारा किया जाता है।"

शारीरिक विकास (Physical Development)

शारीरिक विकास का अर्थ

मानव शरीर के आंतरिक तथा बाह्य अवयवों में जन्म से लेकर मृत्यु तक परिवर्तन होता रहता है। परिवर्तनों की इस प्रक्रिया को शारीरिक वृद्धि या विकास का नाम दिया गया। शारीरिक वृद्धि से तात्पर्य शारीरिक आकार, शारीरिक अनुपात तथा तंत्रिकातंत्र आदि के समुचित विकास से है। मेरेडिथ (Meredith) तथा टैन्नर (Tanner) द्वारा किये गए अध्ययन से यह पता चला कि शारीरिक विकास की चार विभिन्न अवस्थाएँ होती हैं। जिनमें दो में शारीरिक विकास की गति मंद होती है तथा दो में शारीरिक विकास की गति तीव्र होती है। इस अध्ययन के अनुसार जन्म के प्रथम 6 महीनों तक शारीरिक विकास की गति काफी तीव्र होती है। जन्म के 7-8 महीने के बाद से शारीरिक विकास की गति मंद पड़ने लगती है तथा समान गति से करीब 12 वर्ष तक चलती रहती है। फिर 15 से 16 वर्ष की उम्र तक शारीरिक विकास की गति एक बार फिर तीव्र हो जाती है। इस अवस्था को मनोवैज्ञानिकों ने तारुण्य विकास लहर (Puberty growth spurt) नाम दिया है। इसके बाद पूर्ण परिपक्वता की अवस्था तक शारीरिक विकास की गति में मंदता आ जाती है और इस अंतिम अवस्था में मनुष्य का शारीरिक विकास जिस ऊँचाई तक पहुँच जाता है वह वृद्धावस्था तक बना रहता है। शारीरिक विकास परिवर्तन निम्नलिखित दिशाओं में देखने को मिलते हैं-

1. **बाह्य परिवर्तन:** इस प्रकार के परिवर्तनों में ऊँचाई, भार, शारीरिक अनुपात आदि ऊपरी दिखाई देने वाले सभी प्रकार के परिवर्तन शामिल होते हैं।
2. **आंतरिक परिवर्तन:** इसके अंतर्गत शरीर के सभी महत्त्वपूर्ण तंत्रों जैसे- स्नायु तंत्र, श्वसन तंत्र, पाचन तंत्र, रक्त तंत्र, आदि महत्त्वपूर्ण तंत्रों तथा विभिन्न ग्रंथियों की कार्यप्रणाली और क्षमता से संबंधित सभी प्रकार के परिवर्तन शामिल होते हैं।

शैशवावस्था में शारीरिक विकास

- **भार (Weight):** जन्म के समय तथा पूरे शैशव के दौरान लड़कों का भार लड़कियों की अपेक्षा ज़्यादा रहता है। जन्म के समय लड़कों का भार लगभग 7.15 पौंड तथा लड़कियों का भार लगभग 7.13

15 आकलन और मूल्यांकन (Assessment and Evaluation)

आकलन (Assessment)

वर्तमान समय में आकलन शब्द का महत्त्व बढ़ता जा रहा है, क्योंकि यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि जो सिखाया जाता है उसका आकलन विविध उपकरणों का प्रयोग करके किया जाता है। आकलन का यह प्रारूप सीखने और सिखाने के प्रारूप को प्रभावित करता है।

आँकना "assess" शब्द लैटिन भाषा के शब्द "assidere" से लिया गया है जिसका अर्थ है- 'साथ बैठना' (to sit with)। इसका तात्पर्य यह है कि यह कुछ इस प्रकार है जिसको हम विद्यार्थियों के साथ और विद्यार्थियों के लिये करते हैं। आकलन के महत्त्व को कम नहीं किया जा सकता है। उच्च गुणवत्ता का आकलन गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का केंद्र है और अधिगम के मानकों को बढ़ाने के लिये महत्त्वपूर्ण है। आकलन शिक्षक और शिक्षण दोनों के लिये महत्त्वपूर्ण है। यह अधिगम को समृद्ध करता है, शिक्षार्थियों की प्रेरणा को बढ़ाता है और साथ ही शिक्षकों को उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली विधियों/रणनीतियों पर चिंतन-मनन करने और यदि आवश्यक हो तो संशोधन करने में सक्षम बनाता है। फ्रीमैन और लेविस (1998) के अनुसार आकलन के पाँच मुख्य उद्देश्य हैं- चयन करना, प्रमाणित करना, वर्णन करना, अधिगम में सहायता करना और शिक्षण में सुधार करना, जो सार्वजनिक निर्णय और व्यक्तिगत विकास को एक संतुलन देते हैं।

सामान्य शब्दों में आकलन का आशय है- सूचनाओं को एकत्रित करने की प्रक्रिया। विद्यार्थियों के संदर्भ में किसी विषय के बारे में निर्णय प्रदान करना आकलन (Assessment) कहलाता है। आकलन की प्रक्रिया में प्रदत्त कार्य परीक्षण का प्रयोग किया जा सकता है। इसमें छात्रों को बिना अंक अथवा ग्रेडिंग के फीडबैक दिया जाता है ताकि शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में अंतिम मूल्यांकन के पूर्व सुधार संभव हो सके।

आकलन की परिभाषाएँ *(Definitions of Assessment)*

हुबा एवं फ्रीड के अनुसार- "आकलन सूचना संग्रहण तथा उस पर विचार-विमर्श की प्रक्रिया है, जिन्हें हम विभिन्न माध्यमों से प्राप्त कर यह समझा सकते हैं कि विद्यार्थी क्या जानता है, क्या समझता है और अपने शैक्षिक अनुभवों से प्राप्त ज्ञान को परिणाम के रूप में व्यक्त कर सकता है या नहीं। यह समझने में मदद करता है कि बच्चे क्या जानते हैं और क्या जान सकते हैं। इसके द्वारा छात्र अधिगम में वृद्धि होती है।"

इरविन के अनुसार- "आकलन छात्रों के अधिगम एवं विकास के व्यवस्थित आधार का अनुमान है। यह चयन, रचना, संग्रहण, विश्लेषण, व्याख्या तथा सूचनाओं का उपयुक्त प्रयोग कर छात्र विकास और अधिगम को बढ़ाने की प्रक्रिया है।"

आकलन अभ्यास के लाभ

आकलन अभ्यास के कुछ निम्नलिखित लाभ हैं:

- यह विद्यार्थियों के अधिगम से संबंधित विस्तृत एवं गहन आँकड़ा प्रदान करता है।
- यह समझने में मदद करता है कि बच्चे क्या जानते हैं और क्या जान सकते हैं।
- यह विद्यार्थियों की प्रबलताओं और दुर्बलताओं की पहचान करके उनके अधिगम को समझने के लिये एक लेंस के रूप में कार्य करता है।
- यह शिक्षकों, माता-पिता और परिवार के सदस्यों को एक बच्चे की वृद्धि और विकास के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।
- विद्यार्थियों की आवश्यकताओं का निर्धारण करता है ताकि उनको उससे संबंधित अतिरिक्त सहायता प्रदान की जा सके।
- विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के आधार पर उनके लिये निर्दिष्ट विशिष्ट रणनीति की योजना बनाने में शिक्षकों की मदद करता है।
- अधिगम के परिणामों में सुधार करने और अधिगम को बढ़ावा देने में योगदान करता है।
- एक कार्यक्रम की प्रबलताओं और दुर्बलताओं को पहचान करने में मदद करता है।
- इसके माध्यम से शिक्षकों को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को संशोधित करने और शैक्षणिक दृष्टिकोण में सुधार करने के लिये प्राप्त जानकारी का उपयोग करने की सुविधा होती है।
- विद्यार्थी का समर्थन करने के लिये माता-पिता, शिक्षकों और शिक्षकों के बीच सहयोग की सुविधा होती है।

अत: यह कहा जा सकता है कि आकलन का उद्देश्य छात्र के सीखने के बारे में मान्य, विश्वसनीय और उपयोगी जानकारी एकत्र करना है, जिसका उपयोग अधिगम के परिणामों के संबंध में विद्यार्थी की प्रगति और उपलब्धि की निगरानी के लिये किया जा सकता है। इसका उपयोग विद्यार्थियों को निर्धारित लक्ष्यों तक पहुँचने के लिये उचित उपाय करने के लिये भी किया जाता है।

आकलन के प्रकार

आकलन के प्रकार को निम्नलिखित रूप से वर्गीकृत किया जा सकता है–

- रचनात्मक और संकलनात्मक आकलन
- औपचारिक और अनौपचारिक आकलन
- गुणात्मक और मात्रात्मक आकलन
- प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष आकलन

16 उपलब्धियों का मूल्यांकन और प्रश्नों का निर्माण (Evaluation of Achievements and Formation of Questions)

उपलब्धि परीक्षण (Achievement Test)

उपलब्धि परीक्षण स्कूल से विषय संबंधी अर्जित ज्ञान का परीक्षण है। इस परीक्षण से शिक्षक यह ज्ञात कर सकता है कि विद्यार्थी ने कितनी उन्नति की है, विद्यार्थी ने किस सीमा तक विषय संबंधी ज्ञान प्राप्त किया है।

उपलब्धि परीक्षण के अर्थ और भाव को और अधिक स्पष्ट करने के लिये विभिन्न विद्वानों द्वारा परिभाषाएँ प्रस्तुत की गई हैं, जिनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं-

- **इबेल:** "उपलब्धि परीक्षण वह है जो छात्र द्वारा ग्रहण किये हुए ज्ञान का अथवा किसी कौशल में निपुणता का मापन करता है।"
- **गैरीसन तथा अन्य:** "उपलब्धि परीक्षण, बालक की वर्तमान योग्यता या किसी विशिष्ट विषय के क्षेत्र में उसके ज्ञान की सीमा का मापन करता है।"
- **फ्रीमैन:** "शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण वह परीक्षण है जो किसी विशेष विषय अथवा पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, समझ और कुशलताओं का मापन करता है।"
- **थॉर्नडाइक और हेगन:** "जब हम संप्राप्ति परीक्षण को प्रयोग करते हैं, तब हम इस बात का निश्चय करना चाहते हैं कि एक विशिष्ट प्रकार की शिक्षा प्राप्त कर लेने के उपरांत व्यक्ति ने क्या सीखा है?"
- **प्रेसी, रॉबिनस और होरोक:** "संप्राप्ति परीक्षाओं का निर्माण मुख्य रूप से विद्यार्थियों के सीखने के स्वरूप और सीमा का मापन करने के लिये किया जाता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि उपलब्धि परीक्षण वे हैं, जिनकी सहायता से स्कूल में पढ़ाए जाने वाले विषयों और सिखाए जाने वाले कौशलों में विद्यार्थियों की सफलता अथवा उपलब्धि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

उपलब्धि परीक्षण का महत्त्व (Importance of Achievement Test)

शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में उपलब्धि परीक्षणों को एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इनका प्रयोग अनेक कार्यों के लिये किया जाता है।

थॉर्नडाइक और हेगन ने स्कूल की दृष्टि से उपलब्धि परीक्षण के महत्त्व का प्रतिपादन निम्नलिखित शब्दों में किया है-

- **विद्यार्थियों का वर्गीकरण:** उपलब्धि परीक्षणों से विद्यार्थियों को जो अंक प्राप्त होते हैं, उससे उनके मानसिक और बौद्धिक स्तर का ज्ञान हो सकता है। इसलिये उनके मानसिक स्तर के अनुसार उनका वर्गीकरण किया जा सकता है।
- **विद्यार्थियों की कठिनाइयों का निदान:** इन परीक्षाओं द्वारा विद्यार्थियों की कठिनाइयों का पता चल जाता है। कठिनाई जान लेने पर उसके निवारण के उपाय किये जा सकते हैं। इस दृष्टि से विद्यार्थियों की प्रगति में योगदान किया जा सकता है।
- **विद्यार्थियों को प्रेरणा:** अनुभव से पता चलता है कि विद्यार्थियों को प्रेरणा देने में भी इन परीक्षाओं को सफलता मिली है। जब विद्यार्थियों को इस बात का पता चलता है कि उनके अर्जित ज्ञान की जाँच हो रही है, तो उन्हें प्रेरणा मिलती है।
- **व्यक्तिगत सहायता:** उपलब्धि परीक्षणों के द्वारा सरलता से मंदबुद्धि, कुशाग्र बुद्धि तथा विशेष योग्यता वाले विद्यार्थियों को पता लगाकर उनकी आवश्यकताओं के अनुसार उनकी सहायता की जा सकती है।
- **शिक्षा-निर्देशन:** इस परीक्षण के आधार पर विद्यार्थियों ने जो अंक प्राप्त किये हैं तथा उनके पूर्व के और अभी के अंकों को देखकर उन्हें समुचित निर्देशन दिया जा सकता है कि उन्हें कौन-से विषय लेने चाहिये आदि।
- **विद्यार्थियों को परामर्श:** उपलब्धि परीक्षाओं से हमें पता चलता है कि विद्यार्थियों की रुचियाँ क्या हैं? उनकी अभियोग्यताएँ और कार्य-क्षमताएँ क्या हैं? इसके आधार पर उन्हें आगामी अध्ययन के लिये परामर्श दिया जा सकता है।

लिण्डक्विस्ट तथा मन ने उपलब्धि परीक्षणों के निम्नलिखित प्रयोगों की चर्चा की है-

- **अध्ययन हेतु प्रोत्साहित करना:** उपलब्धि परीक्षण विद्यार्थियों को अध्ययन हेतु प्रोत्साहन एवं प्रलोभन प्रदान करता है। एक प्रकार से परीक्षाएँ विद्यार्थियों को प्रेरणा भी प्रदान करती हैं।
- **शिक्षण विधि में सुधार:** शिक्षक तथा विद्यार्थी दोनों ही परीक्षा परिणामों के आधार पर शिक्षण विधि की सफलता की मात्रा जान सकते हैं और आवश्यक होने पर उसमें सुधार के प्रयत्न कर सकते हैं। परीक्षा की उत्तर-पुस्तिकाओं के आधार पर अध्यापक अपने द्वारा अपनाई गई शिक्षण विधि की सफलताओं का ज्ञान कर सकता है।
- **मान्यता प्रदान करने में सहायक:** परीक्षा परिणामों के आधार पर कहीं-कहीं विद्यालय को मान्यता प्रदान की जाती है और इन्हीं के आधार पर उनके लिये अनुदान की मात्रा निर्धारित की जाती है।
- **शिक्षण में सुधार:** प्रतिवर्ष परीक्षाओं के लिये शिक्षक को परीक्षा के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन करना पड़ता है, परिणामस्वरूप अध्यापक के ज्ञान में वृद्धि होती जाती है। अपने वर्द्धित ज्ञान के आधार पर अध्यापक सहज ही शिक्षण में सुधार कर लेता है।

खंड II

समावेशी शिक्षा का सिद्धांत

समावेशी शिक्षा का सिद्धांत (महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स)

- कमज़ोर एवं वंचित वर्गों सहित विविध पृष्ठभूमि के शिक्षार्थियों की ज़रूरतों को संबोधित करना
- सीखने की कठिनाइयों, शारीरिक/मानसिक दोष आदि से पीड़ित बच्चों की ज़रूरतों को पूरा करना
- प्रतिभाशाली, रचनात्मक, विशेष रूप से दिव्यांग शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करना

17 समावेशी शिक्षा का सिद्धांत (Principle of Inclusive Education)

समावेशी शिक्षा (Inclusive Education)

समावेशी शिक्षा के अंतर्गत शारीरिक, मानसिक रूप से भिन्न बच्चे सामान्य बच्चों के साथ एक ही विद्यालय की एक ही कक्षा में शिक्षा ग्रहण करते हैं।

- समावेशी शिक्षा में एकीकृत शिक्षा वाले विद्यालयों से बेहतर सुख-सुविधाएँ एवं वातावरण उपलब्ध कराया जाता है। बेहतर सुख-सुविधाओं का अर्थ है- उन्नत पाठ्यक्रम, विद्यालयों में बुनियादी ढाँचे, विशेष शिक्षा, चिकित्सक, मनोवैज्ञानिक आदि की व्यवस्था।
- समावेशी शिक्षा को लाभदायक बनाने के लिये एक विशेष प्रकार का पाठ्यक्रम बनाया जाता है। यह पाठ्यक्रम इस प्रकार से बनाया जाता है कि सामान्य से भिन्न बच्चों को तो लाभ मिले ही साथ ही सामान्य बच्चों का भी कोई नुकसान न हो तथा विद्यालय का वातावरण भी ऐसा बनाया जाता है कि विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे खुद को सामान्य बच्चों से कम न समझें।
- ऐसा वातावरण प्रदान करने के लिये विशेष प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों, चिकित्सकों, मनोवैज्ञानिकों की व्यवस्था की जाती है। विशिष्ट बच्चों में शारीरिक रूप से अपंग बच्चों की आवश्यकताओं का ध्यान रखकर विद्यालय भवन की बनावट व भौतिक ढाँचा तैयार किया जाता है।

समावेशी शिक्षा की विशेषताएँ
(Features of Inclusive Education)

- समावेशी शिक्षा से विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों में सामान्य बच्चों के समान मानसिक विकास होता है।
- समावेशी शिक्षा खर्चीली है क्योंकि इसमें विशिष्ट बच्चों के लिये उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप मानवीय व भौतिक संसाधनों की व्यवस्था करनी होती है।
- यह शैक्षिक एकीकरण को सुनिश्चित करती है। इसमें शिक्षा के अधिकार का अनुपालन है।
- यह व्यवस्था जाति और धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं करती, साथ ही सामाजिक एकीकरण को भी सुनिश्चित करती है।
- यह शिक्षा भारतीय संविधान में समानता के सिद्धांत का अनुपालन करती है। अर्थात् समन्वित शिक्षा द्वारा विशिष्ट बच्चों को भी सामान्य बच्चों के समान ही शिक्षा सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं।
- समावेशी शिक्षा में सभी सामान्य व विशेष बच्चे एक-दूसरे के नज़दीक आते हैं। इससे विद्यालय में व्यावहारिक व स्वस्थ वातावरण का निर्माण होता है।
- समावेशी शिक्षा द्वारा विशिष्ट बच्चों में सामान्य बच्चों के समान जीवन जीने का आत्मविश्वास उत्पन्न होता है।
- समावेशी शिक्षा सामान्य तथा विशिष्ट बच्चों में आपसी समायोजन स्थापित करती है।

समावेशी शिक्षा की परिभाषा
(Definition of Inclusive Education)

शिक्षा क्षेत्र के विभिन्न विद्वानों ने समावेशी शिक्षा की परिभाषा निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत की है-

प्रो. एस.के. दुबे के अनुसार, "शैक्षिक समावेशन एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जो विद्यार्थियों की योग्यता, क्षमता एवं स्थितियों के अनुरूप प्रयोग की जाती है।"

स्टीफन और ब्लैकहर्ट के अनुसार, "शिक्षा की मुख्य धारा का अर्थ बाधित बच्चों एवं बालिकाओं को सामान्य विद्यार्थियों के साथ एक ही कक्षा में शिक्षा की व्यवस्था करना है जिससे उनको सामान्य विद्यार्थियों की तरह ही आगे बढ़ने में मदद मिले और उन्हें हीन भावना का एहसास न हो कि वे दूसरे से कमतर हैं।"

स्टीफन तथा ब्लैकहर्ट के अनुसार, "शिक्षा की मुख्य धारा का अर्थ बाधित (पूर्ण रूप से अपंग नहीं) बच्चों की सामान्य कक्षाओं में शिक्षण व्यवस्था करना है। यह समान अवसर मनोवैज्ञानिक सोच पर आधारित है जो व्यक्तिगत योजना के द्वारा उपयुक्त सामाजिक मानकीकरण और अधिगम को बढ़ावा देती है।"

यूनेस्को के अनुसार, "समावेशी शिक्षा अधिगमकर्त्ताओं के गुणात्मक शिक्षा के मौलिक अधिकार पर आधारित है जो आधारभूत शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर जीवन को समृद्ध बनाती है। अतिसंवेदनशील एवं सीमांत समूहों को दृष्टिगत रखते हुए यह प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता का पूर्ण विकास करती है। समावेशी गुणात्मक शिक्षा का परम ध्येय सभी प्रकार के विभेदीकरण को समाप्त करके सामाजिक संगठन का पोषण करना है।"

माइकेल एफ. जियानग्रेको के अनुसार, "समावेशी शिक्षा से अभिप्राय उन मूल्यों, सिद्धांतों और प्रयासों के समूह से है जो सभी विद्यार्थियों को, चाहे वे विशिष्ट हों या नहीं, प्रभावकारी और सार्थक शिक्षा पर बल देते हैं।"

उमातुलि के अनुसार, "समावेशन एक प्रक्रिया है, जिसमें प्रत्येक विद्यालय को दैहिक, संवेगात्मक तथा सीखने की आवश्यकता को पूरा करने के लिये संसाधनों का विस्तार करना होता है।"

आर.के. शर्मा के अनुसार, "समावेशी शिक्षा एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जिसका उपयोग करके प्रतिभाशाली और शारीरिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों को एक साथ शिक्षा दी जाती है।"

18 विविध पृष्ठभूमि के वंचित बच्चे (Underprivileged Children of Various Background)

विविध पृष्ठभूमि से वंचित बच्चे

विभिन्नता प्रकृति का नियम है। इस दुनिया में कोई भी दो प्राणी पूरी तरह एक जैसे नहीं हो सकते, चाहे वे मनुष्य हों या अन्य कोई जीव। कुछ लोग शक्ल-सूरत से एकसमान हो सकते हैं, खासकर जुड़वाँ बच्चे, परंतु उनमें भी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और वैचारिक स्तर पर विभिन्नताएँ होती हैं। इस प्रकार अलग-अलग व्यक्तियों की अलग-अलग पृष्ठभूमि होती है। पृष्ठभूमि के हिसाब से उनके व्यक्तित्व का विकास होता है। कुछ बच्चे सामाजिक, आर्थिक और बौद्धिक रूप से पिछड़ जाते हैं, जिन्हें हम वंचित या पिछड़ा कहते हैं।

इस अध्याय में हम समाज के वंचित, मानसिक रूप से पिछड़े बच्चों तथा बाल अपराधी बच्चों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

वंचित बच्चे (Underprivileged Children)

वंचित एक विस्तृत अर्थों वाला शब्द है जिसका सामान्य अर्थ जीवन की मूलभूत सुविधाओं से दूर या अछूता रह जाना है। इस अर्थ में प्रत्येक व्यक्ति को एक वंचित व्यक्ति की संज्ञा दी जा सकती है; क्योंकि कुछ-न-कुछ असुविधाएँ हम सभी के जीवन में होती हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने वंचित की परिभाषा देते हुए कहा है, "सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से पिछड़े बच्चों को वंचित बच्चा कहा जाता है।" भारतीय परिप्रेक्ष्य में दलित एवं आदिवासी समुदाय से आने वाले बच्चों को वंचित बच्चों की श्रेणी में रखा जाता है। भारत में अनुसूचित जाती तथा अनुसूचित जनजाति समुदाय में 95% परिवार ऐसे हैं जो सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से पिछड़े हुए हैं।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि वंचित वर्ग के बच्चे वे बच्चे हैं जिन्हें सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक रूप से जुड़े आवश्यक एवं अपेक्षित सुविधाएँ नहीं मिलतीं जिसके परिणामस्वरूप उनका सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता है।

वंचित बच्चों के जीवन पर कुछ प्रमुख मनोवैज्ञानिकों ने अध्ययन किया जिनमें बर्नस्टीन (Bernstein), हेविंगहर्स्ट (Havinghurst), रौटर (Rotter), डी. सिन्हा (D. Sinha), बी.बी. चटर्जी (B.B. Chatterjee) तथा ए.के. सिंह (A.K. Singh) आदि हैं। इन्होंने वंचित बच्चों पर किये अपने अध्ययन के आधार पर वंचित बच्चों की निम्नलिखित विशेषताओं को बताया है-

- वंचित बच्चे समाज के निम्न आर्थिक स्तर वाले परिवार से आते हैं। अत: गरीबी एवं वंचन इनकी प्रमुख पहचान होती है।
- वंचित बच्चों का आत्म-संप्रत्यय नकारात्मक होता है। परिणामस्वरूप वे अपने-आप को अन्य बच्चों की तुलना में कमज़ोर एवं हीन समझने लगते हैं जिससे उनका आत्मविश्वास कम होने लगता है।
- वंचित बच्चों में अधिगम की अभिप्रेरणा कम होती है। इनमें किसी विषय को लेकर दूरदर्शिता में कमी पाई जाती है।
- वंचित बच्चों की भाषा सामान्य बच्चों की तुलना में कमज़ोर होती है। **बर्नस्टीन** के अनुसार "वंचित बच्चे प्राय: अधूरे, अस्पष्ट तथा अनौपचारिक भाषा का प्रयोग करते हैं।"
- वंचित बच्चों का बौद्धिक विकास भी बहुत धीरे-धीरे होता है। **डी. सिन्हा** तथा **बी.बी. चटर्जी** के अनुसार, "वंचित बच्चों का बौद्धिक स्तर सामान्य बच्चों के बौद्धिक स्तर की तुलना में कई कारणों से बहुत कम होता है। अत: उनका बौद्धिक निष्पादन भी काफी सीमित एवं अपर्याप्त होता है।"
- वंचित बच्चे पूर्वाग्रह एवं रूढ़ियों से ग्रस्त होते हैं।

वंचन का बच्चों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव

वंचन से बच्चों पर पड़ने वाले मनोवैज्ञानिक प्रभाव को मनोवैज्ञानिकों ने निम्नलिखित तीन भागों में बाँटा है-

- **संज्ञानात्मक पैटर्न पर प्रभाव (Impact upon Cognitive Patterns):** संज्ञान शब्द के अंतर्गत बच्चों के चिंतन, प्रत्यक्षण, बुद्धि, संवेदना, स्मृति आदि क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। **जे.पी. दास** एवं **टी.पी. पंडा** के अध्ययनों के अनुसार वंचन का बच्चों के संज्ञानात्मक पैटर्न पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है तथा निम्न जाती के बच्चों का बौद्धिक स्तर उच्च वर्ग के बच्चों के बौद्धिक स्तर के बहुत कम होता है। उसी प्रकार **एन. चट्टोपाध्याय** ने अपने अध्ययन के आधार पर यह बताया कि बुद्धि परीक्षण में (एलेक्जेंडर पास-अलोंग बुद्धि परीक्षण) जनजाति के बच्चों का प्रदर्शन सामान्य बच्चों की तुलना में काफी कम था। **हेविंगहर्स्ट (Havinghurst)** के अनुसार, "वंचित बच्चों में अन्य बच्चों की तुलना में अमूर्त चिंतन की क्षमता काफी कम होती है।"
- **अभिप्रेरणात्मक प्रारूप पर प्रभाव (Impact upon Motivational Patterns):** मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में यह पाया गया कि वंचित बच्चों का अभिप्रेरणात्मक प्रारूप सामान्य बच्चों के प्रारूप से सर्वथा भिन्न एवं निम्न होता है। **डी. सिन्हा, जी. मिश्रा** तथा **उदय पारीक** ने अपने-अपने अध्ययन में यह पाया कि वंचित एवं वंचन से बच्चों में उपलब्धि आवश्यकता कम हो जाती है तथा निर्भरता आवश्यकता अधिक हो जाती है। इसके अलावा **रथ (Rath)** ने अपने अध्ययन में पाया कि वंचित बच्चों पर वंचन का प्रभाव इतना अधिक होता है कि बच्चों के आकांक्षा-स्तर पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। वंचित बच्चों की सोच आय, पेशा तथा शिक्षा के बारे में निम्न स्तरीय होती है। जिससे वे बहुत कम शिक्षा पाकर तथा कम आय प्राप्त करके भी संतुष्ट हो जाते हैं।

19 प्रतिभाशाली, सृजनात्मक एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (Gifted, Creative and Special Needs Children)

प्रतिभाशाली बच्चे (Gifted Children)

- मनोवैज्ञानिकों के द्वारा प्रतिभाशाली बच्चों को ऐसे बच्चों के रूप में परिभाषित किया जाता है जो सामान्य बच्चों की तुलना में प्रत्येक क्षेत्र में आगे होते हैं, शारीरिक रूप से स्फूर्ति वाले एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अधिक उपलब्धि अर्जित करने वाले होते हैं।
- प्रारंभ में प्रतिभाशाली बच्चों की पहचान के लिये बौद्धिक क्षेत्र पर बल देते हुए मनोवैज्ञानिकों ने आईक्यू (IQ) को आधार बनाया था। 1916 में लुईस टर्मन ने संशोधित स्टैनफोर्ड बिनेट साइमन इंटेलिजेंस स्केल पर प्रतिभाशाली व्यक्ति के लिये निचली सीमा 110 पर निर्धारित की।
- प्रतिभाशाली बच्चों को आईक्यू के आधार पर तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है: उत्कृष्ट (100 से 120 के बीच IQ), बहुत उत्कृष्ट (120 और 140 के बीच IQ) और अत्यंत उत्कृष्ट (140 से अधिक IQ)
- आगे चलकर मनोवैज्ञानिकों ने यह अवधारणा रखी कि प्रतिभाशाली व्यक्ति का मात्र एक आधार बौद्धिक क्षेत्र नहीं है बल्कि यह विभिन्न क्षेत्रों की मानवीय क्षमताओं में भी व्याप्त है। गिलफोर्ड ने 120 से अधिक विभिन्न क्षमताओं की परिकल्पना की जो प्रतिभाशाली व्यक्ति का विभिन्न क्षेत्रों में एक या अधिक क्षमताओं के आधार पर वर्गीकरण करता है।
- रेनजुली ने प्रतिभाशाली बच्चों के लिये त्रि-वृत्त (वृत्तीय) अवधारणा प्रस्तुत की। इसमें मानवीय लक्षणों की तीन बुनियादी प्रतिभाओं को शामिल किया गया है- औसत मानसिक क्षमता से उच्च मानसिक क्षमता, कार्य प्रतिबद्धता का उच्च स्तर और रचनात्मकता का उच्च स्तर।

प्रतिभाशाली बच्चे की परिभाषा
(Definition of Gifted Child)

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों के द्वारा 'प्रतिभाशाली बच्चे' को परिभाषित करने के लिये प्रस्तुत की गई कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाओं का विवरण निम्नलिखित हैं-

- **रॉबर्ट जे. हैविगर्स्ट के अनुसार,** "प्रतिभामान या प्रतिभाशाली बच्चे वे होते हैं जो अपने किसी भी प्रयास में लगातार सार्थक एवं उल्लेखनीय प्रदर्शन करते हैं।"
- **क्रो एवं क्रो के अनुसार,** "प्रतिभाशाली बच्चे दो प्रकार के होते हैं। पहली श्रेणी में असाधारण बुद्धि वाले बच्चों को रखा जाता है जिनकी बुद्धि-लब्धि 130 से अधिक होती है। दूसरी श्रेणी में उन बच्चों को रखा जाता है जो कला, गणित, संगीत, अभिनय आदि जैसे किसी एक या अधिक क्षेत्रों में विशेष योग्यता रखते हैं।"
- **टरमन व ओडन के अनुसार,** "प्रतिभाशाली बच्चे शारीरिक गठन, सामाजिक समायोजन, व्यक्तित्व के लक्षणों, विद्यालय-उपलब्धि, खेल की सूचनाओं और रुचियों की विभिन्नता के संदर्भ में सामान्य बच्चों से बहुत श्रेष्ठ होते हैं।"

प्रतिभाशाली बच्चों की विशेषताएँ
(Characteristics of Gifted Children)

- पॉल विटी ने अल्प आयु के प्रतिभाशाली बच्चों को परिभाषित करने के लिये कुछ विशेष प्रतिभाओं को चिह्नित किया। उन्होंने विशेष प्रतिभा वाले बच्चों की पहचान के लिये 8 मानदंडों की पहचान की है।
- विभिन्न मनोवैज्ञानिकों के द्वारा प्रतिभाशाली बच्चों के कई गुण बताए गए हैं जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है-
  - **शारीरिक विशेषताएँ (Physical Characteristics):** प्रतिभाशाली बच्चों में सामान्य बच्चों की तुलना में शारीरिक विकास अच्छी तरह से एवं तीव्रता से होता है। उनमें शारीरिक दोष भी बहुत कम होते हैं एवं इनका स्वास्थ्य भी अच्छा होता है। प्रतिभाशाली बच्चों में ज्ञान इंद्रियाँ प्रखर होती हैं एवं वे सामान्य बच्चों की तुलना में जल्दी चलने और बोलने लगते हैं।
  - **संवेगात्मक विशेषताएँ (Emotional Characteristics):** प्रतिभाशाली बच्चे संवेगात्मक रूप से स्थिर और समायोजित होते हैं। ये सदैव प्रसन्न रहते हैं और ऐसे बच्चों का चरित्र एवं व्यक्तित्व सामान्य बच्चों से श्रेष्ठ होता है। ये धैर्यपूर्वक कठिनाइयों का सामना करते हैं और शीघ्रता से नई परिस्थितियों में अपना समायोजन स्थापित कर लेते हैं।
  - **सामाजिक विशेषताएँ (Social Characteristics):** प्रतिभाशाली बच्चों की प्रकृति हँसमुख, परिपक्व, मिलनसार, ईमानदार एवं विश्वसनीय होती है। इनमें सामूहिक कार्यों की ज़िम्मेदारी लेने की भावना और नेतृत्व के गुण भी विद्यमान होते हैं। प्रतिभाशाली बच्चे अपने विचारों एवं लिये गए निर्णयों में अडिग रहते हैं।
  - **शैक्षणिक उपलब्धि (Educational Achievement):** प्रतिभाशाली बच्चे सामान्य बच्चों की तुलना में अध्ययन में ज़्यादा रुचि रखते हैं। वे पाठ्यक्रम की समझ, विभिन्न विषयों के अध्ययन और परीक्षा में उच्चतर प्रदर्शन करते हैं। ऐसे बच्चे निबंध लेखन, वाद-विवाद जैसे प्रतियोगिता और पुरस्कार एवं छात्रवृत्तियों के संदर्भ में भी अव्वल रहते हैं।
  - **पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ (Co-curricular Activities):** प्रतिभाशाली बच्चे मानसिक परिपक्वता वाली गतिविधियों और खेलों में ज़्यादा रुचि रखते हैं। ऐसे बच्चे अपने आयु वर्ग से अधिक आयु के बच्चों के साथ खेलना पसंद करते हैं। प्रतिभाशाली

खंड III

अधिगम एवं शिक्षाशास्त्र

अधिगम एवं शिक्षाशास्त्र (महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स)

- बच्चे कैसे सोचते और सीखते हैं; बच्चे क्यों और कैसे स्कूल के प्रदर्शन में सफलता हासिल करने में 'असफल' होते हैं
- शिक्षण और सीखने की बुनियादी प्रक्रियाएँ; बच्चों की सीखने की रणनीतियाँ; सामाजिक गतिविधि के रूप में सीखना; सीखने का सामाजिक संदर्भ;
- एक समस्या समाधानकर्त्ता और 'वैज्ञानिक अन्वेषक' के रूप में बच्चे
- बच्चों में सीखने की वैकल्पिक अवधारणाएँ, बच्चों की 'त्रुटियों' को सीखने की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण कदमों के रूप में समझना
- अनुभूति और भावनाएँ
- प्रेरणा और सीखना (अधिगम)
- सीखने में योगदान देने वाले कारक- व्यक्तिगत और पर्यावरणीय

20 बच्चों का सोचना एवं सीखना (Thinking and Learning of Children)

सोचना या चिंतन (Thinking)

- मनोविज्ञान मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन से संबंधित विषय है जिसमें शामिल है कि लोग कैसे सोचते हैं, समझते हैं, याद करते हैं और सीखते हैं। इस प्रकार यह आंतरिक प्रक्रियाओं, जैसे- चिंतन, स्मृति, कल्पना, तर्क आदि से संबंधित है।
- महान दार्शनिक देकार्त ने कहा था, "मैं सोचता हूँ, इसलिये मैं हूँ", जिसका अर्थ है कि विचार मानव अस्तित्व का सार है। अत: चिंतन या सोचना सबसे जटिल मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का प्रतिनिधित्व करता है।
- दुनिया में मनुष्य द्वारा उत्पादित अधिकांश वस्तुएँ उसकी सोच और तर्क क्षमताओं के ही उत्पाद हैं। मनुष्य द्वारा विकसित इन वस्तुओं को समझने, उनकी प्रशंसा करने या उनका उपयोग करने के संदर्भ में भी किसी व्यक्ति को सोचने और तर्क करने की शक्तियों का प्रयोग करना पड़ता है। अत: सोचने और तर्क करने की शक्तियों को व्यक्ति के साथ-साथ समाज के कल्याण और सार्थक अस्तित्त्व के लिये आवश्यक उपकरण माना जा सकता है।
- सीखने में न केवल सोचने या चिंतन की प्रक्रिया शामिल है बल्कि अर्जित ज्ञान सामग्री को बनाए रखना या संगृहीत करना एवं संबंधित सामग्री को पुन: प्राप्त करना और याद रखना भी शामिल हैं।

चिंतन की अवधारणा (Concept of Thinking)

सोचना या चिंतन एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें अवधारणाओं के निर्माण की प्रक्रिया में सूचनाओं में फेरबदल किया जाता है। यह समस्या समाधान, तर्क और निर्णय लेने में भी संलग्न है। सोचना एक उच्च कोटि का संज्ञानात्मक कार्य है और सोचने की प्रक्रियाओं का विश्लेषण संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का हिस्सा है। सोच व्यवहार का एक पैटर्न है जिसमें हम किसी विशिष्ट या उद्देश्यपूर्ण समस्या समाधान के संदर्भ में चीज़ों और घटनाओं के आंतरिक प्रतिनिधित्व (प्रतीक, संकेत आदि) का उपयोग करते हैं।

चिंतन की परिभाषाएँ (Definitions of Thinking)

- विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा चिंतन के संदर्भ में विभिन्न परिभाषाएँ प्रस्तुत की गई हैं। इनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं-
  - रॉस के अनुसार, "चिंतन अपने संज्ञानात्मक पहलू में एक मानसिक गतिविधि है।"
  - कोलेसनिक के अनुसार, "चिंतन अवधारणाओं का पुनर्गठन है।"
  - वुडवर्थ के अनुसार, "किसी समस्या के समाधान का पता लगाने के संदर्भ में चिंतन मानसिक अन्वेषण है।"

चिंतन की विशेषताएँ (Characteristics of Thinking)

- यह लोगों के संज्ञानात्मक व्यवहार के सबसे महत्त्वपूर्ण पहलुओं में से एक है।
- यह धारणा और स्मृति दोनों पर निर्भर करता है।
- चिंतन एक मानसिक प्रक्रिया है जो किसी समस्या से शुरू होती है और उसके समाधान पर समाप्त होती है।
- इसमें परीक्षण एवं त्रुटि, विश्लेषण एवं संश्लेषण, दूरदर्शिता और पश्चदृष्टि शामिल हैं।
- यह सांकेतिक व्यवहार है।
- यह एक संज्ञानात्मक गतिविधि है।
- इसे हमेशा किसी-न-किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिये निर्देशित किया जाता है।
- यह दिवास्वप्न और कल्पना से भिन्न है।
- यह एक समस्या-समाधान व्यवहार है।
- संवेदी अन्वेषण की बजाय मानसिक अन्वेषण पर केंद्रित है।

चिंतन के सिद्धांत (Principles of Thinking)

चिंतन की क्षमता किसी व्यक्ति की वृद्धि और विकास से संबंधित है। किसी व्यक्ति में चिंतन के चरणबद्ध विकास का स्वरूप जानने के लिये कई सिद्धांत प्रस्तुत किये गए हैं जिनमें जीन पियाजे, ब्रूनर और सूचना प्रसंस्करण के सिद्धांत काफी महत्त्वपूर्ण हैं। इन सिद्धांतों की संक्षिप्त व्याख्या निम्नलिखित है-

पियाजे का सिद्धांत

पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास के क्रमिक चरणों के माध्यम से व्यक्तियों में चिंतन के विकास की व्याख्या की है। पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास के 4 चरण बताएँ हैं जो निम्नलिखित हैं-

- **संवेदी प्रेरक अवस्था (Sensory Motor Stage):** शिशु अपनी आरंभिक अवस्था में वातावरण से अंत:क्रिया के माध्यम से धीरे-धीरे यह जानने लगते हैं कि उनके कार्यों और बाहरी दुनिया के बीच एक संबंध है, वस्तुओं में हेरफेर कर प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है एवं वस्तुएँ तब भी मौजूद रहती हैं, जब वे दृश्य से छिपी हुई हों या ओझल हों।
- **पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था (Preoperational Stage):** इस चरण में बच्चों में वस्तुओं को पहचानने एवं विभेद करने और उन पर अपना दावा की समझ विकसित होने लगती है लेकिन उन्हें दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण का अनुभव करने में कठिनाई होती है।

3. **पर्यवेक्षणीय अधिगम के सिद्धांत (Principles of Observational Learning):** बंडूरा का सिद्धांत मानव व्यवहार और कार्यप्रणाली को प्रभावित करने वाली संज्ञानात्मक विचार प्रक्रियाओं के अलावा व्यवहार की सामाजिक उत्पत्ति पर बल देता है। परंपरागत संज्ञानात्मक सिद्धांत के विपरीत बंडूरा ने यह तर्क रखा कि पुनर्बलन के बिना भी अवलोकन या पर्यवेक्षण (Observation) माध्यम से अधिगम हो सकता है। इसके साथ ही सीखने के कुछ पारंपरिक सिद्धांत, जैसे पुनर्बलन और दंड के नियम अधिगम के अर्जन की तुलना में अवलोकन के संदर्भ में अधिक प्रासंगिक हैं।

- अपने विचारों को सिद्ध करने के लिये अल्बर्ट बंडूरा ने 'बोबो डॉल बिहेवियर: ए स्टडी ऑफ एग्रेसन' नामक एक प्रसिद्ध प्रयोग का निर्माण किया।

अधिगम के सिद्धांत के मुख्य बिंदु

मनोवैज्ञानिक	अधिगम का सिद्धांत	अधिगम सिद्धांत के मुख्य घटक	प्रयोग के लिये चुने गए जानवर
पॉवलॉव	क्लासिकल अनुबंधन सिद्धांत	अनुबंधन का सिद्धांत, पुनर्बलन का सिद्धांत	कुत्ता
थॉर्नडाइक	प्रयास और त्रुटि का सिद्धांत	तत्परता का सिद्धांत, प्रभाव का सिद्धांत, अभ्यास का नियम,	बिल्ली
हल	प्रणोद न्यूनीकरण सिद्धांत या प्रबलन का सिद्धांत	आवश्यकता में कमी या सीखने का पुनर्बलन सिद्धांत,	चूहा
स्किनर	क्रियाप्रसूत अनुबंधन या नैमित्तिक अनुबंधन का सिद्धांत	संरूपण (Shaping), विलोपन (Extinction), सहज पुन:प्राप्ति (Spontaneous Recovery) और पुनर्बलन (Reinforcement)	चूहा
कोहलर	सीखने का गेस्टाल्ट अंतर्दृष्टि सिद्धांत	प्रैग्नाज़ का सिद्धांत (Principles of Pragnanz), संपूर्णता का नियम, मनोभौतिकीय समरूपता का सिद्धांत	वनमानुष (चिंपैंजी), बंदर, मुर्गी तथा कुत्ता
पियाजे	सीखने का संज्ञानात्मक सिद्धांत	अनुकूलन (Adaptation), संतुलन (Equilibration), संरक्षण (Conservation), संज्ञानात्मक संरचना, मानसिक क्रिया (Mental Operation), स्कीम्स (Schemes), स्कीमा (Schema) और विकेंद्रण (Decentering)	–
वायगोत्स्की	सीखने का संज्ञानात्मक सिद्धांत	सामाजिक-संज्ञानात्मक सिद्धांत	–

अधिगम वक्र *(Learning Curve)*

- मनुष्य में अधिगम की प्रक्रिया जन्मोपरांत ही प्रारंभ हो जाती है जिसमें वह निरंतर अपने जीवन में नई बातें, नए कार्य एवं नए विषय सीखता रहता है। मनुष्य के अधिगम की गति सदैव एकसमान नहीं होती है अर्थात् वह कभी तेज़ गति से एवं कभी धीमी गति से सीखता है।
- मनुष्य के सीखने की गति को यदि सरल ग्राफ पर अंकित किया जाए तो एक वक्र रेखा का निर्माण होता है, इसी को अधिगम वक्र या सीखने का वक्र कहा जाता है। अधिगम वक्र किसी व्यक्ति के अधिगम में होने वाली उन्नति या अवनति को व्यक्त करता है।
- अध्ययन में सुविधा की दृष्टि से अधिगम वक्र को 5 चरणों में बाँटा जाता है जिनका विवरण निम्नलिखित है-
  - **धीमी प्रगति की अवधि:** सामान्यत: जब कोई व्यक्ति किसी नई विषयवस्तु को प्रारंभिक बिंदु से सीखना शुरू करना है, तो उसकी शुरुआती प्रगति धीमी होगी। उदाहरण के लिये, चलना सीखने के संदर्भ में शिशु की प्रारंभिक प्रगति काफी नगण्य होती है।
  - **तीव्र प्रगति की अवधि:** इस चरण में अधिगमकर्त्ता का निष्पादन (Output) तेज़ी से बढ़ता है। जैसे टाइपिंग में एक बार अधिगमकर्त्ता अपनी उंगलियों की गति में समन्वय विकसित कर लेता है तो वह तेज़ी से प्रगति दिखाता है।
  - **कोई स्पष्ट प्रगति नहीं होने की अवधि:** अधिगम वक्र में एक ऐसी अवधि भी आती है जहाँ कोई स्पष्ट प्रगति नहीं होती है। इसे अधिगम पठार (Learning Plateau) के नाम से भी जाना जाता है। उदाहरण के लिये टाइपिंग में, एक व्यक्ति कुछ समय के लिये लगातार प्रगति करने के बाद उस बिंदु पर पहुँच सकता है जहाँ शायद हफ्तों तक कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं होती है।
  - **अचानक वृद्धि की अवधि:** सामान्यत: एक पठार के अंत में अधिगम गति या उपलब्धि में तेज़ी आती है। पठार की अवधि में अधिगमकर्त्ता बेहतर तकनीक हासिल करता है, जो बाद में उसे तेज़ी से प्रगति करने में मदद करता है।
  - **समतलन या समतलीकरण:** सारी अधिगम प्रक्रिया या शिक्षा अंतत: इस हद तक मंद हो जाती है कि यह बिना किसी सुधार के दौर में पहुँच जाती है। कोई भी व्यक्ति किसी भी स्थिति में अनिश्चितकाल तक सुधार जारी नहीं रख सकता। सीखने की अवस्था अंतत: एक सीमा तक पहुँच जाती है जिसके आगे कोई सुधार संभव नहीं है। यह सीमा शारीरिक सीमा कहलाती है।

21 शिक्षण-अधिगम की मूल-प्रक्रियाएँ (Basic Processes of Teaching-Learning)

शिक्षण (Teaching)

- शिक्षण एक बड़ा ही लोकप्रिय शब्द है जिससे कमोबेश सभी लोग परिचित होते हैं। हालाँकि यह शब्द सामान्यत: विद्यालय की शिक्षा प्रक्रिया से जुड़ा होता है, लेकिन कई जगहों पर शिक्षण गतिविधियाँ संचालित होती रहती हैं।
- शिक्षण को एक बहुआयामी संकल्पना के रूप में वर्णित किया जाता है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को अधिकतम ज्ञान उपलब्ध करवाना होता है।
- बाल्यावस्था में बच्चे परिवार में माता-पिता से बचपन से जुड़ी अच्छी आदतों के अनुसरण के बारे में जानते हैं तो वहीं पड़ोस में बड़े-बुजुर्ग बच्चों को सामुदायिक जीवन से जुड़ी कई बातें सिखाते हैं। विद्यालय में शिक्षक विद्यार्थियों को न केवल विभिन्न विषय पढ़ाते हैं बल्कि अच्छा नागरिक बनने और एक उत्कृष्ट सामाजिक जीवन जीने के लिये आवश्यक कई बुनियादी चीज़ें भी सिखाते हैं।
- विभिन्न प्रकार की गतिविधियों द्वारा एक शिक्षक विद्यालय में या विद्यालय के बाहर बच्चों को शिक्षण प्रक्रिया में शामिल करता है। उदाहरण के लिये व्याख्यान देना, किसी चीज़ का प्रदर्शन करना, अवधारणाओं की व्याख्या करना, प्रयोग करना, कहानियाँ सुनाना, कविताएँ पढ़ना, अभिनय-नाटक का आयोजन करना, प्रदर्शनी, नुक्कड़-नाटक, फील्ड सर्वे आदि।

शिक्षण की अवधारणा (Concept of Teaching)

- शिक्षण की संपूर्ण प्रक्रिया एक त्रिस्तरीय पद्धति होती है जिसके तीन घटक (शिक्षक, विद्यार्थी एवं पाठ्यक्रम) होते हैं। शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक दूसरों को पढ़ाते (teach) हैं, प्रशिक्षित (Trained) करते हैं या उन्हें अनुदेश (Instruct) देते हैं। ये सभी उन प्रक्रियाओं को संदर्भित करते हैं जो पढ़ाए जा रहे लोगों की संज्ञानात्मक संरचना (किसी के मस्तिष्क में ज्ञान की संरचना) में बदलाव लाने के लिये निष्पादित होती हैं। हालाँकि पढ़ाना, प्रशिक्षण और अनुदेशन अपने अर्थ में काफी भिन्न हैं।
- प्रशिक्षण में किसी व्यक्ति को किसी विशेष कार्य को करने के लिये तैयार करने की प्रक्रिया शामिल होती है। यह सीखने की प्रक्रिया का वर्णन करता है जिसे पूरा करने में कई साल लगते हैं। प्रशिक्षण में अपेक्षाकृत एक व्यवस्थित माध्यम से ज्ञान और कौशल से युक्त कोई व्यक्ति ज्ञान और कौशल को अन्य व्यक्तियों में हस्तांतरित करता है जो इसे नहीं जानते हैं।
- अनुदेशन को अक्सर शिक्षण के पर्याय के रूप में उपयोग किया जाता है, लेकिन व्यापक अर्थ में इसका संबंध शिक्षा की बजाय कौशल के विकास से ज़्यादा होता है।
- प्रशिक्षण और अनुदेशन के विपरीत, शिक्षण ऐसी प्रक्रिया को संदर्भित करता है जो किसी व्यक्ति-विशेष के सर्वांगीण विकास हेतु उसको उसकी पूर्ण क्षमता तक पहुँचने में मदद करता है।
- शिक्षण प्रक्रिया में विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास शामिल होता है। शिक्षण विद्यार्थियों में परिवर्तन को बढ़ावा देने वाले प्रयासों की एक प्रक्रिया है। हालाँकि प्रशिक्षण, अनुदेशन और शिक्षण अर्थों में भिन्न होते हैं, लेकिन इन सभी के माध्यम से एक केंद्रीय प्रक्रिया के रूप में विद्यार्थियों में अधिगम संपन्न होता है।
- शिक्षण प्रक्रिया सार्थक तभी होगी जब शिक्षक इस आशय से शिक्षण गतिविधि में शामिल हो कि विद्यार्थी इसके परिणामस्वरूप कुछ सीखेंगे।
- शिक्षण की प्रक्रिया तब भी संपन्न होती है जब कुछ शैक्षणिक गतिविधियों द्वारा शिक्षक अपने विद्यार्थियों को सीखने के उद्देश्य से संलग्न करता है, जैसे किसी गद्यांश को पढ़ना, विद्यार्थियों के लिये रचना लिखना आदि।

शिक्षण की परिभाषाएँ (Definitions of Teaching)

शिक्षण की विभिन्न अवधारणाओं एवं प्रकृति के संदर्भ में शिक्षाशास्त्रियों द्वारा इसकी कई परिभाषाएँ प्रस्तुत की गई हैं जिनमें से कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं-

- मॉरिसन के अनुसार, "शिक्षण एक अधिक परिपक्व व्यक्तित्व और एक कम परिपक्व व्यक्ति के बीच घनिष्ठ संबंध है जिसे शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिये निर्मित किया गया है।"
- एन.एल. गेज के अनुसार, "शिक्षण एक प्रकार का अंतर-व्यक्तिगत प्रभाव है जिसका उद्देश्य किसी अन्य व्यक्ति की व्यवहार क्षमता को बदलना है।"
- क्लार्क के अनुसार, "शिक्षण से तात्पर्य उन गतिविधियों से है जो विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिये निर्मित और निष्पादित की जाती हैं।"

शिक्षण की प्रकृति (Nature of Teaching)

शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें क्रियाओं की ऐसी शृंखला शामिल होती है जिससे कुछ निश्चित परिणाम प्राप्त होते हैं। किसी भी अन्य अवधारणा की तरह शिक्षण में भी कुछ विशेषताएँ शामिल होती हैं। शिक्षण की कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

23 संज्ञान एवं संवेग (Cognition and Emotion)

संज्ञान (Cognition)

- संज्ञान शब्द को अंग्रेज़ी में 'कॉग्निशन' (Cognition) कहते हैं। 'कॉग्निशन' (Cognition) शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द कॉग्नोसेरे (Cognoscere) से हुई है, जिसका अर्थ होता है 'जानना' या 'जानने के लिये'। इस प्रकार, संज्ञान में ज्ञान के अधिग्रहण, भंडारण, पुनर्प्राप्ति और प्रसंस्करण से संबंधित गतिविधियों और प्रक्रियायों को शामिल किया जाता है।
- ज्ञानार्जन और समझ (बोध) से संबंधित मानसिक प्रक्रियाओं को संज्ञान के नाम से जाना जाता है। इन मानसिक प्रक्रियाओं में कुछ विशिष्ट विशेषताएँ जैसे चिंतन, कल्पना, स्मृति, निर्णयन एवं समस्या समाधान क्षमता, प्रत्यक्षीकरण योजना आदि शामिल होते हैं। सामान्य भाषा में, "अनुभवों, संवेदनाओं और विचारों के माध्यम से समझ और ज्ञान को अर्जित करने की प्रक्रिया को संज्ञान कहा जाता है।"
- भारतीय दर्शन में 'संज्ञान' अर्थात् 'संज्ञप्ति' को इंद्रियजन्य ज्ञान से संबंधित माना गया है जिसके अंतर्गत मनुष्य अपनी इंद्रियों के माध्यम से वाह्य वातवरण का ज्ञान प्राप्त करता है। संज्ञान किसी व्यक्ति के चेतन भाव या व्यक्ति की चेतनता को दर्शाता है।

संज्ञान की परिभाषा (Definition of Cognition)

मनोविज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत संज्ञान की कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं-

- मरियम-वेबस्टर शब्दकोश के अनुसार, "संज्ञान को जानने की क्रिया या प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें जागरूकता और निर्णय के साथ-साथ इन दोनों प्रक्रियाओं के परिणाम भी शामिल होते हैं।"
- अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन (एपीए) के अनुसार, "संज्ञान को जानने की प्रक्रियाओं के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसमें उपस्थित होना, याद रखना और तर्क करना शामिल हैं। इसे इन प्रक्रियाओं की सामग्री, जैसे- अवधारणाओं और स्मृति के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है।"
- उलरिच नीसर के अनुसार, "संज्ञान जानने की गतिविधि है; यह ज्ञान के अधिग्रहण, संगठन और उपयोग से संबंधित है।"
- ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार, "विचार अनुभव और इंद्रियों के माध्यम से ज्ञान अर्जित करने और अवबोध की मानसिक क्रियाएँ ही संज्ञान हैं।"

संज्ञानवाद (Cognitionism)

- आधुनिक मनोविज्ञान के केंद्रबिंदु की प्राथमिक विचारधारा के रूप में 'संज्ञानवाद' का अध्ययन प्रारंभ हुआ। समय के साथ-साथ संज्ञानवाद के अध्ययन का विकास कई स्वरूपों में हुआ। प्रारंभिक संज्ञानवाद का विकास प्रतिमा, स्मृति आदि प्रत्ययों पर केंद्रित था जिसके समर्थक बुंट, टिचनर आदि मनोवैज्ञानिक थे।
- पश्चातवर्ती संज्ञानवादियों ने इंद्रिय अनुभवों, जैसे- अवधान, सृजनात्मकता ताकिर्क निर्णय, परासंज्ञान आदि प्रत्ययों पर अपने अध्ययन को केंद्रित करते हुए यह जानने का प्रयास किया कि किसी अनुक्रिया या प्रतिक्रिया के पूर्ण ज्ञान की प्रक्रिया का संपादन कैसे होता है।

संज्ञानात्मक मनोविज्ञान (Cognitive Psychology)

- व्यक्ति के ज्ञानात्मक पक्षों से संबंधित अध्ययन को संज्ञानात्मक मनोविज्ञान कहा जाता है। संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का संबंध जीवन की प्रत्येक क्रिया से होता है जिसमें व्यक्ति अपने निर्धारित लक्ष्यों, आवश्यकताओं या उद्देश्यों के संदर्भ में चिंतन, स्मृति, अवधान, विवेक और बुद्धि के माध्यम से अपेक्षित परिणाम तक पहुँचता है।
- मनोविज्ञान की नवीन शाखा के रूप में संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के अंतर्गत ध्यान, भाषा का प्रयोग, स्मृति धारणा, समस्या-समाधान और चिंतन जैसी मानसिक गतिविधियों का अध्ययन किया जाता है।

संज्ञानात्मक विकास का अर्थ (Meaning of Cognitive Development)

- संज्ञानात्मक विकास से तात्पर्य है कि कोई व्यक्ति आनुवंशिक और सीखे हुए कारकों की अंत:क्रिया के माध्यम से अपनी दुनिया को कैसे समझता है, सोचता है और कैसे अनुभव करता है। संज्ञानात्मक विकास के क्षेत्रों में सूचना प्रसंस्करण, बुद्धि, तर्क, भाषा विकास और स्मृति शामिल हैं।
- संज्ञानात्मक विकास के क्रम में बच्चों में शैशव से ही बुद्धि, चेतना, विचार और समस्या समाधान से संबंधित मानसिक क्षमताओं का विकास होने लगता है। यह एक विकासात्मक प्रक्रिया है जिसमें बच्चा अपनी बढ़ती हुई आयु के साथ-साथ ज्ञान अर्जन के माध्यम से चिंतन एवं अमूर्त योग्यताओं में अपनी क्षमता सुधार करते हुए बुद्धिमान बनता है।
- ध्यातव्य है कि मानसिक विकास के संदर्भ में 22-24 वर्ष की आयु में व्यक्ति परिपक्वावस्था में पहुँचता है किंतु उसके मानसिक विकास का लगभग 80% भाग बाल्यकाल के आरंभिक 4 वर्षों में ही हो जाता है।
- संज्ञानात्मक विकास किसी व्यक्ति के समायोजन में काफी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि यह मानसिक क्षमताओं और योग्यताओं का विकास करते हुए व्यक्ति को उसके जीवन या संबंधित वातावरण

22 बच्चा : एक समस्या-समाधानकर्त्ता तथा वैज्ञानिक अन्वेषक (Child : A Problem Solver and A Scientific Investigator)

समस्या-समाधान (Problem Solving)

- इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति जन्म से ही किसी-न-किसी समस्या से घिरा रहता है। प्रत्येक व्यक्ति की कुछ आवश्यकताएँ और उद्देश्य होते हैं जिन्हें संतुष्ट या पूरा करना आवश्यक होता है। संतुष्टि प्राप्ति के संदर्भ में व्यक्ति निश्चित लक्ष्य या उद्देश्य को निर्धारित करता है।
- जब व्यक्ति अपने लक्ष्यों या आवश्यकताओं को प्राप्त करने का प्रयास करता है तो उसे बाधाओं और अवरोधों के रूप में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं को दूर करने के लिये व्यक्ति को गंभीरतापूर्वक एवं विचार-विमर्श प्रयत्न करना पड़ता है।
- किसी समस्या के मूल्यांकन में शामिल चिंतन प्रक्रिया और किसी के निर्धारित लक्ष्यों तक पहुँचने की रणनीति को सामूहिक रूप से समस्या समाधान कहा जाता है। व्यक्तिगत उन्नति और समाज की प्रगति के लिये समस्या समाधान एक आवश्यक प्रक्रिया है।

समस्या समाधान की परिभाषा एवं प्रकृति (Definition and Nature of Problem Solving)

- समस्या समाधान के अर्थ और प्रकृति को निम्नलिखित परिभाषाओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है-
  - वुडवर्थ और मार्क्विस के अनुसार, "समस्या समाधान व्यवहार किसी नवीन या कठिन परिस्थितियों में संपादित होता है जिसका समाधान समान परिस्थितियों में पिछले अनुभव से प्राप्त विश्वसनीय एवं प्रचलित अवधारणाओं और सिद्धांतों को लागू करके नहीं किया जा सकता है।"
  - स्किनर के अनुसार, "समस्या समाधान उन कठिनाइयों पर नियंत्रण पाने की एक प्रक्रिया है जो किसी लक्ष्य की प्राप्ति में बाधक प्रतीत होती हैं। यह व्यवधानों के बावजूद समायोजन करने की एक प्रक्रिया है।"
  - पोलिया के अनुसार, "समस्या एक व्यक्ति द्वारा अनुभव की जाने वाली ऐसी परिस्थिति होती है जो उस स्थिति से भिन्न होती है जिसमें कोई व्यक्ति आदर्श रूप से रहना चाहता है।"
  - कार्ल डनकर के अनुसार, "समस्या तब उत्पन्न होती है जब किसी के पास एक लक्ष्य होता है लेकिन उसे यह नहीं पता होता कि इस लक्ष्य को कैसे प्राप्त किया जाए।"
- उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से समस्या समाधान व्यवहार के अर्थ और प्रकृति के बारे में निम्नलिखित विशेषताएँ प्रकट होती हैं:
  - किसी व्यक्ति की आवश्यकताओं की संतुष्टि और निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति में, समस्या समाधान व्यवहार तभी उत्पन्न होता है जब लक्ष्य व्यक्ति के लिये उद्देश्यपूर्ण और आवश्यक हो। इस लक्ष्य की प्राप्ति में गंभीर कठिनाइयाँ और बाधाएँ विद्यमान होती हैं जिन्हें साधारण कृत्यों या यांत्रिक परीक्षण और त्रुटि विधियों से दूर नहीं किया जा सकता है।
  - कठिनाइयों और बाधाओं को दूर करने के लिये व्यक्ति को व्यवस्थित एवं गंभीरतापूर्ण मानसिक क्रियाकलाप के रूप में अपनी सोच और तर्क शक्ति का उपयोग करना होगा।
  - समस्या समाधान में समस्या-समाधानकर्त्ता की तरफ से संतुष्टि प्राप्ति के लिये जानबूझकर, जागरूकतापूर्वक और गंभीर प्रयास युक्त व्यवहार किया जाता है।
  - समस्या समाधान व्यवहार, अवरोधों को हटाने या समायोजन करने में मदद करते हुए अंततः किसी व्यक्ति को उसके लक्ष्य तक पहुँचने और उसके उद्देश्यों को पूरा करने में मदद करता है।
  - व्यक्ति का समस्या समाधान व्यवहार उसके व्यक्तित्व के विकास और अभिवृद्धि में मदद करते हुए उसका जीवन उचित समायोजन से खुशहाल बना देता है। यह समाज की प्रगति और विकास में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

समस्या समाधान के दृष्टिकोण (Approaches to Problem Solving)

- परंपरागत रूप से मनोवैज्ञानिकों ने सीखने के दो प्रमुख सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में समस्या समाधान दृष्टिकोण का उल्लेख किया है: (i) संज्ञानात्मक क्षेत्र सिद्धांत (Cognitive field theory) और (ii) उद्दीपन प्रतिक्रिया सिद्धांत (Stimulus response theory)।
- संज्ञानात्मक क्षेत्र सिद्धांत में समग्र स्थिति की धारणा और इसके घटकों के बीच संबंधों एवं संज्ञानात्मक क्षेत्र के पुनर्गठन के महत्त्व पर बल दिया जाता है। कोहलर ने जानवरों में समस्या समाधान की प्रक्रिया का अध्ययन करने के लिये सुल्तान चिम्पांजी पर कई प्रयोग किये।
- समस्या समाधान पर अपने अध्ययन के निष्कर्षों में उन्होंने यह प्रस्तावित किया कि व्यक्ति द्वारा कुछ प्रारंभिक प्रयासों के बाद किसी समस्या का समाधान अचानक ही प्रकट हो जाता है।
- दूसरे दृष्टिकोण का विकास उद्दीपन-अनुक्रिया सिद्धांतकारों द्वारा किया गया है जो परीक्षण और त्रुटि के महत्त्व पर बल देते हैं। उनका मानना है कि सही अनुक्रियाओं को एक साथ बनाए रखने की क्रमिक प्रक्रिया के माध्यम से त्रुटि का उन्मूलन करते हुए किसी समस्या का समाधान किया जाता है।

24 अभिप्रेरणा एवं अधिगम (Motivation and Learning)

अभिप्रेरणा (Motivation)

- हमारी सभी गतिविधियों के पीछे प्रेरणा एक गतिशील शक्ति के रूप में कार्य करती है एवं इसे हमारे सभी व्यवहारों के लिये एक प्रमुख कारक के रूप में इंगित किया जाता है।
- अभिप्रेरणा शब्द अंग्रेज़ी के 'मोटीवेशन' (Motivation) का समानार्थी है जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के मुवेयर (Movere) धातु से हुई है। मुवेयर शब्द का अर्थ मूव (Move) या इनसाइट टू एक्शन (Insight to Action) होता है। इस प्रकार शाब्दिक रूप से अभिप्रेरणा का अर्थ होता है- किसी जीव को गति में लाने की प्रक्रिया।
- मनोवैज्ञानिकों के लिये अभिप्रेरणा की अवधारणा अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि अभिप्रेरणा को एक ऐसी विषयवस्तु माना जाता है जो किसी व्यक्ति को किसी विशिष्ट लक्ष्य या उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये किसी विशेष समय पर किसी विशेष तरीके से कार्य करने या व्यवहार करने के लिये प्रेरित, विवश और सक्रिय करती है।
- अभिप्रेरणा न केवल व्यक्ति को किसी विशेष प्रकार से व्यवहार करने के लिये प्रेरित करती है, बल्कि उस विशेष व्यवहार का भी पुनर्बलन करती है।

अभिप्रेरणा की परिभाषा (Definition of Motivation)

बच्चों के अधिगम एवं शिक्षण के संदर्भ में अभिप्रेरणा का काफी महत्त्व है। कई प्रख्यात मनोवैज्ञानिकों द्वारा अभिप्रेरणा को विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया गया है। इनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं-

- जे.पी.गिलफोर्ड के अनुसार, "अभिप्रेरणा एक विशेष आंतरिक कारक या दशा होती है जिसमें किसी क्रिया को प्रारंभ करने और उसे बनाए रखने की प्रवृत्ति होती है।"
- गुड के अनुसार, "किसी कार्य को प्रारंभ करने, उसे जारी रखने और उसे नियमित बनाने की प्रक्रिया को अभिप्रेरणा कहते हैं।"
- मैक्डूगल के अनुसार, "अभिप्रेरणा किसी जीव की आंतरिक एवं मनोदैहिक दशाएँ हैं जो उसे कुछ निश्चित तरीकों से कार्य करने के लिये बाध्य करती हैं।"

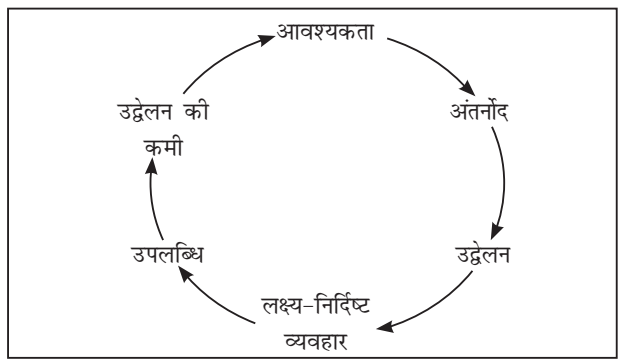
अभिप्रेरणा के मूल संप्रत्यय (Basic Concepts of Motivation)

अभिप्रेरणा के तीन मूल संप्रत्यय होते हैं जिसका विवरण निम्नलिखित है-

- **आवश्यकता (Need):** प्रत्येक प्राणी को जीवित रहने के लिये कुछ मौलिक आवश्यकताएँ होती हैं। उदाहरण के लिये, भोजन, पानी, हवा, कामवृत्ति आदि। मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होने या कमी होने पर प्राणी में तनाव उत्पन्न होता है तो वहीं आवश्यकताओं की पूर्ति होने पर संतुष्टि की प्राप्ति होती है।
- **चालक (Drive):** आवश्यकताओं के उत्पन्न होने से प्राणी में चालक की उत्पत्ति होती है। उदाहरण के लिये, पानी एवं भोजन की आवश्यकता होने पर व्यक्ति में क्रमशः 'पानी चालक' एवं 'भोजन चालक' की उत्पत्ति होती है। डैशिल के अनुसार, ''चालक शक्ति का वह मौलिक स्रोत है जो व्यक्ति को क्रियाशील कर देता है।"
- **उद्दीपन या प्रोत्साहन (Incentives):** किसी वस्तु की आवश्यकता के कारण उत्पन्न हुए प्राणी के चालकों को संतुष्ट करने वाली वस्तुएँ उद्दीपन या प्रोत्साहन कहलाती हैं। उदाहरण के लिये, 'भूख चालक' का उद्दीपन भोजन एवं 'पानी चालक' का उद्दीपन पानी है।
- प्रोत्साहन के दो प्रकार होते हैं- धनात्मक प्रोत्साहन और ऋणात्मक प्रोत्साहन। धनात्मक प्रोत्साहन ऐसे प्रोत्साहन होते हैं जिन्हें व्यक्ति संतुष्टि की प्राप्ति के लिये स्वेच्छा से प्राप्त करने के लिये प्रयासरत रहता है, जैसे- भोजन, पानी, उपलब्धि, शक्ति आदि। ऋणात्मक प्रोत्साहन पीड़ादायक प्रकृति के होते हैं एवं व्यक्ति इनसे बचना चाहता है, जैसे- दंड, असफलता, क्षति आदि।

अभिप्रेरणात्मक चक्र (Motivation Cycle)

- अभिप्रेरणा की विशिष्टता की व्याख्या के लिये मनोवैज्ञानिकों के द्वारा आवश्यकता को प्रमुख आधार बनाया जाता है। यहाँ आवश्यकता से आशय किसी वस्तु के अभाव या न्यूनता से संबंधित है।
- आवश्यकता ही वह कारक है जो प्राणी में तनाव या उद्वेलन को जाग्रत करते हुए अंतर्नोद को जन्म देती है। अंतर्नोद ही वह कारक है जो प्राणी को निष्क्रिय अवस्था से सक्रिय अवस्था में लाता है।



अभिप्रेरणात्मक चक्र

- **प्रोत्साहन अभिप्रेरणा:** इस प्रेरणा में पुरस्कार शामिल हैं। जब लोगों को विश्वास होता है कि उन्हें कुछ करने के लिये पुरस्कार मिलेगा, तब वे एक निश्चित लक्ष्य तक पहुँचने के लिये हर संभव प्रयास करने के लिये अभिप्रेरित होते हैं।
- **भय की अभिप्रेरणा:** इसमें किसी निर्धारित व्यवहार के सेट का पालन नहीं करने पर दंड का सहारा लिया जाता है। भय की अभिप्रेरणा व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध कार्य करने के लिये विवश करती है।
- **आक्रामक अभिप्रेरणा:** दूसरों को नुकसान पहुँचाने की इच्छा या आक्रामक अभिप्रेरणा, मानव व्यवहार में एक बहुत ही सामान्य भूमिका निभाती है। अभिप्रेरणा की कल्पना करते हुए इसे प्रत्यक्ष तौर पर व्यक्त नहीं करते हैं। ये अक्सर दूसरों के खिलाफ आक्रामकता के विभिन्न रूपों में संलग्न होती हैं एवं उन्हें किसी तरह से नुकसान पहुँचाने का प्रयास करती हैं।

अभिप्रेरणा के कार्य (Functions of Motivation)

अधिगम प्रक्रिया में अभिप्रेरणा की काफी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। मनोवैज्ञानिक गेट्स ने अधिगम प्रक्रिया में अभिप्रेरणा के तीन कार्यों की चर्चा की है। गेट्स द्वारा प्रतिपादित तीन कार्यों समेत अभिप्रेरणा के मुख्य कार्यों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है-

1. **व्यवहार को शक्ति प्रदान करना:** शारीरिक आवश्यकताओं जैसे भूख, प्यास आदि एवं वाह्य उद्दीपन, जैसे- प्रशंसा, निंदा, दंड, पुरस्कार आदि को प्राप्त करने के संदर्भ में अभिप्रेरणा व्यक्ति को क्रियाशील बनाती है। ये व्यक्ति में कार्य करने की शक्ति को जाग्रत करती हैं।
2. **प्रवृत्तियों का निर्धारण:** किसी भी व्यक्ति की प्रवृत्तियों के निर्धारण में रुचि और अभिप्रेरणा की प्रमुख भूमिका होती है। विभिन्न परिस्थितियों या किसी उद्दीपन के संदर्भ में किसी व्यक्ति की प्रतिक्रिया का निर्धारण अभिप्रेरणा और रुचि के द्वारा किया जाता है।
3. **व्यवहार को निर्देशित करना:** अभिप्रेरणा का एक महत्त्वपूर्ण कार्य प्राणी के व्यवहार को निर्देशित करना होता है। अपनी आवश्यकताओं एवं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये व्यक्ति का केवल क्रियाशील होना पर्याप्त नहीं है बल्कि अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये उसमें एक निश्चित व्यवहार का जाग्रत होना एवं उस व्यवहार को पर्याप्त शक्ति मिलना आवश्यक होता है।

- अभिप्रेरणा के प्रमुख कार्यों में विद्यार्थियों को किसी विषयवस्तु में रुचि उत्पन्न करना भी शामिल होता है जिससे अधिगम की प्रक्रिया सुचारु रूप से संपन्न की जा सकती है। इसके साथ ही विद्यार्थियों को अधिगम प्रक्रिया में निरंतर बनाए रखने के लिये भी अभिप्रेरणा काफी महत्त्वपूर्ण होती है।
- अभिप्रेरणा के माध्यम से कुछ विशेष क्षेत्रों एवं विषयवस्तुओं में विद्यार्थियों का ध्यान केंद्रित किया जा सकता है।
- विद्यार्थियों में कुछ विशेष गुणों, जैसे- मानसिक विकास, सामाजिक मूल्य, चारित्रिक मूल्य आदि के विकास में अभिप्रेरणा प्रमुख भूमिका निभा सकती है।

अभिप्रेरणा के महत्त्वपूर्ण सिद्धांत (Important Theories of Motivation)

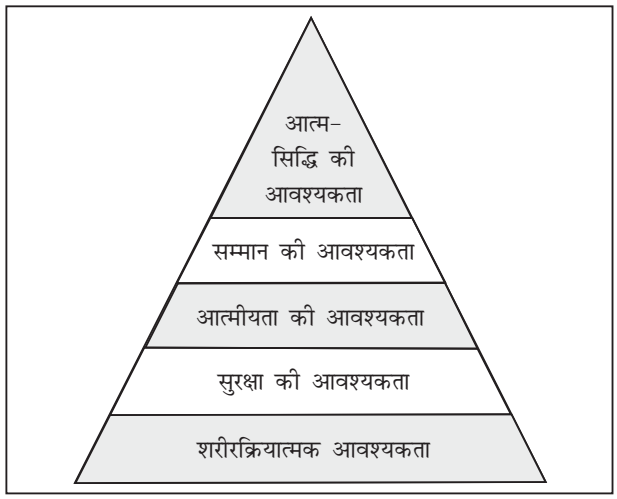
विभिन्न मनोवैज्ञानिकों के द्वारा प्रस्तुत अभिप्रेरणा के कुछ लोकप्रिय सिद्धांत निम्नलिखित हैं-

विषयवस्तु सिद्धांत *(Content Theories)*

इसे आवश्यकता सिद्धांत के रूप में भी जाना जाता है जिसमें इस विचार पर बल देते हैं कि अभिप्रेरणा व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर निर्भर करती है। कुछ महत्त्वपूर्ण विषयवस्तु सिद्धांतों का विवरण निम्नलिखित है-

आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत

- अभिप्रेरणा का सबसे लोकप्रिय सिद्धांत अब्राहम एच. मैस्लो के द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस सिद्धांत को "मैस्लो का आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत" या ''आत्म-सिद्धि का सिद्धांत'' के नाम से जाना जाता है।
- मैस्लो ने व्यक्ति के व्यवहार के वर्णन के लिये आवश्यकताओं को एक पदानुक्रम में व्यवस्थित किया। इन आवश्यकताओं को एक पिरामिड के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। इस पदानुक्रम में नीचे से ऊपर बढ़ती हुई आवश्यकताओं को निम्नलिखित क्रम में रखा गया है-
  - **शारीरिक आवश्यकता (Physiological needs):** उदाहरण के लिये भूख, प्यास एवं काम-भावना आदि;
  - **सुरक्षा की आवश्यकता (Safety needs):** उदाहरण के लिये सुरक्षा, स्थायित्व एवं व्यवस्था आदि;
  - **आत्मीयता की आवश्यकता (Social or Belongingness and love needs):** उदाहरण के लिये स्नेह, सौहार्दपूर्ण संबंध, पहचान आदि की आवश्यकता;
  - **सम्मान की आवश्यकता (Esteem needs):** उदाहरण के लिये प्रतिष्ठा, सफलता, आत्म-सम्मान आदि पाने की आवश्यकता; और
  - **आत्मसिद्धि की आवश्यकता (The Need for self-actualization):** किसी विशेष क्षेत्र में अपनी क्षमता का पूर्ण विकास (शिक्षा, संगीत, नेतृत्व, एथलेटिक्स, डिज़ाइन, बागवानी आदि)



मैस्लो का आवश्यकता पदानुक्रम

25 अधिगम की वैकल्पिक अवधारणाएँ और बच्चों की त्रुटियाँ (Alternative Conceptions of Learning and Children's Errors)

अधिगम की वैकल्पिक अवधारणाएँ (Alternative Conceptions of Learning)

- मनुष्य का जिज्ञासु स्वभाव सदैव कुछ-न-कुछ नया सीखने को प्रेरित करता है जिससे सीखने या अधिगम का कार्य जीवनपर्यंत चलता रहता है। विद्यालय के संकुचित दृष्टिकोण के कारण अधिगम प्रक्रिया में समाज, प्रकृति और लोक परंपराओं में व्याप्त ज्ञान और कौशलों से दूरी बन गई है। लोकज्ञान से विद्यालयी ज्ञान के विमुख होने के कारण विद्यालयी कार्यव्यवहार अधिक यंत्रवत हो गया है और विद्यालय मात्र सैद्धांतिक विषयों के ज्ञान के केंद्रबिंदु बन गए हैं।
- लेव वायगोत्सकी, जीन पियाजे, जे.एस. ब्रूनर, एलवर्ट बंडूरा, जॉन डीवी आदि विद्वानों ने वैकल्पिक अधिगम के संदर्भ में सक्रिय अधिगम, परिस्थिति-जन्य अधिगम, सहयोगपूर्ण अधिगम तथा विद्यालय में एवं विद्यालय के बाहर अधिगम जैसी अवधारणा को प्रस्तुत किया है।

सक्रिय अधिगम

- अधिगम के संरचनात्मक सिद्धांत के अनुसार ज्ञान की संरचना में बच्चे सक्रिय भूमिका निभाते हैं। अत: इस विधि में उन्हें अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं से करने पर अधिक महत्त्व दिया जाता है।
- स्वयं अध्ययन करना, परिचर्चा करना, समस्या के समाधान को ढूँढ़ना, समूह के सहयोग से समझ, कौशल और संवेदना विकसित करना, उच्च स्तर के चिंतन कार्यों तथा विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन, रचनात्मकता आदि में संलग्न रहना सक्रिय अधिगम की विशेषताएँ हैं।
- सक्रिय अधिगम को प्रोत्साहित करने हेतु कक्षा में दृश्य आधारित अनुदेशन, श्रुति लेखन, समस्या समाधान, निर्णयकारी प्रतिमान, कंप्यूटर आधारित अनुदेशन, सहकारी अधिगम, नाटक, भूमिका अभिनय, अनुकरण और खेल आदि युक्तियों का प्रयोग किया जाता है।

अवलोकनात्मक अधिगम

- बंडूरा के सामाजिक संज्ञानात्मक अधिगम सिद्धांत के आधार पर 'अवलोकनात्मक अधिगम' या 'अनुकरण द्वारा सीखने' की अवधारणा प्रस्तुत की गई। बंडूरा के अनुसार यदि एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा किसी परिस्थिति विशेष में किये जा रहे कार्य को देखता है तो वह समान परिस्थिति के उत्पन्न हो जाने पर उस व्यक्ति का अनुकरण करने का प्रयास करता है।
- किसी नए व्यवहार को सीखने में अवलोकनात्मक अधिगम सहायक होता है। इसके साथ ही गणित, विज्ञान, भूगोल आदि विषयों की शिक्षा प्रदान करने में अवलोकनात्मक अधिगम काफी प्रभावी है।

परिस्थिति-जन्य अधिगम

- जीन लेव तथा एटिन्न वेंगर के द्वारा प्रतिपादित परिस्थिति-जन्य अधिगम (Situated Learning) प्रविधि में अधिगम का संपादन उन्हीं परिस्थितियों में होता है जिनमें उस अधिगम का प्रयोग होना है। परिस्थिति-जन्य अधिगम प्रविधि के अंतर्गत वास्तविक या आभासी परिस्थिति का निर्माण कर विद्यार्थी को अधिगम का अवसर प्रदान किया जाता है।
- विभिन्न कलात्मक उपागमों (युद्ध कला, पाककला, मूर्तिकला, भवन निर्माण आदि), सेवाओं (चिकित्सा, शिक्षण, प्रशासन, आदि) और पारंपरिक कला (नृत्य, अभिनय, संगीत, आदि) में परिस्थिति-जन्य अधिगम काफी प्रभावी होता है।

सहयोगपूर्ण अधिगम

- सहयोगपूर्ण अधिगम की अवधारणा लेव वायगोत्स्की के "सामीप्य विकास का क्षेत्र" (Zone of Proximal Development–ZPD) के सिद्धांत पर आधारित है। सामान्य अर्थ में ज्ञान, समझ, समस्या समाधान, या किसी नई चीज़ को बनाने के संदर्भ में व्यक्तियों के समूह द्वारा किये गए सम्मिलित प्रयास को सहयोगपूर्ण अधिगम कहा जाता है।
- कक्षाओं और कार्यस्थलों में विभिन्न प्रकार के सहयोगपूर्ण अधिगम के लिये युग्म साझा चिंतन (Think-pair-share), कैच अप (Catch up), फिशबाउल वाद-विवाद (Fishbowl Debate), व्यष्टि अध्ययन, समूह आधारित अधिगम आदि रणनीतियाँ प्रयोग में लाई जाती हैं।

विद्यालय के बाहर अधिगम

- वर्तमान में विद्यालय के सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों में भी जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के लिये आवश्यक कुशलता, अनुभव और दक्षता का अभाव देखा जाता है। अत: विद्यालय के बाहर अधिगम को पर्याप्त महत्त्व दिया जा रहा है।
- विद्यालय के बाहर अधिगम में जीवनपर्यंत अधिगम (जीवनपर्यंत अनौपचारिक विधि से होने वाला अधिगम), जीवन व्यापक अधिगम (व्यक्ति के जीवन के विभिन्न चरणों, स्थान और परिस्थितियों के साथ समायोजन से होने वाला अधिगम) और जीवन-गहन अधिगम (आस्था, विश्वास और व्यवहार के माध्यम से नीतिपरक अधिगम) शामिल हैं।

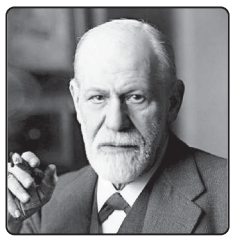
अधिगम में बच्चों की त्रुटियाँ (Children's Errors in Learning)

जब बच्चे सीखते हैं तो कमोबेश सभी बच्चे त्रुटियाँ करते हैं। बच्चों के द्वारा की जा रही त्रुटियों को समझना शिक्षकों के लिये काफी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह त्रुटियों के कारणों को जानने और त्रुटियों को सुधारने में मदद प्रदान करते हैं।

26 प्रमुख व्यक्तित्व (Important Personalities)

सिगमंड फ्रॉयड (Sigmund Freud)

जीवन परिचय



- फ्रॉयड का जन्म 6 मई, 1856 को ऑस्ट्रिया के फ्रेइबर्ग में एक यहूदी परिवार में हुआ था। उनके पिता जैकब ऊन के व्यापारी तथा माता एमेली सफल गृहणी थीं।
- बाद में उनका परिवार वियना में आ गया जहाँ उनकी आरंभिक शिक्षा हुई और उन्होंने वियना यूनिवर्सिटी में चिकित्सा की पढ़ाई की।
- वर्ष 1885 में वे पेरिस गए और अगले वर्ष वियना में लौटकर मस्तिष्क और तंत्रिका विकार के विशेषज्ञ के तौर पर कार्य शुरू कर दिया। वर्ष 1886 में उन्होंने मार्था बर्नेज से विवाह किया।
- फ्रॉयड का आरंभ से ही तंत्रिका विज्ञान की ओर झुकाव था। वर्ष 1873 से 1881 के बीच उनका संपर्क उस समय के प्रसिद्ध तंत्रिका विज्ञानी अर्नस्ट ब्रुकी (Ernst Brucke) से हुआ।
- वर्ष 1900 फ्रॉयड के जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण वर्ष था। इसी वर्ष उनकी बहुचर्चित पुस्तक 'इंटरप्रटेशन ऑफ ड्रीम्स' का प्रकाशन हुआ, जो उनके और उनके रोगियों के स्वप्नों के विश्लेषण पर आधारित थी।
- इसमें उन्होंने बताया कि सपने हमारी अतृप्त इच्छाओं का प्रतिबिंब होते हैं। इस पुस्तक ने फ्रॉयड को विश्व प्रसिद्ध बना दिया। इनकी मृत्यु 23 सितंबर, 1939 को लंदन में हुई।

कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत

- फ्रॉयड एक महान मनोवैज्ञानिक एवं चिकित्सक थे। उन्होंने मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत का प्रतिपादन किया।
- फ्रॉयड का मानना था कि लोगों को उनके अचेतन विचारों और प्रेरणाओं को सचेत करके ठीक किया जा सकता है, इस प्रकार 'अंतर्दृष्टि' प्राप्त होती है। मनोविश्लेषण चिकित्सा का उद्देश्य दमित भावनाओं और अनुभवों को मुक्त करना है, अर्थात अचेतन को सचेत करना है।
- मनोविश्लेषण आमतौर पर अवसाद और चिंता जैसे विकारों के इलाज के लिये प्रयोग किया जाता है।
- फ्रॉयड के मनोविश्लेषण सिद्धांत की व्याख्या तीन आधारों- व्यक्तित्व की संरचना (Structure of Personality), व्यक्तित्व की गतिकी (Dynamics of Personality) तथा व्यक्तित्व का विकास (Development of Personality) पर की गई है।

प्रमुख पुस्तकें

फ्रॉयड ने कई पुस्तकें लिखीं, जिनमें से "इंटरप्रटेशन ऑफ ड्रीम्स", "ग्रुप साइकोलॉजी एंड द एनेलेसिस ऑफ दि इगो", "टोटेम एंड टैबू", "सिविलाइजेशन एंड इट्स डिसकॉनटेंट्स", "द इंट्रोडक्शन ऑफ साइकोलॉजी", "स्क्रीन मेमोरीज", "द अनकॉन्शस" आदि प्रमुख रूप से शामिल हैं।

जीन पियाजे (Jean Piaget)

जीवन परिचय



- जीन पियाजे का जन्म 9 अगस्त, 1896 को स्विट्ज़रलैंड के फ्रैंकोफोन में हुआ था। वह जीव विज्ञान के विद्यार्थी थे साथ ही मनोविज्ञान एवं दर्शन में गहरी रुचि रखते थे।
- अल्फ्रेड बिने प्रयोगशाला में बुद्धि-लब्धि परीक्षण संबंधी शोध में सहायता करते समय, संज्ञान के अध्ययन में पियाजे की रुचि जाग्रत हुई।
- अपने कार्य के दौरान, वह बहुत से बच्चों से मिले एवं उनके चिंतन से संबंधित कुछ रोचक बातें प्रस्तुत कीं। पियाजे ने अपने ही तीन वर्ष के बच्चे पर प्रयोग किया था।
- पियाजे ने बच्चों की शिक्षा पर बहुत महत्त्व दिया। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा ब्यूरो के निदेशक के रूप में, उन्होंने 1934 में घोषणा की कि "केवल शिक्षा ही हमारे समाज को संभावित पतन से बचाने में सक्षम है।" 16 सितंबर, 1980 में उनका निधन जेनेवा में हो गया।

कार्यक्षेत्र एवं सिद्धांत

- सर्वप्रथम संज्ञानात्मक पक्ष का क्रमबद्ध व वैज्ञानिक अध्ययन जीन पियाजे के द्वारा ही किया गया था।
- पियाजे के अनुसार, संज्ञान प्राणी का वह व्यापक और स्थायी ज्ञान है, जिसे वह वातावरण/उद्दीपक जगत/बाह्य जगत के माध्यम से ग्रहण करता है।
- जीन पियाजे ने संज्ञानात्मक पक्ष पर बल देते हुए संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत का प्रतिपादन किया था। उनको विकासात्मक मनोविज्ञान का जनक कहा जाता है।
- विकासात्मक मनोविज्ञान के अंतर्गत शुरू से अंत तक अर्थात् गर्भावस्था से वृद्धावस्था तक का अध्ययन किया जाता है।



घर बैठे IAS/PCS की संपूर्ण तैयारी करने के लिये आपका स्वागत है

Drishti Learning App

पर

GET IT ON Google Play

अपने एंड्रॉयड फोन पर आज ही इंस्टॉल करें

ऐप की विशेषताएँ

- टीम दृष्टि द्वारा दी जाने वाली सभी सुविधाएँ एक ही मंच पर।
- ऑनलाइन, पेनड्राइव मोड में कक्षाएँ उपलब्ध।
- प्रिलिम्स और मेन्स की टेस्ट सीरीज़ भी ऐप के माध्यम से उपलब्ध।
- सभी पुस्तकें, मैगज़ीन्स, डिस्टेंस लर्निंग प्रोग्राम के नोट्स देखने व मंगवाने की सुविधा।

ऑनलाइन कोर्स की विशेषताएँ

- घर बैठे देश के सर्वोत्कृष्ट अध्यापकों से पढ़ने की सुविधा।
- अब दिल्ली या किसी बड़े शहर जाकर पढ़ने की मजबूरी नहीं।
- IAS और PCS के कोर्स उपलब्ध।
- ऑनलाइन कोर्स करने के बाद, क्लासरूम कोर्स में प्रवेश लेने पर शुल्क में विशेष छूट।
- हर क्लास असीमित बार देखने की सुविधा।
- उत्तर लिखकर चेक कराने तथा संदेह-समाधान की व्यवस्था भी उपलब्ध।

दृष्टि आई.ए.एस. (दिल्ली शाखा) का पता
641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
8448485519, 87501 87501, 011-47532596

दृष्टि आई.ए.एस. (प्रयागराज शाखा) का पता
ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज
8448485518, 8750187501, 8929439702

दृष्टि आई.ए.एस. (जयपुर शाखा) का पता
प्लॉट नंबर-45 व 45-A, हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड़, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर राजस्थान-302018
9024790143, 9929224312, 9829908709

टीचिंग एग्ज़ाम्स/NCERT/ एंट्रेंस एग्ज़ाम्स की प्रमुख पुस्तकें



641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Contact No. : 011-47532596, 87501 87501
E-mail : help@groupdrishti.in
Website : www.drishtiias.com

ISBN 978-93-94987-65-4
मूल्य : ₹ 390
प्रथम संस्करण